स्वर्ण जयंती
सी डैक
CDAC
1988 SILVER JUBILEE 2013

अभिव्यक्ति

सितम्बर २०१२

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

चतुर्थ अंक

संपादक
वी. एन. शुक्ला
जे. सी. सेठी

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

रचनाकार-चिन्मय गर्ग

अभिव्यक्ति

संपादक

वी. एन. शुक्ला
जे. सी. सेठी

संपादन सहयोग

डॉ. पी. सी. जैन
कल्पना जौहरी
सुभाष चंद

विशेष सहयोग

नवीन चन्द्र

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी–डैक, नोएडा और संपादकों का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रगत संगणन विकास केन्द्र
अनुसंधान भवन, सी–56 / 1, संस्थागत क्षेत्र
सैक्टर– 62, नोएडा– 201307
फोन: 0120–3063311–13, फैक्स– 0120–3063317

विषय सूची

क्र.सं.	रचना	लेखक/संकलनकर्त्ता	पृष्ठ सं.
1	मशीन–से–मशीन बेतार संचार व्यवस्था (लेख)	डॉ. प्रेम चंद जैन	13
2	लर्निंग का ज़माना (कविता)	लक्ष्मी कल्याणी	18
3	आइए पेटेंट को जानें (लेख)	अमित कुमार	19
4	राम जाने कब बरसेगा पानी (कविता)	गरिमा गोत्रा	20
5	तलाश (कविता)	पुष्पा तिवारी	21
6	बेहतर बनाइए अपनी सर्चिंग तकनीक (लेख)	अमिय मोहंती	22
7	अम्मा (कविता)	राहुल जीनवाल	24
8	क्रेडिट कार्ड क्लोनिंग (लेख)	सुजीत कुमार	25
9	दिलचस्प तथ्य	शाहिदा शर्मा	27
10	वायरलेस विद्युत संचरण प्रणाली – अगली पीढ़ी की संचरण प्रणाली (लेख)	प्रदीप नंदन	28
11	अच्छा लगा (कविता)	गरिमा गोत्रा	33
12	सात अनोखे सुझाव (टिप्स) आपके पीसी के लिए (लेख)	अमित कुमार	34
13	चुटकुले	पुनीत गुरमुखानी	36
14	वेब 2.0 (Web 2.0) (लेख)	चिन्मय गर्ग	37
15	आभासीकरण (वर्चुअलाइजेशन) (लेख)	नितिन कुमार वार्ष्णेय	39
16	शायद ज़िंदगी बदल रही है (कविता)	शाहिदा शर्मा	41
17	आई टी प्रोजेक्ट प्रबंधन (लेख)	नितिन कुमार वार्ष्णेय	42
18	हिन्दी राष्ट्रभाषा (कविता)	पूजा शर्मा	44
19	यूनिकोड क्या है (लेख)	अभिषेक वर्मा	45
20	सड़ी गर्मी (कविता)	कविन्द्र सिंह बोरा	46
21	मेरा भारतीय किसान महान (कविता)	संजय कुमार	47
22	"माँ, मुझे माफ कर दो"! (कहानी)	अंजुम अवस्थी	48
23	हिन्दी की गरिमा (कविता)	राम बिलास चौधरी	50
24	अन्तर्दृष्टि	शिव कुमार शर्मा	51
25	पानी का महत्व (लेख)	शिखा गुप्ता	52
26	चुटकुले	चिन्मय गर्ग	53
27	परमात्मा और किसान (कहानी)	गौरव गोत्रा	54
28	सत्कर्म – ईश्वर प्राप्ति की कुंजी (लेख)	राजेन्द्र सिंह	55

क्र.सं.	रचना	लेखक/संकलनकर्त्ता	पृष्ठ सं.
29	जिंदगी बरगद सी (कविता)	रवि कुमार सिंह	57
30	सच्चाई का जीवन (कहानी)	जगदीश चन्द्र शर्मा	58
31	चुटकुले	राम बिलास चौधरी	59
32	ब्रह्मा, विष्णु और महेश (लेख)	प्रीति राज़दान	60
33	सफलता के सात सूत्र	प्रिया	61
34	नवभारत (कविता)	अंजुम अवस्थी	62
35	अंग्रेजी की गुलामी व उसके दुष्परिणाम (लेख)	घर्मेन्द्र कुमार शर्मा	63
36	कैसे अपनी जीवन शैली में सुधार लायें? (लेख)	चिन्मय गर्ग	68
37	जीवन की यात्रा दिल्ली होकर (कविता)	रवि शंकर राय	70
38	मुझे पुकार लो (कविता)	राजेश श्रीवास्तव	72
39	विचार तंत्र के दस तत्व (लेख)	गौरव गोत्रा	73
40	रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता	राजेन्द्र सिंह	74
41	देश का डर (कविता)	गजेन्द्र सिंह	76
42	कुर्सी दौड़ (लेख)	प्रिया	77
43	सामान्य ज्ञान	भुबन दास	79
44	संस्मरण (लेख)	गजेन्द्र सिंह	81
45	सी–डैक, नोएडा द्वारा राजभाषा हिन्दी में किए गए कार्य एवं उपलब्धियाँ	जे. सी. सेठी	82

जे. सत्यनारायण
सचिव
J. Satyanarayana
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग
Government of India
Ministry of Communications & Information Technology
Department of Electronics & Information Technology (DeitY)

संदेश

हम सबके लिए प्रसन्नता की बात है कि सी-डैक, नोएडा 'अभिव्यक्ति' नामक गृह-पत्रिका के चौथे अंक का प्रकाशन कर रहा है।

इस केन्द्र में तकनीकी क्षेत्र में कार्यरत इंजीनियरों एवं वैज्ञानिकों ने इस पत्रिका में अपनी लेखनी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि वे अन्य लेखकों की तुलना में किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। वे तकनीकी विषयों पर भी हिन्दी में मौलिक लेखन में समान रूप से सक्षम हैं। अतः इन प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों एवं तकनीकीविदों द्वारा राजभाषा हिन्दी में सृजित तकनीकी साहित्य आम लोगों के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा एवं इस क्षेत्र में कार्यरत अन्य लेखकों को भी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इस प्रकार हम अपनी तकनीकी जानकारी को राजभाषा हिन्दी के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने में सफल होंगे।

जे. सत्यनारायण
(जे. सत्यनारायण)

इलेक्ट्रॉनिक्स निकेतन, 6, सी.जी.ओ. कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली-110003 / Electronics Niketan,6, C.G.O. Complex, New Delhi-110003
Tel. : 011-24364041 • Fax : 24363134

महानिदेशक, सी-डैक का संदेश

मैं सी-डैक के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के चौथे अंक के प्रकाशन के लिए आप सबको बधाई देता हूँ।

यहां पर सभी वर्गों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने विभिन्न विधाओं में, और विशेषकर तकनीकी विषयों पर, जो लेख प्रस्तुत किए हैं वे प्रशंसा के पात्र हैं। आपने राजभाषा नियमों एवं विनियमों आदि का पालन करते हुए हिन्दी के प्रति अपनी लगन एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का जो प्रदर्शन किया है यह उसी का परिणाम है कि संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी समिति ने 30 सितम्बर 2011 को निरिक्षण के दौरान आपके द्वारा राजभाषा हिन्दी में किए गए कार्यों की भरपूर प्रशंसा की है और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया है। इसके लिए आप सब प्रशंसा के पात्र हैं।

मुझे आशा है कि आप इसी प्रकार भविष्य में भी अपने दायित्वों का निर्वाह पूरी निष्ठा एवं लगन से करते रहेंगे।

(प्रो. रजत मूना)
महानिदेशक, सी-डैक

सी-डैक
CDAC

कार्यकारी निदेशक, सी-डैक, नोएडा का संदेश

सरकार की राजभाषा नीति हमें हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिए हर तरह के प्रयासों के लिए प्रोत्साहित करती है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं। इसका दायित्व न केवल सरकार का है बल्कि हम सभी को मिलकर इस ओर प्रयास करने हैं। इसी प्रयास को आगे बढ़ाते हुए 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन किया जा रहा है।

मेरा मानना है कि भाषा की प्रगति उसके पूर्णतः व्यवहार में लाने से होती है। अतः यह आवश्यक है कि हम हिन्दी के संवर्धन एवं विकास के लिए इसके प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अपने दैनिक जीवन एवं सरकारी कामकाज में इसका अधिक से अधिक प्रयोग करें। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका निर्बाध गति से प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगी और सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग हेतु मार्गदर्शक के रूप में सिद्ध होगी। आशा है कि 'अभिव्यक्ति' का चौथा अंक भी आपको पसंद आएगा। कृपया आप अपने बहुमूल्य सुझाव देकर आगामी अंकों को और भी आकर्षक बनाने में हमे सहयोग दें।

बी. के. मूर्ती

(डॉ. बी. के. मूर्ती)
कार्यकारी निदेशक

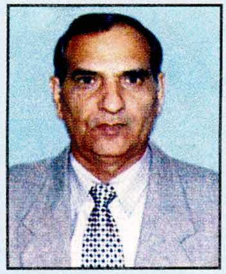

संपादकीय

भाषा दिन-ब-दिन परिष्कृत, व्यापक तथा पठनीय होती जा रही है। पिछले दशक में सूचना प्रौद्योगिकी तथा कंप्यूटर के बहुगामी प्रयोगों के कारण हिन्दी भाषा पर भी असर हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रमुख शब्द अपने आप ही हिन्दी में शामिल हो गए हैं। मोबाइल का प्रयोग शहरी ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में बहुत बढ़ गया है, जिसकी वजह से आज एक नई शब्दावली सुनने तथा देखने मिलती है। कई प्रकार के क्रियापद हिन्दी में नाम पद के रूप में प्रयोग में आ रहे हैं। यह तो रहा समाज का मन्ज़र, अपितु इस सूचना क्रांति के क्रांतिवीर जिन संस्थाओं और इकाइयों में कार्यरत हैं, उनपर भी बहुत अधिक प्रभाव इस शब्दावली ने कर दिखाया है। वह अपने रोजमर्रा के जीवन में और पढ़ने-लिखने में इन शब्दों का प्रयोग बनिस्बत करने लग गए हैं। सी-डैक भी एक ऐसी संस्था है जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी के कई उपकरणों और सेवाओं का निर्माण होता है। जो भी मानव ऊर्जा इस कार्य में सक्रिय है, आइए उनके मस्तिष्क में भी झाँककर देखें कि हिन्दी के किस रूप का वहाँ संचयन हो रखा है।

कॉरिडोर से गुजरते हुए सूचना प्रौद्योगिकी के इन क्रांतिवीरों की बातचीत सुनना और समझना अपने-आप में एक सुखद अनुभव होता है। कहा जाता है कि तकनीकी तथा विज्ञान का "लिटरेचर" अंग्रेजी में ही लिखा जा सकता है या अंग्रेजी में ही बहुत उपलब्ध है। किंतु जब इन क्रांतिवीरों की बोली सुनो या बरबस ही बाजार से गुजरते हुए व्यवसायी बंधुओं तथा आम आदमियों की भाषा सुनो तो यही प्रतीत होता है कि हिन्दी ने अपनी पहचान खोई नहीं है, बल्कि कई शब्दों को और उनके उपयोग करने के तरीकों को अपना कर अन्य भाषा (जैसे अंग्रेजी) को ही बदला है। हिन्दी भाषा की यही सबसे बड़ी पहचान है।

सी-डैक इस वर्ष अपनी रजत जयंती मना रहा है। अपनी अनेक विशेषताओं में सी-डैक की प्रमुख विशेषता है। बहुभाषी तकनीकी का विकास जो कंप्यूटर, मोबाइल इत्यादि उपकरणों पर चलकर आम आदमी के जीवन को सुगम बनाने के साथ-साथ सरकार को भी "ई-गवर्नेंस" द्वारा समुचित मदद करने में धीरे-धीरे समर्थ हो रही है। भाषा प्रौद्योगिकी का भारत में हो रहा विकास सभी देशों के वैज्ञानिकों के लिए उत्सुकता और कौतुहल का विषय बन चुका है। हाल ही में हमने अखबारों में पढ़ा है कि ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित शब्दकोश के नए संस्करण में, भारत में प्रचलित 800 नए शब्द शामिल हुए हैं और आने वाले 1-2 वर्षों में करीब 4000 से ज्यादा शब्द शामिल होने को तैयार बैठे हैं। यह अपने आप में सिद्ध करता है कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाएँ सर्वोपरि हैं, सशक्त हैं, भावनाओं से भरपूर हैं तथा भाषा की कसौटी पर शक्तिशाली हैं।

संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण समिति द्वारा सी-डैक में भाषा संबंधी हो रहे तकनीकी विकास के साथ-साथ हिन्दी में हो रहे कार्यों की भरपूर प्रशंसा की गई है और इस प्रशंसा ने सी-डैक की रजत जयंती पर चार चाँद लगा दिए हैं। हमें हर्ष है कि इस सुअवसर पर हमारे मित्रों, सहयोगियों ने अपने विचारों को अपनी भावनाओं को अपने नटखटपन की रचनाओं में ढालकर हमें प्रस्तुत किया, जिसे "अभिव्यक्ति" द्वारा एक किताब में डालकर, अभिव्यक्ति की माला में एक और रत्न पिरोकर आपके सम्मुख रखा जा रहा है।

आपके अमूल्य सुझाव इन रचनाकारों को प्रशस्तिपत्र के समान ही लगेंगे, यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं है। अलबत्ता आपके सुझाव उनको और उनके विचारों को झंझोड़कर अधिक शक्तिशाली रचना के सृजन के लिए उन्हें प्रेरित ही करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(वी. एन. शुक्ला)

(जे. सी. सेठी)

मशीन-से-मशीन बेतार संचार व्यवस्था

– डॉ. प्रेम चंद जैन
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, स्कूल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स

सारांश

आज बेतार संचार व्यवस्था के द्वारा एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ आसानी से बात कर सकता है, एस.एम.एस. (SMS) कर सकता है व डेटा भेज सकता है। भविष्य में मशीन–से–मशीन बेतार संचार व्यवस्था रोजमर्रा की वस्तुओं के लिए की जाने लगेगी और वह भी इंटरनेट के द्वारा। रोजमर्रा की वस्तुओं में माइक्रोकंट्रोलर व ट्रांससीवर (Transceiver) लगा कर इनको स्मार्ट बनाया जाएगा व फिर इन स्मार्ट वस्तुओं को आपस में संचार करने के लिए इंटरनेट से जोड़ दिया जाएगा। उदारहणार्थः आजकल डेस्कटॉप पीसी व मोबाइल फोन इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। इस व्यवस्था को हम 'इंटरनेट ऑफ थिंग' भी कह सकते हैं। इस व्यवस्था में मनुष्यों की जरूरत महसूस नहीं होगी क्योंकि मशीनें आपस में संचार करके उपयुक्त निर्णय ले लेंगी। इस लेख में मशीन–से–मशीन बेतार संचार व्यवस्था व इसकी उपयोगिताओं के बारे में उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है।

1. प्रस्तावना

आज बेतार संचार व्यवस्था मनुष्य से संबंधित है क्योंकि यह संचार व्यवस्था मनुष्य के लिए ही बनाई गई है। कम्प्यूटर, टेलीफोन, लैपटॉप इत्यादि को काम में लेते हुए मनुष्य संसार में किसी भी दूसरे मनुष्य को समाचार भेज सकता है, बात कर सकता है व तस्वीरें भेज सकता है। ऐसे लोगों की संख्या अब तक लाखों करोड़ों में पहुँच गई है। अब क्योंकि कम्प्यूटर सस्ता व आकार में छोटा हो गया है तो कम्प्यूटर को रोजमर्रा की वस्तुओं में इस्तेमाल करके कम खर्च में वस्तुओं को स्मार्ट बनाया जा सकता है व स्मार्ट वस्तुओं को आसानी से इंटरनेट से जोड़ा जा सकता है। हर एक वस्तु में उससे संबंधित एक सेंसर होगा जो उसकी योग्यता को इलेक्ट्रिक तरंगों में बदलेगा व फिर डिजीटाइज (Digitize) करके माइक्रो–कंट्रोलर में प्रोसेस (Process) करके जो उपयुक्त डेटा होगा उसको ट्रांससीवर के द्वारा तार रहित माध्यम से नेटवर्क में होते हुए इंटरनेट को भेजेगा।

इंटरनेट तक लम्बी दूरी की बेतार संचार व्यवस्था बनाने के लिए सेल्युलर (Cellular) 2जी (2G), 3जी (3G), 4जी (4G) या वाइमेक्स (WiMAX) की तकनीक की जरूरत होगी व कम दूरी के संचार के लिए अगर डेटा की गति ज्यादा होगी तो वायरलेस लोकल एरिया नेटवर्क (WLAN) व डेटा की गति कम होगी तो ब्ल्युटुथ (Bluetooth) या जिग्बी (Zigbee) तकनीक की जरूरत पड़ेगी।

इस लेख में हम वायरलेस सेंसर नेटवर्क (Wireless Sensor Network), मशीन–से–मशीन नेटवर्क व इनकी उपयोगिताओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा करेगें।

2. वायरलेस सेंसर नेटवर्क

इस नेटवर्क में छोटे–छोटे सेंसर नोड होते हैं जो आपस में एक–दूसरे को बेतार माध्यम से डेटा भेजते (Communicate) हैं। हर नोड खुद के डेटा को पास की दूसरी नोड को भेजती है। इस तरह सभी नोड का उपयुक्त डेटा आखिरी नोड सींक (Sink) या गेटवे (Gateway) तक पहुँचता है। सींक डेटा को यू.एस.बी. (USB) के द्वारा कम्प्यूटर या लेपटॉप तक भेजता है जहाँ पर डेटा का विश्लेषण (Analysis) करके उपयुक्त परिणाम तैयार किया जाता है।

हर वायरलेस सेंसर में उपयुक्त सेंसर, माइक्रो–कंट्रोलर व ट्रांससीवर होता है। इन सबको काम करने के लिए ऊर्जा की जरूरत होती है जो AA की दो बैटरियों से मिल सकती है। क्योंकि ये नोड अलग–अलग जगह पर रखी होती हैं जहां पर प्रमुख ऊर्जा स्रोत का पर्याप्त साधन नहीं मिल पाता है। सेंसर उपयोगिताओं के अनुसार चुने जाते हैं जिससे उस उपयोगिता से संबंधित डेटा इकट्ठा करके सींक को भेजा जा सके।

बेतार संचार व्यवस्था में तारों का खर्चा बच जाता है व तारों को सेंसर नोडस से जोड़ने (Installation) का काम भी नहीं रहता परन्तु यदि नोड बहुत बड़े क्षेत्र (Area) में रखे हों तो सेंसर नोडस की बैटरी का चार्ज खत्म होने पर नई बैटरी बदलना कभी–कभी ज्यादा महंगा पड़ जाता है। इसलिए बैटरी की ताकत बचाने के लिए कुछ न कुछ तरीके अपनाने की जरूरत पड़ती है जिससे ज्यादा से ज्यादा समय तक बैटरी चलती रहे व इसे बदलने की कम जरूरत पड़े। बैटरी चार्ज बचाने का एक तरीका तो यह है कि सेंसर, माइक्रो–कंट्रोलर व ट्रांससीवर इस तरह के काम में लिए जाएं जो कम से कम करेंट पर काम करते हों। दूसरा तरीका यह है कि ज्यादा से ज्यादा समय तक सेंसर नोडस सोती ही रहें व जब सेंसर नोडस से डेटा मांगा जाए या जब उसके पास डेटा भेजने के लिए हो तभी वो जागे, डेटा भेजे व फिर से सो जाए। तीसरा तरीका यह है कि सोलर बैटरी का उपयोग किया जाए जिससे की सूर्य की किरणों से बैटरी चार्ज होती रहे व रात में जरूरत पड़ने पर यह बैटरी करेंट देती रहे। इस तीसरे तरीके से सेंसर नोड सालों काम कर सकती है क्योंकि नोड्स की ऊर्जा खपत (Consumption) मिली–वाट (MW) में होती है जब जगी होती है व कुछ माइक्रो–वाट (MW) में होती है जब व सोती रहती है। ये नोडस जगने, डेटा भेजने, व वापस सो जाने के लिए कुछ ही मिली–सेकन्डस (ms) का समय लेती है। इस तरह बेतार सेंसर नोड का लम्बे समय तक काम करने के लिए खर्चा बहुत कम हो जाता है व काम भी कुशलतापूर्वक (efficiently) करती है।

3. मशीन–से–मशीन की बेतार संचार व्यवस्था

दूरी को देखते हुए संचार व्यवस्था तीन भागों में बांटी जा सकती है। एक तो बहुत पास (2-3 मीटर) में जहां आर.एफ.आई.डी. (RFID) तकनीक काम कर सकती है या पास (20-70 मीटर) में जहां जीग्बी (Zigbee) व ब्ल्युटुथ (Bluetooth) तकनीक काम में लाई जा सकती है या फिर बहुत दूर (10-35किमी) जहां सेलुलर (Cellular) 2जी से 4जी (2G to 4G) तकनीक काम कर सकती है। 4जी को काम में लेते हुए

अगर नोड स्थिर है तो 1 गीगा बिट प्रति सेकण्ड (1Gbps) की गति से डेटा भेज सकते हैं व अगर नोड कार में जा रही है तो डेटा 100 मेगा बिट प्रति सेकण्ड की गति से भेजा जा सकता है। मशीन–से–मशीन संचार व्यवस्था में करोड़ों अरबों स्मार्ट उपकरण ऊपर की तीन तकनीकों को काम में लेते हुए आपस में संचार का काम करेंगी।

4. मशीन-से-मशीन का नेटवर्क

मशीन–से–मशीन नेटवर्क (Network) के लिए बेतार सेंसर नोडस की जरूरत पड़ेगी जिसका विवरण सेक्शन 2 में ऊपर दिया जा चुका है जो नोडस सींक तक डेटा पहुंचाने के लिए जिग्बी या ब्ल्युटुथ वर्जन 4–0 तकनीक का उपयोग कर सकती है। डेटा नोडस से सींक तक डेटा पहुंचाने के लिए एक होप (1-hope) या एक से ज्यादा (Multi) होप का सहारा लिया जा सकता है। कम दूरी पर नोड्स के होने से ऊर्जा कम खर्च होती है व व्यवधान (Interference) भी कम होता है।

सेंसर नोडस का डेटा इकट्ठा करके व दुबारा डेटा को सींक में प्रोसेस करके रिमोट–बेक–एण्ड–सर्वर (Remote back and server) पर 2जी से 4जी तकनीक या वायरलैस लोकल एरिया नेटवर्क (WLAN) या वाईमेक्स (Wi MAX) तकनीक को काम में लेते हुए डेटा भेज सकते है। दूरी व डेटा की गति (Speed) को ध्यान में रखते हुए सिस्टम स्वतः 2जी से 4जी या वायरलैस लैन या वाईमेक्स को चुन सकता है। अगर सर्वर की दूरी लिंक (Link) से ज्यादा नहीं है व डेटा की गति ज्यादा है तो वायरलैस लेन का प्रयोग कर सकता है, अगर दूरी व गति मध्यम हो तो वाईमेक्स का प्रयोग कर सकता है। अगर दूरी ज्यादा है व गति कम है तो 2जी से 4जी अपना सकता है। बेक–एन्ड–सर्वर मशीन–से–मशीन संचार व्यवस्था की उपयोगिताओं (Applicatons) को बखूबी दर्शाता है।

स्मार्ट उपकरणों को तीन चीज़ो की जरूरत होती है। पहला स्मार्ट उपकरण की पहचान आर.एफ.आई.डी. (RFID) की तकनीक से की जा सकती है। इस तकनीक में हर नोड के आर.एफ.आई.डी. टैग (Tag) में युनिक (Unique) नम्बर स्टोर (Store) होता है। जिसको आर.एफ.आई.डी. रीडर (Reader) पढ़ लेता है व सींक को भेज देता है। दूसरा स्मार्ट उपकरण की लोकेशन (Location) जिसका जी.पी.एस. (GPS) तकनीक के द्वारा पता लगाया जा सकता है अगर नोड में इस तकनीक का सर्किट उपलब्ध हो तो तीसरा मॉनिटरिंग (Monitoring) जो कि समार्ट उपकरण की भूत व वर्तमान स्थिति को दर्शाता है। जैसेः वस्तुओं का तापक्रम, आद्रर्ता, दवाब, सूर्य की रोशनी इत्यादि।

5. उपयोगिताएँ

मशीन–से–मशीन बेतार संचार व्यवस्था को स्मार्ट घरों में काम में ला सकते हैं। यह स्मार्ट घरों के उपकरणों (Appliances) जैसे हीटर, पंखे, ए.सी., माइक्रोवेव, वाशिंग मशीन इत्यादि को अनुकूलतम (Optimum) तरीके से चलाते हुए बिजली की खपत कम कर सकती है। कारें आपस में संचार बनाए रख

सकती हैं जिससे दुर्घटना होने के आसार नगण्य हो जाते हैं। शरीर पर लगे बायो–सेंसर से (Wearable Bio-Sensors) शरीर के स्वास्थ्य की जानकारी लेते रहते हैं व अगर जीवन खतरे में हो ते तुरन्त अलार्म बजा कर डाक्टर को भी इसकी सूचना भेज सकते हैं।

(क) ट्रांसपोर्ट फ्लीट

इस उपयोगिता में अगर ट्रक, टैक्सी या कैब चल रही है तो ये अपने समाचार मशीन–से–मशीन की संचार व्यवस्था को काम में लेते हुए कंट्रोल रूम के आटो–सर्वर तक पहुँचा देती है। जब ड्राइवर वाहन (Vehicle) चला रहा होता है तो वाहन के अन्दर रखा काला बॉक्स (Black Box) जी.पी.एस. के द्वारा वाहन की लोकेशन, वाहन की गति व वाहन की रख–रखाव (Maintenance) की सूचनाएं समय–सयम पर कंट्रोल रूम के स्वचलित को 3जी या 4जी की तकनीक को काम में लेते हुए भेजता रहता है। जब ड्राईवर गंतव्य स्थान पर पहुंच जाता है तो ड्राइव समय, दूरी, पेट्रोल या डीजल की खपत इत्यादि की सूचनाएं ब्लैक–बॉक्स व स्वचलित को भेज देता है। इन सूचनाओं के द्वारा ऑटो–सर्वर ग्राहक के लिए बिल तैयार (Generate) कर सकता है व कस्टमर को मोबाइल फोन पर सूचना भेज सकता है।

(ख) वेन्डींग मशीन

वेन्डींग मशीन से हम रोजमर्रा की चीजें जैसे सॉफ्ट ड्रिंक, सीगरेट, चॉकलेट इत्यादि सिक्का (Coin) डालकर खरीद सकते हैं। वेन्डींग मशीन के अन्दर सेंसर नोड कुल (Total) में से एक–एक करके चिजों की गणना कम करती रहती है। जब स्टॉक कम हो तो सूचना वेन्डींग मशीनों के मालिक के सर्वर को 2जी या 3जी तकनीक के द्वारा भेज देती है। मालिक (Vendor) सभी मशीनों को ज़रूरत के हिसाब से वेन्डींग मशीन में चीजें डाल देता है। सेंसर नोडस रोजाना कितनी चिज़ों की बिक्री हुई इत्यादि की सूचनाएं वेंडर को सर्वर पर भेज देती है। इससे मालिक को घर बैठे रोजाना की बिक्री का पता लग जाता है।

(ग) स्मार्ट मिटरिंग

घर में स्मार्ट मिटरिंग के द्वारा बिजली, गैस, पानी इत्यादि की खपत का विवरण युटिलिटी कम्पनी के सर्वर पर 2जी या जी.पी.आर.एस. (GPRS) या 3जी तकनीक के द्वारा चला जाता है। घर का मालिक युटिलिटी कम्पनी के सर्वर को लॉगइन (Login) करके खुद भी पता लगा सकता है कि कितनी बिजली, पानी या गैस खर्च हो चुकी है व कितना रुपया युटिलिटी कम्पनी को जमा कराना है?

(घ) निगरानी विडियो

निगरानी विडिओ (Surveillance Video) कैमरा घर, फ्लैट या मार्किट में लगा दिया जाता है। इसका विडियो सिगनल (Signal) 4जी तकनीक के द्वारा होम सिक्युरिटी सर्वर को भेज दिया जाता है। विडियो डेटा की गति ज्यादा होने से 3जी या 4जी की तकनीक काम में ली जाती है। जब भी कोइ गतिविधि होगी तो कैमरा काम करना चालू कर देगा व विडियो सिगनल सर्वर को भेज देगा। अगर घर का मालिक दफ्तर से घर का हाल जानना चाहता है तो होम सिक्युरिटी सर्वर को लॉग–इन करके मोबाइल फोन या लैपटॉप पर तस्वीरें (Picture) देख सकता है।

6. चुनौतियाँ

करोड़ों अरबों स्मार्ट उपकरणों की कम खर्चे पर बेतार संचार व्यवस्था को तैयार करना व फिर इसको बिना किसी बाधा (Failure) के चालू रखना अपने आप में बहुत बड़ा काम है।

यह तकनीक किसी भी कारणवश फेल हो सकती है, उदाहरण के तौर परः डिजाइन की कमी या मेटिरियल की कमी या तोड़फोड़ (स्बोटेज) या ओवरलोडिंग या प्राकृतिक आपदा (नेचुरल डिसेस्टर) इत्यादि। एक जबरदस्त डर वायरस का हो सकता है। अगर किसी ने वायरस सिस्टम में प्रोग्राम कर दिया तो बहुत बड़ा हादसा हो सकता है।

मशीन–से–मशीन की बेतार व्यवस्था पूरी तरह से प्रौद्योगिकी (Technology) पर आधारित है। इसका सीधा सा मतलब मनुष्य की स्वतन्त्रता को सरेन्डर (Surrender) करना है।

जब मशीनें (स्मार्ट वस्तुऐं) आपस में संचार करके मनुष्य का सारा काम संभाल लेंगी तो मनुष्य के पास कोई काम ही नहीं रह जाएगा तब मनुष्य को व्यस्त रखने के लिए कुछ और काम ढूंढना पड़ेगा। मनुष्य मशीनों से तो फिर भी बात कर लेगा परन्तु दूसरे मनुष्यों से बात नहीं कर पाएगा। यह शायद इस उन्नत तकनीक की विडम्बना होगी। मशीन–से–मशीन की बेतार संचार व्यवस्था भविष्य की गणना (Computing) व संचार व्यवस्था को दर्शाएगी।

आभार

लेखक डॉ. जार्ज वर्की, पूर्व कार्यकारी निदेशक, डॉ. बी. के मूर्ती, कार्यकारी निदेशक व श्री वी.बी. तनेजा, निदेशक (शैक्षणिक) सी–डैक, नोएडा का आभारी है जिन्होंने यह लेख लिखने के लिए प्रेरित किया व समय–समय पर मार्गदर्शन किया। लेखक श्री जे. सी. सेठी, हिन्दी अधिकारी को धन्यवाद देना चाहता है जिन्होंने इस लेख को एडिट करके छपने लायक बनाया।

लर्निंग का ज़माना

– लक्ष्मी कल्याणी
वरिष्ठ व्याख्याता, स्कूल ऑफ आई.टी.

लर्निंग का ज़माना है
चाहे हो इलेक्ट्रनिक लर्निंग
या हो मोबाइल द्वारा लर्निंग।

बच्चे, बूढ़े, युवा और युवती
घर की हो या आफिस की युवती
लर्निंग पाने की कोई उम्र नहीं
किताब, कम्प्यूटर या हो मोबाइल
लर्निंग पाने की कोई सीमा नहीं।

लर्निंग ही वो हथियार है
जो ज्ञान की ताकत देती है
ज्ञान ही वो हथियार है
जो खुद को अप टू–डेट रखती है।

लर्निंग की हैं ज़रूरत अनेक
लर्निंग के हैं माध्यम अनेक
लर्निंग के हैं फ़ायदे अनेक
चूँकि लर्निंग ही देती ज्ञान अनेक।।

★★★

राजभाषा नियम की धारा 3(3) के अंतर्गत निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने अवश्यक हैं:

आइए पेटेंट को जानें

– अमित कुमार
वरिष्ठ अभियन्ता– II, डेवलपमेंट ग्रुप

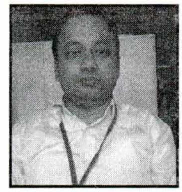

यह समय नए अविष्कार का है। लेकिन साथ–साथ किए गए नए काम पर अपना अधिकार बनाए रखने की लड़ाई का भी है।

रचनात्मक काम करने वाले गीतकार, साहित्यकार, संगीतकार या फिल्मकार अपनी कॉपीराइट की लड़ाई लड़ रहे हैं। तकनीक की दुनिया में यह लड़ाई पेटेंट–वार के नाम से चल रही है। इस दुनिया की तमाम बड़ी कम्पनियां हर साल हजारों की संख्या में पेटेंट कराती हैं। तकनीक सफल हो या नहीं, उस तकनीक पर कोई उत्पाद बने या नहीं लेकिन कंपनिया उसका पेटेंट करा देंगी और उस पर लाखों डॉलर खर्च करेंगी। तकनीक की इस लड़ाई ने प्रयोगों को बुरी तरह से बाधित किया है। नए किस्म के अविष्कार लगभग नामुमकिन हो गए हैं। क्योंकि हर किस्म की तकनीक पर किसी न किसी कंपनी ने पेटेंट लिया है। और उस तकनीक पर उसके वैज्ञानिकों को छोड़ कर दूसरा कोई काम नहीं कर सकता। कुछ सालों पहले तकनीक की दुनिया के दो दिग्गजों की लड़ाई भी बेहद रोचक रही। दिवंगत स्टीव जाब्स ने माइक्रोसॉफ्ट विंडोज के डिजाइन को लेकर बिल गेटस के साथ सालों मुकदमा लड़ा था। जाब्स का दाबा था कि विंडोज को बनाने में उनकी तकनीक चुराई गई है।

लेकिन तब उतना बुरा नहीं था। अब तो पूरी दुनिया में युद्ध छिड़ा है। इस समय स्मार्टफोन की तकनीक और डिजाइन को बचाने में करीब ढ़ाई लाख पेटेंट रजिस्टर कराए गए हैं। कॉपीराइट की यह लड़ाई इतनी जटिल हो गई है कि एप्पल और सैमसंग जैसी बड़ी कंपनियां इसमें उलझी हुई हैं।

पेटेंट कराने से लेकर उसे प्रोटेक्ट करने लाइसेंस फीस जमा करने और मुकदमा लड़ने में लाखों डालर खर्च हो रहे हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि माइक्रोसॉफ्ट ने दुनिया के तमाम वर्ड एन्ड्रायड मेन्युफैक्चर्स के साथ लाइसेंस का करार किया है और उसे अपने विंडोज फोन की बिक्री से उतना मुनाफा नहीं हो रहा उससे ज्यादा लाइसेंस फीस जा रही है। पिछले एक दशक में लाईसेंस फीस में कई गुणा बढ़ोतरी हई है।

आपको यह जानकर हैरानी होगी कि अगर किसी महत्वपूर्ण तकनीक का मालिकाना हक या पेटेंट बदलता है तो उस पर लगभग ढ़ाई करोड़ डालर से ज्यादा का खर्च आता है यह अमेरिका के स्टेट पेटेंट एण्ड ट्रेडमार्क आफिस का अनुमान है। पेटेंट से जुड़े मामलो में वकील कम से कम चार सौ डालर यानी बीस हजार रुपए प्रति घंटे की कमाई कर रहा है। अमरिका में पेटेंट के मुकदमें से एक पक्ष का खर्च कम से कम साढ़े बारह करोड़ रुपए का आता है। इसके वाबजूद कंपनियां पेटेंट और लाइसेंस के मुकदमों में उलझी रहती हैं।

आज सूचना तकनीक के युग में स्मार्टफोन और टैबलेट पीसी का बाजार सबसे तेजी से बढ़ रहा है। हार्डवेयर बनाने वालों के लिए सबसे बड़ी लड़ाई मुनाफे का क्षेत्र है। एक अनुमान के मुताबिक एक तिमाही में पूरी

दुनिया में लगभग 12 करोड़ के करीब स्मार्टफोन बेचे जा रहे हैं। सैमसंग, गैलेक्सी और एप्पल की बिक्री का आंकड़ा तीन अंकों की विकास दर से चल रहा है। अनुमान के मुताबिक आने वाले तीन सालों में भारत सहित पूरी दुनिया में करीब एक करोड़ से ज्यादा टैबलेट पीसी बिकेंगे। यही कारण है कि कंपनियां लाइसेंस और पेटेंट पर ज्यादा ध्यान दे रही हैं। उनका मानना है कि इतने बड़े बाजार में अगर किसी और ने उनको तकनीक की नकल करके सस्ती दरों में बाजार से उतार दिया तो उनके उत्पाद को खरीदेगा कौन?

जाहिर है जब इतने ज्यादा पेटेंट होंगे तो किसी न किसी की तकनीक कहीं न कहीं टकरायेगी और फिर उसको लेकर मुकदमें होंगे। इन मुकदमों की वजह से तकनीक का विकास बाधित हो रहा है और धन भी बरबाद हो रहा है। वैज्ञानिक कंपनियों से मुकदमे लड़ने की बजाए बातचीत के जरिए पेटेंट का मसला सुलझाने की वकालत कर रहे हैं।

***

राम जाने कब बरसेगा पानी

– गरिमा गोत्रा
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

सावन भादों साधु हो गए, बादल सब सन्यासी,
परवा चूस गई पुरबा को, धरती रह गई प्यासी,
फसलों ने वैराग ले लिया, जोगी हो गई घानी,
राम जाने कब बरसेगा पानी।

ताल तलैया माटी चाटें, नदियाँ रेत चबाएं,
कुएं में मकड़ी जाला तानें, नहरें चील उड़ाएं,
उबटन से गगरी रूठी है, पनघट से बहुरानी,
राम जाने कब बरसेगा पानी।

छप्पर पर दुपहरिया बैठी, धूप टंगी अंगनाई,
द्वार का बरगद ठूंठ हो गया, उजड़ गई अमराई,
चौपालों से खलिहानों तक, सूरज की मनमानी,
राम जाने कब बरसेगा पानी।

पिघल गया चेहरों का सोना, उतर गई महताबी,
गौरी बांहे हुई सांवरी, बुझ गए नयन गुलाबी,
सपने झुलस गए राधा के, श्याम हुए सैलानी,
राम जाने कब बरसेगा पानी।

बाजारों में महंगाई की बिखर गई तस्वीरें,
हमदर्दों के पांव पड़ गई वादों की जंजीरें,
संसद की कुर्सी में धंस गई खेती और किसानी
राम जाने कब बरसेगा पानी।

***

तलाश

– पुष्पा तिवारी
कार्यालय सहायक, प्रशासन

मुझे तलाश है
उस एक सुखद क्षण की
जो किसी और के दुःख का कारण न हो
हर्षोल्लास के उस पल की
जो किसी के आंसुओं से भींगा न हो
शांति की उस घड़ी की
जो अतीत की यातनाओं
भविष्य की दुश्चिंताओं के बोझ से बोझिल न हो,
जो किसी और की अशांति की पीड़ा से अछूती हो,
मुझे चाहिए वह सफलता
जो किसी और की असफलता पर सवार न हो,

मुझे तलाश है
उस समृद्धि की
जो किसी दूसरे की निर्धनता से अभिशप्त न हो,
मुझे खोज है उस शोहरत की
जिस पर किसी की गुमनामी का साया न हो,
मुझे प्रतीक्षा है
ऐसी स्वप्नहीन, निर्विघ्न लंबी नींद की
जो किसी के दुःस्वप्नों का सबब न हो,
मुझे चाहिए ऐसा जीवन
जो मौन के साए में न पलता हो

मैं बनाना चाहती हूँ
मेरा अपना एक ऐसा आनंद–महल
जो प्रदूषण के धूल–धूएं, शोरशराबे
से दूर अनचाहे आंगतुकों की पहुंच
से बाहर ऐसा महल जहां मैं अपने
विशुद्ध आनन्द के क्षणों को
निर्विघन आत्मासात कर सकूं
मैं सोच रही हूँ एक ऐसी मंजिल
जो मेरे सामने स्पष्ट दृष्टीगोचर हो,
जिस तक पहुँचने का मार्ग असाध्य न लगे,
जिसकी प्राप्ति के अहसास को
महसूस करने और उत्साह–उल्लास से मनाने का
बल–सामर्थ मुझमें बाकी रहे,
मैं चाहती हूँ कहीं जो मेरा प्राप्य हो
जिस पर किसी और का अधिकार न हो
मेरा जीवन रहते यह तलाश क्या ख़त्म होगी?
उपलब्धि की संतुष्टि क्या मेरी नियती में है?
या फिर यह जीवन ही
एक तलाश बनकर रह जाएगा?

***

बेहतर बनाइए अपनी सर्चिंग तकनीक

– अमिय मोहंती
वरिष्ठ अभियंता (आई.टी.), एन.एल.पी.

इन्टरनेट पर जब भी हमें किसी जानकारी की जरूरत होती है तो हम सबसे पहले किसी सर्च इंजन, जैसेः गूगल या याहू पर ही जाते हैं। हालांकि अक्सर केवल शब्द डालने से ही हमें वह जानकारी मिल जाती है परन्तु कभी–कभी हम चाहते कुछ हैं और सर्च इंजन हमें कुछ और दिखा रहा होता है। ऐसी स्थिति में हम कुछ युक्तियों का उपयोग करके अपने मनचाहे खोज परिणाम पा सकते हैं। आइए इन युक्तियों के बारे में जानें :–

1. वाक्यांश खोज (" ")

यदि हम शब्दों के समूह के दोनों ओर उद्धरण चिह्नों *(" ")* का प्रयोग करते हैं तो हमारा सर्च इंजन बिना कोई बदलाव किए, उसी क्रम में हमें परिणाम दिखाता है। गूगल आपके द्वारा दिए गए शब्दों के क्रम को तथा उनकी युग्मता को ध्यान में रखते हुए खोज करता है इसलिए बिना उद्धरण चिह्नों के भी हमें अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।

ध्यान दें कि उद्धरण चिह्न लगाने पर हमसे कुछ परिणाम छूट भी सकते हैं जैसे अगर आपने उद्धरण चिन्हों में 'पंडित नेहरू' दिया तो पंडित जवाहरलाल नेहरू वाले परिणाम छूट सकते हैं। इसके उलट अगर आपको किन्हीं 'जवाहरलाल मिश्रा' के बारे में खोज करनी है तो आपको उद्धरण चिह्न लगाने पड़ेंगे नहीं तो आपके परिणामों में अत्यधिक प्रसिद्धता के कारण जवाहरलाल नेहरू के भी परिणाम आ जायेंगे।

2. किसी एक ही जालघर (site) पर खोज

गूगल के द्वारा हम अपनी खोज को किसी एक जालघर तक सीमित कर सकते हैं या किसी एक जालघर पर ही खोज कर सकते हैं। हम अपनी खोज को किसी टॉप लेवल डोमेन तक भी सीमित कर सकते हैं।

जैसे:– [site:.ac.in] साथ में देकर हम उन सभी जालघरों पर खोज कर सकते हैं जिनके नाम के अन्त में ac.in लगा हो। (भारत में पंजीकृत शैक्षिक संस्थाओं के जालघर) [site:.in] साथ में दे कर हम उन सभी जालघरों पर खोज कर सकते हैं जिनके नाम के अन्त में .in लगा हो। (भारत में पंजीकृत जालघर) [site:.edu] साथ में दे कर हम उन सभी जालघरों पर खोज कर सकते हैं जिनके नाम के अन्त में .edu लगा हो। समपूर्ण विश्व में (मुख्यतः संयुक्त राज्य अमरीका में) पंजीकृत शैक्षिक संस्थाओं के जालघर)

3. वर्जित शब्द (–)

किसी भी शब्द के पहले ऋण चिह्न (–) लगाकर हम अपनी खोज से उस शब्द से सम्बन्धित जालपृष्ठों को हटा सकते हैं। ध्यान दें कि ऋण चिह्न शब्द के आरम्भ में होना चाहिए और उससे पहले एक खाली जगह होनी चाहिए। उदाहरण के लिए अगर हम [anti-virus software] लिखते हैं तो यहाँ पर सर्च इंजन ऋण चिह्न (–) को वर्जित शब्द की तरह प्रयोग नहीं करेगा और आपको ऐंटीवाइरस अनुप्रयोगों के बारे में परिणाम दिखाएगा। इसके उलट अगर आपको विषाणुरोधियों के बारे में खोज करनी है तो [antivirus -software] ऐसे पृष्ठों की खोज करेगा जिसमें antivirus शब्द होगा लेकिन software शब्द नहीं होगा। एक बार में एक से ज्यादा शब्दों को भी वर्जित किया जा सकता है।

4. अनजाने शब्दों का प्रयोग (*)

अगर आपको किसी वाक्यांश का कोई शब्द याद नहीं है या किसी वाक्यांश में आप एक जगह पर कई शब्दों को रख कर खोजना चाहते हैं तो * चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये [google *] लिखने पर हमें गूगल के कई प्रयोगों तथा अनुप्रयोगों के बारे में पता चल जायेगा। (भारतीय * की स्थिति) देने पर हम भारत की बहुत सी चीज़ों की स्थिति के बारे में जान सकते हैं।

5. अनिवार्य शब्द (+)

धन चिह्न (+) के दो प्रयोग होते हैं:

(1) किसी बहुशब्दीय खोज में किन्हीं शब्दों की उपस्थिति अनिवार्य करना।

(2) गूगल अपने आप खोज में पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग कर लेता है लेकिन कभी–कभी हमें बिलकुल उसी शब्द की खोज करनी होती है तब ऐसी स्थिति में पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग रोकने के लिए हम धन चिह्न (+) का प्रयोग करते हैं।

6. OR शब्द

गूगल आपके खोज के सभी शब्दों को ध्यान में रखकर खोज करता है। अगर आप 'कुछ शब्दों में से किसी एक' की तरह की खोज करना चाहते हैं तो हम OR शब्द का प्रयोग करते हैं। OR शब्द का बड़े अक्षरों (कैपिटल लेटर्स) में लिखा जाना अनिवार्य है। उदाहरण के लिए [World Cup 2003 OR 2007, आपको 2003 या 2007 के वर्ल्ड कप के परिणाम दिखायेगा। अगर आप OR शब्द का प्रयोग नहीं करेंगे तो आपको केवल वही परिणाम दिखेंगे जिनमें दोनों वर्ल्ड कप की जानकारी होगी।

इन युक्तियों के साथ आपकी खोज और बेहतर हो यही मेरी शुभकामना है।

★★★

अम्मा

– राहुल जीनवाल
कार्यालय सहायक, मानव संसाधन

चिंन्तनदर्शन जीवन सर्जन
रुह नज़र पर छाई अम्मा
सारे घर का शोर शराबा
सूनापन तनहाई अम्मा

उसने खुद को खोकर मुझमें
एक नया आकार दिलाया
धरती अंबर आग हवा जल
जैसी ही सच्चाई अम्मा

सारे रिश्ते–जेठ दुपहरी
गर्म हवा आशित अंगारे
झरना दरिया झील समंदर
भीनी–सी पुरवाई अम्मा

घर में झीने रिश्ते मैंने
लाखों बार उधड़ते देखे
चुपके चुपके कर देती थी
जाने कब तुरपाई अम्मा

बाबू जी गुजरे, आपस में
सब चीज़ें तकसीम हुई तब
मैं घर में सबसे छोटा था
मेरे हिस्से में आई अम्मा

★★★

क्रेडिट कार्ड क्लोनिंग

– सुजीत कुमार
वरिष्ठ तकनिकी अधिकारी, डिजाईन ग्रुप

क्रेडिट कार्ड क्लोनिंग या "स्किम्मिंग" एक नई तरह की तकनीक है जिसके द्वारा अपराधी प्रवृत्ति के कुछ लोग आपके क्रेडिट कार्ड की जानकारी प्राप्त करके उसे किसी दूसरे कार्ड में कॉपी कर देते हैं तथा दूसरे कार्ड को क्रेडिट कार्ड की तरह इस्तेमाल करते हैं ।

हमारे क्रेडिट कार्ड में एक चुम्बकीय पट्टी होती है जिसमें कार्ड का नंबर, कार्ड मालिक का नाम और कार्ड की वैद्यता आदि रहती है। कार्ड क्लोनिंग करने के लिए एक विशेष प्रकार की मशीन का इस्तेमाल होता है। इस मशीन से कार्ड की चुम्बकीय पट्टी में जो भी जानकारी रहती है उसे मशीन पढ़कर अपने पास रख लेती है। मशीन से चुराई गई कार्ड की जानकरी को किसी दूसरे कार्ड जिसकी वैद्यता ख़त्म हो या फिर नए खाली कार्ड में आसानी से उसी मशीन के द्वारा कॉपी कर दिया जाता है और इस तरह आपके कार्ड को क्लोन करके इसका दुरूपयोग किया जाता है। कार्ड क्लोनिंग करने के लिए आपका कार्ड होटल के बैरे, दुकान के सहायक या फिर कुरियर वाले द्वारा आपसे आपका भुगतान करने के लिए लिया जाता है और चन्द ही मिनटों में मशीन द्वारा क्लोन कर लिया जाता है।

कार्ड क्लोनिंग से बचावः

1. कार्ड क्लोनिंग से बचने के लिए स्मार्ट कार्ड का इस्तेमाल हो सकता है। स्मार्ट कार्ड में एक विशेष प्रकार का माइक्रो प्रोसेस्सर चिप लगा होता है जिसके कारण आपके कार्ड की चुम्बकीय पट्टी में जो भी जानकारी होती है वह encrypted रहती है और किसी दूसरे कार्ड में यह encrypted जानकारी किसी काम की नहीं रहती है।

2. कार्ड इस्तेमाल के समय पिन नंबर का भी इस्तेमाल जरूरी होना चाहिए। पिन इस्तेमाल से यह सुनिश्चित हो सकता है की आप ही कार्ड के वास्तविक उपभोक्ता हैं। हमें अपने कार्ड का पिन किसी को नहीं बताना चाहिए और समय–समय पर पिन नंबर बदलते रहना चाहिए।

3. बैंकों को चाहिए की वे अपने क्रेडिट कार्ड धारक ग्राहकों के कार्ड द्वारा खर्च करने के तरीके का रख रखाव एक INTELLIGENT सिस्टम से करें। बैंक द्वारा ऐसा सिस्टम इस्तेमाल करने से ग्राहक को संपर्क करके उसे सचेत कर दिया जाता है की उसके क्रेडिट कार्ड से कुछ ऐसा खर्चा किया जा रहा है जोकि उसके खर्च करने के तरीके से मेल नहीं करता है। अगर ग्राहक यह खर्च नहीं कर रहा है तो वह बैंक को उसे रोकने के लिए निर्देश दे सकता है।

4. क्रेडिट कार्ड के द्वारा ऑनलाइन खरीददारी करते समय ग्राहक से verification code और पासवर्ड का उपयोग जरूरी कर देना चाहिए। सही पासवर्ड कार्ड के असली मालिक के पास ही रहता है और यह उसी की जिम्मेदारी बनती है की वह इसे किसी को न बताये और समय–समय पर पासवर्ड को बदलते रहें। ऊदाहरण के लिए 'Verified by Visa' और 'Master Card'

1- SecureCode' ऑनलाइन खरीददारी के समय हमेशा आपसे पासवर्ड और verification code मांगते हैं।

2. इसके अलावा, हमें भुगतान करते समय भी सतर्कता रखनी चाहिए और कार्ड को अपने सामने ही स्वैप करवाना चाहिए और मशीन द्वारा प्रदान की कई रसीद का ध्यानपूर्वक निरिक्षण करना चाहिये।

क्रेडिट कार्ड क्लोनिंग या 'स्किम्मिंग' का शिकार होने की दशा में क्या करना चाहिए

1. ग्राहक को तुरंत ही फ़ोन द्वारा अपने उस बैंक को सूचित कर देना चाहिए जिस बैंक ने वह क्रेडिट कार्ड जारी किया हो और अपने क्रेडिट कार्ड क्लोनिंग की घटना को लिखित में भी बैंक को दे देना चाहिए। ऐसा करने से हो सकता है की बैंक आपको कार्ड के खर्च के भुगतान के लिए जो आपने न किया हो, कोई अतिरिक्त शुल्क न लगाए।

2. क्रेडिट कार्ड क्लोनिंग की घटना की सूचना पुलिस को भी देनी चाहिए ताकि वे तहकीकात करके अपराधियों को पकड़ने में सहायता करें और ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

***

कहीं से भी प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिया जाना चाहिए (नियम–5)।

दिलचस्प तथ्य

– शाहिदा शर्मा
कनिष्ठ कार्यकारी, मानव संसाधन

1. आँख की पुतली 45 प्रतिशत फैलती है जब व्यक्ति कुछ मनभावन देखता है।
2. हंसना तनाव हार्मोन के स्तर को कम करता हैं और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है।
3. शहद को पचाना आसान है क्योंकि यह पहले से ही एक मधुमक्खी द्वारा पच गया होता है।
4. आपका बायां फेफड़ा, दायें फेफड़ें की तुलना में छोटा होता है, वह दिल के लिए जगह देता है।
5. गूगल वास्तव में एक लाख शून्य के साथ संख्या के लिए आम नाम है।
6. मानव बाल और नाखून मृत्यु के बाद भी बढ़ते हैं।
7. सभी घड़ी विज्ञापनों में घड़ी पर प्रदर्शित समय 10:10 होता है क्योंकि तब घड़ी की बाहें ब्रांड को दिखाती हैं और मुस्कुराहट का चिह्न बनाती हैं।
8. केवल दो जानवर अपने सिर के पीछे देख सकते हैं वह है: खरगोश और तोता।
9. औसतन एक व्यक्ति एक दिन में 13 बार हंसता है।
10. बुद्धिमान लोगों के बालों में अधिक जस्ता और तांबा होता है।

★★★

हिन्दी भारत की सामाजिक संस्कृति की वाहिका है।

हिन्दी स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा रही है।

वायरलेस विद्युत संचरण प्रणाली - अगली पीढ़ी की संचरण प्रणाली

–प्रदीप नंदन
स्कूल ऑफ इलेक्ट्रोनिक्स

प्रस्तावना

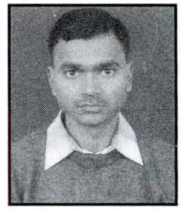

आज हम समय–समय पर सबसे उन्नत बेतार (वायरलेस) उपकरणों को बना रहे हैं, और उनको रिचार्ज करने के लिए एक शक्ति कॉर्ड (Power Cord) का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन भविष्य में हमारे सभी बेतार (वायरलेस) उपकरण जैसे कि फोन, ब्ल्युटुथ हैंडसेट, दूरस्थ नियंत्रण (रिमोट कंट्रोल) इत्यादि और दूसरे उपकरण बिना किसी शक्ति कॉर्ड (Power Cord) के ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं, यहां तक कि हमारा प्रकाश बल्व भी बेतार (वायरलेस) के द्वारा ऊर्जा प्राप्त करेगा।

अपना लैपटोप, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन और भी इस किस्म के उपकरणों को वैसे ही सुविधाजनक तरीके से रिचार्ज कर सकते हैं जैसेकि आज बेतार (वायरलेस) से हम इंटरनेट चलाते हैं।

विद्युत ऊर्जा का प्रवाह एक स्रोत से दूसरी जगह बिना किसी भौतिक संपर्क (Physical Connection) के होता है, उसे हम बेतार ऊर्जा स्थानान्तरण या बेतार बिजली कहते हैं।

वर्तमान विद्युत उत्पन प्रणाली में हम आधे से ज्यादा संसाधन बर्बाद कर देते हैं। विशेषतः बिजली के संचरण और वितरण में होने वाला नुकसान वर्तमान बिजली तकनीकी का मुख्य मुद्दा है। बिजली उत्पादक संयंत्र से उपभोक्ता तक बिजली पहुंचाने में अधिक ऊर्जा बर्बाद होती है। उत्पादित ऊर्जा का 26–30 प्रतिशत नुकसान विद्युत वितरण के दौरान उपयोग में लाये जाने वाले प्रतिरोधी तार की वजह से होता है। इस नुकसान के कारण 70-74 प्रतिशत ऊर्जा ही उपलब्ध होती है। विश्व संसाधन संस्थान (World Resource Institute - WRI) के अनुसार भारतीय विद्युत ग्रीड में विश्व में सबसे ज्यादा संचरण और वितरण द्वारा नुकसान होता है, जो बहुत ज्यादा है। बहुत सारी भारत सरकार की संस्थाएं भी इस आंकड़े को 30%, 40% और 40% से भी ज्यादा बताती है। वर्तमान समय में दृश्य बदल गया है, प्रत्येक क्षेत्र में जबरदस्त विकास हो रहा है। यदि हम उसी गति से बिजली तकनीकी का विकास नहीं करते हैं तो विद्युत क्षेत्र के विकास में कमी का सामना करना पड़ सकता है। विद्युत संचरित और वितरित करने के लिए हमें वैकल्पिक अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के बारे में सोचना है। विद्युत का संचरण बिना तार के एक उत्कृष्ट विकल्प हो सकता है।

उपलब्ध तकनीक

निकोल टेसला (Nicole Tesla) ने सन् 1800 ई. के अंत में तथा सन् 1900 के शुरूआत में वायरलेस विद्युत संचारण के सिद्धांत का प्रस्ताव रखा। उनका बेतार (वायरलेस) विद्युत सुझाव "विद्युत ऊर्जा का तारों के

बिना संचरण" (The transmission of electrical energy without wires) के रूप में प्रमाणित हुआ। टेसला ने विश्व कोलंबियन प्रदर्शनी शिकागो में विद्युत संचारण के लिए बिना तार का उपयोग कर निर्वात बल्व की रोशनी को प्रदर्शित किया। टेसला का काम प्रभावशाली था, लेकिन इसे अभी तक वायरलेस विद्युत संचारण के लिए व्यावहारिक तरीके में व्यापक स्तर पर उपयोग नहीं किया गया।

बेतार (वायरलेस) विद्युत संचरण के प्रकार

1. कम दूरी – उपकरण लगभग ऊर्जा स्रोत के संपर्क में होता है।
2. मध्यम दूरी – दूरी कुछ मीटर तक होती है।
3. लम्बी दूरी – दूरी किलो मीटर में होती है।

बेतार (वायरलेस) विद्युत संचरण की कार्यप्रणाली

बेतार विद्युत संचरण के लिए सबसे आमरूप प्रत्यक्ष प्रेरण (Direct induction) का उपयोग किया जाता है, जिसके बाद गुंजायमान चुम्बकीय प्रेरण (Resonate magnetic induction) प्रणाली का उपयोग होता है।

1- दायरे के पास की विधि (Near field method)/गैर–विकिरण विधि (Non Radiative method)।
2- व्यापक क्षेत्र के लिए विधि (Far field method) / विकिरण विधि (Radiative method) A

1. दायरे के पास की विधि

(क) प्रेरक युग्मन (Inductive coupling)
(ख) गुंजायमान प्रेरक युग्मन (Resonant inductive coupling)

क. प्रेरक युग्मन

यह फॅरेडे के विद्युत चुम्बकीय प्रेरण सिद्धांत पर आधारित है। इसके लिए हमें एक शक्ति स्रोत (Power Source) और प्रसारण एन्टेना चाहिए और साथ ही साथ उपार्जन एन्टेना (Receiving antenna) चाहिए जिसे हम उपकरण से जोड़ते हैं। शक्ति स्रोत (Power source) एन्टीना को उच्च शक्ति सिगनल द्वारा वितरित करता है, इसके फलस्वरूप इसे एन्टेना के चारों ओर एक विद्युत स्थैतिक क्षेत्र बनेगा, जो सिगनल के परिवर्तन के साथ बदलता है। यह विद्युत चुम्बकीय तरंगे पैदा करेगा जो एन्टेना से बाहर निकलकर हवा के माध्यम से यात्रा

करेंगी। उपार्जन एन्टेना (Receiving antenna) इन तरंगों के रास्ते में होता है और तरंगे इसे पार करती है तो वह विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र की लपेट में आ जाता है। उपार्जन एन्टेना (Receiving antenna) जितनी ऊर्जा ग्रहण करेगा उसी अनुपात में इस एन्टेना में सिगनल उत्पन्न होगा। इस सिगनल के कारण धारा प्रवाह (Current flow) का निर्माण होकर उपकरण को शक्ति प्रदान करता है।

ख. गुंजायमान प्रेरक युग्मन – यह गैर विकिरण एक प्रभावशाली तरीका है। यह चुम्बकीय प्रेरक के समान सिद्धांत का उपयोग करता है। यह प्रेरक युग्मन से ज्यादा दूरी तक प्रभाव रखता है।

प्रतिध्वनि – जब निश्चित आवृत्ति की ऊर्जा के कारण किसी वस्तु में कम्पन होता है, तो उसे प्रतिध्वनि कहते हैं।

गुंजायमान प्रेरक युग्मन विद्युत ऊर्जा के क्षेत्र के नजदीकी बेतार (वायरलेस) संचरण विधि है, जिसमें दो कुण्डली समान आवृत्ति पर गूंजती है। जो उपकरण ऐसा करते हैं, उसको हम प्रतिध्वनि परिवर्तक (Resonance transformers) कहते हैं। प्रतिध्वनि कुण्डली (Coil ring) को दोलन धारा (Oscillating current) बनाकर हस्तांतरित करता है और चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न करता है। क्योंकि कुण्डली काफी गुंजायमान (Highly resonant) होती है, जिसके कारण कुण्डली के अन्दर रखी ऊर्जा अपेक्षाकृत धीरे–धीरे चक्रों में खत्म हो जाती है, लेकिन यदि कोई दूसरी कुण्डली इसके नजदीक लायी जाती है तो, ऊर्जा खोने से पहले अधिक से अधिक ऊर्जा ले लेती है, चाहे यह कुछ दूरी पर हीं क्यों न हो। कभी–कभी हम इसे क्षणभंगूर तरंग नाम से बुलाते हैं। प्रतिध्वनि परिवर्तक का उपयोग सी.सी.एफ.एल. अंतरवर्तक (cold-cathode fluorescent lamp inverter) में होता है।

दायरे के पास विधि का फायदा

i) तारों की पेचीदा जाल से मुक्ति
ii) तारों के नहीं होने से लागत में कमी
iii) रिसीवर (Receiver) को ऊर्जा तभी मिलती है जब इसको उपयोग में लाते है।
iv) ऊर्जा की क्षति कम होती है।
v) ऊर्जा साफ और प्रदूषण रहित होती है।
vi) बिजली के झटके की कम सम्भावना होती है।

नुकसान

I) प्रारंभिक लागत ज्यादा होती है।
ii) धारा का उपयोग सीमित होता है।
iii) ऊर्जा के प्रभावशाली प्रवाह के लिए प्रेषक और प्राप्तकर्त्ता दोनों की प्रतिध्वनि आवृत्ति समान होनी चाहिए।

iv) प्रेषक और प्राप्तकर्त्ता दोनों का परिमाप भी समान होना चाहिए।

2. क्षेत्र से दूर विधि

यह मुख्य रूप से अंतरिक्ष आधारित सौर (Solar) फार्म के लिए प्रस्तावित है।

उपयोग में लाई जाने वाली तकनीक –

i) सूक्ष्मतरंग ऊर्जा किरण (Microwave power beaming)
ii) लेजर ऊर्जा किरण (Laser power beaming)

सूक्ष्मतरंग ऊर्जा किरण – बेतार (वायरलेस) ऊर्जा प्रवाह सूक्ष्मतरंगों का उपयोग करके होता है। सूक्ष्मतरंग ऊर्जा प्राप्तकर्त्ता (Receiver) के पास लगे रेटिना (Retina) द्वारा डी.सी. (DC Direct current) बिजली में परिवर्तित होती है।

कार्य क्षेत्र (Scope)

i) मानव रहित वायुवाहन को ऊर्जा देना
ii) अंतरिक्ष प्रणाली
iii) अंतरिक्ष सौर ऊर्जा

नुकसान

i) मानव को क्षति पहुंचाने का खतरा
ii) अति उच्च लागत

लेजर ऊर्जा दीप्तिमान

- ऊर्जा का बेतार (वायरलेस) प्रवाह लेजर किरणों का उपयोग करके होता है।
- ऊर्जा प्रकाशिक नालिका (Optical Fiber) या हवा (Free Space Opties) के द्वारा संचारित की जा सकती है।
- यह अभी खोज और विकास (Research and Development) की स्थिति में है।

निष्कर्ष

तारों के बिना ऊर्जा का प्रवाह केवल एक सिद्धांत या महज एक संभावना नहीं है बल्कि यह अब एक वास्तविकता बनती जा रही है। विद्युत ऊर्जा को किसी भी स्थलीय दूरी में प्रेषित किया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने कई टिप्पणियों, प्रयोगों और माप को गुणात्मक और मात्रात्मक द्वारा सिद्ध किया है। डॉ. एन. टेसला इस अविष्कार के अग्रणी हैं। बिजली के बेतार संचारण, उच्च संचारण अखंडता और कम हानि के साथ (90–97 प्रतिशत प्रभावशाली) पद्धति से किसी भी दुनिया में प्रेषित किया जा सकता है, तथा एक अक्षम, महंगा केबल टावर उपकेन्द्र (Sub Station) ग्रीड समाप्त करने में मदद कर सकता है। इस प्रणाली के द्वारा उपभोक्ता को कम से कम लागत पर बिजली मिलेगी। यह मानव समाज के लिए जबरदस्त आर्थिक लाभ देंगे।

★★★

हिन्दी एक जीवंत भाषा है। इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है।
के. आर. नारायणन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति

भाषा के जरिए ही हम एक आदर्श समाज की कल्पना कर सकते हैं।
डॉ. मनमोहन सिंह, भारत के प्रधानमंत्री

अच्छा लगा

– गरिमा गोत्रा
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

आज धरती पर झुका आकाश तो अच्छा लगा,
सिर किए ऊंचा खड़ी है घास तो अच्छा लगा।

आज फिर लौटा सलामत राम कोई अवध में,
हो गया पूरा कड़ा वनवास तो अच्छा लगा।

था पढ़ाया मांज कर बरतन घरों में रात–दिन,
हो गया बुढ़िया का बेटा पास तो अच्छा लगा।

लोग यों तो रोज ही आते रहे, जाते रहे,
आज, लेकिन आप आए पास तो अच्छा लगा।

रात कितनी भी घनी हो, सुवह आएगी जरूर,
लौट आया आपका विश्वास तो अच्छा लगा।

आ गया हूँ बाद मुद्दत के शहर से गांव में,
आज देखा चांदनी का ह्रास तो अच्छा लगा।

दोस्तों की वाह–वाह तो मिलती ही रहती है सदा,
आज दुश्मन ने कहा शाबाश तो अच्छा लगा। ...

★★★

आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे।
गुरूदेव रवींद्रनाथ टेगोर

सात अनोखे सुझाव (टिप्स) आपके पीसी के लिए

– अमित कुमार
वरिष्ठ अभियन्ता– II, डेवलपमेंट ग्रुप

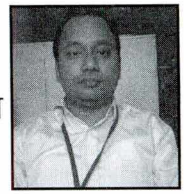

1. कैमस्टूडियो – स्क्रीन एक्शन रिकॉर्डिंग

इस सॉफ्टवेयर से स्क्रीन पर चल रहे एक्शन को रिकार्ड करके उसका विडियो बनाया जा सकता है। इसके लिए बस कैमस्टूडियो स्टार्ट करके रिकार्ड पर क्लिक बनाना होगा। रिकार्डिंग पूरी होने पर हार्डक्वालिटी एवीआई वीडियो फाइल मिलेगी। इसे www.constudio.org से डाउनलोड किया जा सकता है।

2. क्रासलूप – रिमोट हेल्प

क्रासलूप के जरिए व पीसी को इंटरनेट के जरिए कनेक्ट किया जा सकता है। इसमें एक पी.सी. के जरिए दूसरे पीसी का कंट्रोल ले सकते हैं। इसमें वीएनसी क्लाइंट या आडियो एड्रेस का कोई झमेला नहीं होता। इसमें कनेक्शन सुरक्षित होता है और हर बार स्टार्ट होने पर यह नया पासवर्ड जनरेट करता है। इसे www.crossloop.com से डाउनलोड किया जा सकता है।

3. डेक्सटाप – डेक्सटाप वर्चुअलाइजेशन

यह डेस्कटाप को वर्चुअल बनाता है। इससे एक ही वक्त में एक से चार अलग–अलग डेस्कटाप का काम किया जाता है। हर एक अलग कम्प्यूटर की तरह काम करता है। सबमें अलग–अलग विंडों और अलग–अलग प्रोग्राम चला सकते हैं। की–बोर्ड शार्टकट से स्विचिंग कर सकते हैं। छोटे स्क्रीन वाले लैपटाप/पी.सी. के लिए ये काफी लाभदायक होता है। इसे www.dexpot.do से डाउनलोड किया जा सकता है।

4. रॉकेटडॉक – बोरिंग टास्कबार से छुटकारा

अगर आप रॉक ओएस जैसा स्लिप डाक और लाउंसर चाहते हैं तो उसमें रॉकेटडॉक मदद कर सकता है। यह लाइटवेट है। इसे पूरी तरह से बदला जा सकता है। इससे विंडोज के स्टैंडर्ड टास्कबार को रिप्लेस भी किया जा सकता है। इसे www.rocketdock.com से डाउनलोड किया जा सकता है।

5. रेकूता – डिलीट फाइल को वापस पाना

गलती से हार्ड ड्राइव या डिजिटल कैमरा यहां तक की युएसबी फ्लैश ड्राइव से डिलीट हुए दस्तावेज (File) को इससे रिकवर किया जा सकता है। दरअसल जो फाइल डिलीट की जाती है वह असल में डिलीट न

होकर हिडेन (Hidden) हो जाती है और उतना स्पेस फ्री हो जाता है। उस स्पेस पर ओवरराइट किया जा सकता है। आप रेकूता से ऐसी फाइल को वापस पा सकते हैं। इसे www.piriforn.com/recuvo से डाउनलोड किया जा सकता है।

की पास –मास्टर पासवर्ड

अगर आप पासवर्ड याद रखते–रखते परेशान हों गए हों तो यह आपको काफी राहत दे सकता है। यह ओपन सोर्स पासवर्ड स्टोर है जो हर चीज को हाइडी (Heidi) इनक्रिप्टेड डेटाबेस में सिक्योर रखता है। इसकी मदद से आप पासवर्ड क्रेडिट कार्ड इंको, बैंक आई.डी. वगैरह को डेस्कटॉप में स्टोर कर रख सकते हैं। इसे www.keepass.info से डाउनलोड किया जा सकता है।

7. इरेजर

पुराना कम्प्यूटर या हार्डडिस्क बेचते या किसी को देते वक्त सावधानी बरतनी चाहिए। जिन फाइल को आप डिलिट मान कर चल रहे हैं। उन्हें रेकुता जैसे सॉफ्यवेयर से आसानी से रिकवर किया जा सकता है। लेकिन इरेजर से आप किसी भी फाइल/फोल्डर को हमेशा के लिए डिलीट कर सकते हैं। इसे www.eraser.heidi.ic से प्राप्त किया जा सकता है।

***

अगर हमें हिन्दुस्तान को एक राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है।
महात्मा गांधी

सबको हिन्दी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव विनिमय में सारे भारत को सुविधा होगी।
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

चुटकुले

– पुनीत गुरमुखानी
परचेज एग्जीक्यूटिव, सामग्री प्रबंधन

- एक शराबी की दस्तानः सोच रहा हूँ कि दारू छोड़ दूं पर किसके पास छोड़ूं सभी कभी न कभी पी जाएंगे।
- पिंटु अपनी बीबी को पीट रहा था। उसके भाई ने उससे पूछा तुम इसे पीट क्यों रहे हो। पिंटु– डॉक्टर ने कहा है कि दवाई इसे कूट कर खिलानी है।
- आदमी की प्रार्थना से खुश होकर भगवान बोले मन्नत मांगो। आदमी– मुझे मैरिड से सिंगल बना दो। भगवान– मन्नत मांगो जन्नत नहीं।
- गोरे लाल की पत्नी का रंग काला था एक दिन उसकी बीबी ने ऑरेंज साड़ी पहनकर पूछा मैं कैसी लग रही हूँ। गोरे लाल– जैसे काजल की फैक्टरी में आग लग गई हो।
- भगवान हर एक के घर जाकर प्यार नहीं दे सकता इसलिए मां बनाई। इसी तरह हर एक के घर जाकर भगवान सजा नहीं दे सकता इसलिए पत्नी बनाई।
- लड़का लड़की देखने गया बड़ी देर चुप बैठने के बाद लड़का बोला इंगलिश चलेगी। लड़की शरमाकर बोली अगर सोडा साथ में हो तो देसी भी चलेगी।
- औरत पंडित से– मेरी शादी को 10 साल हो गए मुझे बच्चा नहीं हुआ। पंडित– मैं बद्रीनाथ जाकर तेरे नाम का दिया जलाऊंगा। कुछ वर्षो बाद पंडित जब उस औरत के घर गए तो देखा 10 बच्चे खेल रहे हैं। पंडित ने पूछा– इन बच्चों के पापा कहां हैं। औरत बोली बद्रीनाथ गए हैं दिया बुझाने।
- एक लड़का गर्लफ्रैंड से– मैं तुम्हारी आँखों में पूरी दुनिया देख सकता हूँ। पास से एक आदमी गुजर रहा था बोला जरा देखो तो घंटाघर पर हैलमेट चैकिंग हो रही है क्या?
- आदमी – हे भगवान क्या तेरी लीला है कौकरोच चूहे से डरता है चूहा बिल्ली से बिल्ली कुत्ते से कुत्ता आदमी से आदमी औरत से औरत कौकरोच से।
- पत्नी पति से – तुम मेरी तरफ मुँह करके सोया करो मुझे डर लगता है। पति– वाह रि समझदार औरत और मैं चाहे डर–डर के मर जाऊं।

★★★

वेब 2.0 (Web 2.0)

– चिन्मय गर्ग
तकनीकी अधिकारी, डिजाईन ग्रुप

"वेब 2.0" शब्द सामान्यतः ऐसे वेब प्रोग्रामों/एप्लीकेशन्स के लिए प्रयुक्त होता है जो संबंधित क्रियात्मक जानकारी बांटने, सूचनाओं के आदान प्रदान करने, उपयोगकर्ता को ध्यान में रख कर रचना (डिजाइन) बनाने, और वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) से जोड़ने की सुविधा प्रदान करते हैं। Web 2.0 के उदाहरणों में वेब समुदाय, होस्ट सर्विस,वेब प्रोग्राम,सामाजिक नेटवर्किंग साइट,वीडियो शेयरिंग साइट, विकी, ब्लॉग, तथा मैशप (दो या अधिक स्रोतों से जानकारी एकत्रित करके बनाया गया वेब पेज) व फोक्सोनोमी (टैगिंग) शामिल हैं। एक Web 2.0 साइट अपने उपयोगकर्ताओं को अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ वेबसाइट की सामग्री देखने या बदलने की अनुमति देती है, जबकि नॉन–इंटरएक्टिव वेब साइटों के द्वारा उपयोगकर्ता किसी जानकारी को केवल उतना ही देख सकते हैं जितनी जानकारी उन्हें देखने के लिए उपलब्ध कराई गई है.

Web 2.0 वेबसाइटें उपयोगकर्ताओं को जानकारी प्राप्त करने के अलावा भी बहुत कुछ करने की अनुमति देती हैं। Web 1.0 की पारस्पारिक क्रियात्मक सुविधाओं द्वारा निर्माण के लिए "नेटवर्क एक मंच" कम्प्यूटिंग उपलब्ध कराने के अलावा, उपयोगकर्ताओं को पूर्ण रूप से एक ब्राउज़र के माध्यम से सॉफ्टवेयर चलाने की अनुमति दे सकता है। उपयोगकर्ता एक Web 2.0 साइट पर डेटा के मालिक हो सकते हैं तथा डेटा पर नियंत्रण कर सकते हैं। इन साइटों में 'भागीदारी द्वारा निर्मिती की व्यवस्था हो सकती है जो उपयोगकर्ता को स्वयं द्वारा प्रयुक्त किये जा रहे प्रोग्राम की उपयोगिता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती है।

Web 2.0 की विशेषताएं : उपयोगकर्ताओं का गहन अनुभव, उपयोगकर्ता की भागीदारी, गतिशील सामग्री, मेटा डेटा, वेब मानक और मापने की योग्यता। अतिरिक्त विशेषता भी है जैसे कि खुलापन, स्वतंत्रता, और उपयोगकर्ताओं की भागीदारी के माध्यम से सामूहिक बुद्धिमत्ता।

यह कैसे काम करता है

क्लाइंट साइड/वेब ब्राउज़र प्रौद्योगिकियां जो Web 2.0 में प्रयुक्त होती हैं– A synchronous JavaScript और XML (Ajax), Adobe Flash, और JavaScript /Ajax Fremwork जैसे कि Yahoo! UI Library, Dojo Toolkit, MooTools, और jQuery. Ajax प्रोग्रामिंग वेब सर्वर से एक पूरा पृष्ठ पुनः लोड किए बिना, नया डेटा अपलोड और डाउनलोड करने के लिए जावा स्क्रिप्ट का प्रयोग करती है। उपयोगकर्ता को पेज पर काम करने की अनुमति देने के लिए सर्वर से होने वाले संचार जैसे कि डेटा अनुरोधों को पेज पर वापिस आ रहे डेटा से अलग किया जाता है (बिना किसी क्रम के/अन्यथा, उपयोगकर्ता को उस पेज पर कुछ भी करने से पहले नियमित रूप से डेटा के वापसी की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, जिस प्रकार उपयोगकर्ता एक

पेज को पुनः लोड करने के लिए प्रतीक्षा करता है। इससे साइट का समग्र प्रदर्शन भी बढ़ता है, चूंकि बिना किसी बाधा के तेज़ी से अनुरोध भेजे जा सकते हैं और ग्राहक को सामग्री भेजी जा सकती है। Ajax अनुरोध द्वारा लिया गया डेटा आमतौर पर XML या JSON (जावा स्क्रिप्ट ऑब्जेक्ट नोटेशन), दो व्यापक रूप से प्रयुक्त होने वाले संरचित डेटा स्वरूप हैं, के रूप में प्रारूपित होता है। चूंकि जावा स्क्रिप्ट इन दोनों प्रारूपों को आसानी से समझ सकती है, एक प्रोग्रामर आसानी से उनका उपयोग अपने वेब प्रोग्राम में संरचित डेटा निर्गमन के लिए कर सकता हैं। जब यह डेटा Ajax द्वारा प्राप्त किया जाता है, तो जावा स्क्रिप्ट प्रोग्राम डाक्युमेंट ऑब्जेक्ट मॉडल (DOM) का प्रयोग करके नये डेटा के आधार पर वेब पेज को स्वचालित ढंग से अपडेट कर देता है, जिससे एक तीव्र तथा पारस्पारिक क्रियात्मक प्रयोग का अनुभव मिलता है। संक्षेप में, इन तकनीकों का प्रयोग करके वेब डिज़ाइनर अपने पन्नों को डेस्कटॉप प्रोग्रामों के रूप में कार्य करने के लिए बना सकता हैं। उदाहरण के लिए, Google Docs इस तकनीक का उपयोग वेब आधारित शब्द संसाधक बनाने के लिए करता है.

Adobe Flash अक्सर Web 2.0 में प्रयुक्त होने वाली एक और तकनीक है। व्यापक रूप से उपलब्ध प्लगइन (Plug-in) W3C (वर्ल्डवाइड वेब कंसोर्टियम, वेब मानकों और प्रोटोकॉल पर नज़र रखने वाली कार्यकारिणी) मानकों के अधीन नहीं हैं। फ्लैश से ऐसा बहुत कुछ किया जा सकता है जो वर्तमान में HTML में संभव नहीं है। फ्लैश की कई क्षमताओं में से Web 2.0 में सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाली इसकी दृश्य श्रव्य फ़ाइलों को चलाने की क्षमता है। इससे Web 2.0 साइटें जैसे कि YouTube का निर्माण हो सका है जिसमें वीडियो मीडिया को सामान्य HTML के साथ जोड़ दिया गया है। Flash और Ajax के अतिरिक्त, JavaScript / Ajax Frameworks अभी हाल ही में Web 2.0 साइटें बनाने का एक बहुत लोकप्रिय साधन बन गया है। अपने मूल में, ये फ्रेमवर्क JavaScript, Ajax, और DOM से अलग कोई प्रौद्योगिकी का प्रयोग नहीं करते। फ्रेमवर्क वेब ब्राउज़र की विसंगतियों को हटा देते हैं और डेवलपर्स के लिए उपलब्ध कार्य क्षमता का विस्तार करते हैं। इनमे से कई बदलाव करने योग्य, तथा पूर्व निर्मित 'widgets' के साथ आते हैं जो सामान्य कार्यों को पूरा करते है। जैसे कि कैलेंडर से एक तिथि लेना, डेटा चार्ट प्रदर्शित करना या टैब युक्त पैनल इत्यादि को पूरा करते हैं। सर्वर साइड पर Web 2.0, वेब 1.0 की कई समान तकनीकों का प्रयोग करता है। जैसे कि PHP, Ruby, Cold Fusion, Perl, Python और ASP भाषाओँ का प्रयोग डेवलपर्स द्वारा फाइलों और डेटाबेस से जानकारी का उपयोग स्वचालित रूप से आउटपुट डेटा के लिए किया जाता है। Web 2.0 द्वारा डेटा को फॉर्मेट करने के ढंग में बदलाव शुरू हुआ है। इंटरनेट के प्रारंभिक दिनों में, अलग–अलग वेबसाइटों द्वारा परस्पर सम्पर्क करने और डेटा शेयर करने की आवश्यकता बहुत कम थी। लेकिन नई "वेब भागीदारी" में, साइटों के बीच डेटा शेयर करना आवश्यमभावी बन गया है। अपना डेटा अन्य साइटों के साथ शेयर करने के लिए एक वेबसाइट को मशीन द्वारा पढने योग्य फॉर्मेट, जैसे कि XML, RSS और JSON, उत्पन्न करने में सक्षम होना चाहिए। जब एक साइट का डेटा इन स्वरूपों में से किसी एक में उपलब्ध होता है, दूसरी वेबसाईट दोनों को जोड़कर उस साईट के एक हिस्से की कार्य क्षमता को अपने में एकीकृत कर सकती है, जब यह डिज़ाइन पैटर्न लागू किया जाता है, तो यह अंततः उस डेटा की ओर ले जाता है जो ढूँढने में आसान है और अच्छी तरह से वर्गीकृत है, जो Web 2.0 क्रियान्वयन की सच्ची पहचान है।

★★★

आभासीकरण (वर्चुअलाइजेशन)

– नितिन कुमार वार्ष्णेय
परियोजना अभियंता, डेवलपमेंट ग्रुप

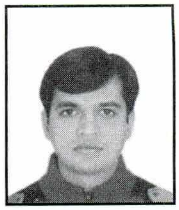

मेरे पास एक मशीन है जो कि विंडोस पर चलती है! मैंने उस पर अपनी एप्लीकेशन डाली हुई है। डेटाबेस भी मेरा विंडोस पर ही है। अचानक मुझे लिनिक्स के ऑपरेटिंग सिस्टम की जरूरत पड़ी। अब मेरे पास मशीन एक है लेकिन मुझे दो ऑपरेटिंग सिस्टम चाहिए। अब मेरे पास ऐसा करने के दो रास्ते थे।

(1.) बूटिंग के टाइम पर मैं ऑपरेटिंग सिस्टम को पसंद करूँ कि कौन से ऑपरेटिंग सिस्टम से मशीन को बूट करूँ (डुय्‌लबूट)।

(2.) इसी विंडोस की मशीन पर कोई आभासी मशीन बना लूं (वर्चुअलाइजेशन) पहली प्रकिया में मैं एक बार में एक ही ऑपरेटिंग सिस्टम चला पाता था लेकिन दूसरी प्रक्रिया में मैं दोनों ऑपरेटिंग सिस्टम एक साथ चला सकता हूँ।

1. डुय्‌ल बूटः

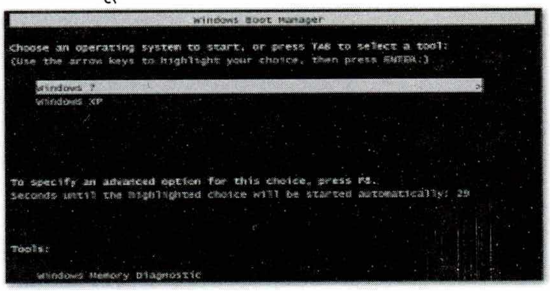

हम कम्प्यूटर की हार्ड डिस्क के कई हिस्से बनाकर यानि कि पार्टीशन करके प्रत्येक में अलग अलग प्रचालन तंत्र स्थापित करते हैं जिसको डुय्‌ल बूट कहा जाता है। यानि कि आप सी–ड्राइव में विंडोज़ और डी–ड्राइव में लिनक्स स्थापित कर सकते हैं। फिर जब कम्प्यूटर को चालू किया जाएगा तब कम्प्यूटर आपसे पूछेगा कि आप कौन सा ऑपरेटिंग सिस्टम चालू करना चाहेंगे। आप जिसे भी चुनेंगे वह चालू हो जाएगा।

डुय्‌ल बूट में होता यह है कि जो भी प्रचालन तंत्र चालू होता है वह कम्प्यूटर के पूरे हार्डवेयर का इस्तेमाल कर पाता है। इसलिए यह कम्प्यूटरी खेल अथवा भारी भरकम प्रोग्रामों को चलाने के लिए उपयुक्त है।

2. वर्चुअलाइजेशन (आभासीकरण):

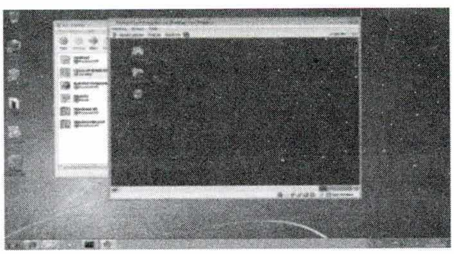

जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि इसमें असली कुछ नही होता है। सब कुछ आभासी होता है। कुछ सॉफ्टवेयर हैं जैसे कि वीएमवेयर, वर्चुअल बॉक्स आदि जिनकी मदद से हम अपने कम्प्यूटर के अंदर अलग अलग आभासी कम्प्यूटरों का निर्माण कर सकते हैं। मसलन यदि हमारे कम्प्यूटर में 4 गीगा बाइट (GB) की रैम लगी हुई है तो 512 मेघा बाइट MB या 1GB या 2GB इत्यादि की रैम एक वर्चुअल मशीन (आभासी कम्प्यूटर) को दी जा सकती है। एक बड़ी फाइल के रूप में वर्चुअल हार्ड–ड्राइव बन जाएगी। फिर इस मशीन को वर्चुअलाइजेशन के सॉफ्टवेयर जैसे वीएमवेयर अथवा वर्चुअल बॉक्स के जरिए चलाया जा सकता है। और उसमें कोई भी ऑपरेटिंग सिस्टम ठीक वैसे ही स्थापित किया जा सकता है जैसे कि किसी असली कम्प्यूटर में किया जाता हो।

आभासीकरण में मुख्य कम्प्यूटर के पूरे हार्डवेयर की ताकत आभासीय मशीन को नही मिलती। अतः यह भारी भरकम कामों के लिए ठीक नही हैं। लेकिन यदि आप किसी नए ऑपरेटिंग सिस्टम को आजमाना चाहते हैं या किसी सॉफ्टवेयर की जांच करना चाहते हैं तो आभासी मशीनों से आपके मुख्य ऑपरेटिंग सिस्टम खतरे से बाहर रहते हैं।

3. मैं आभासीकरण का कैसे इस्तेमाल करता हूँ

चूंकि मैं वेब डिजाइनर एवं डेवेलपर हूं तो मुझे विंडोज़ और लिनक्स सर्वर की आवश्यता थी। विंडोज़ का माहौल लिनक्स की तुलना में एकदम अलग होता है। मसलन विंडोज़ में फाइलों का नाम केस सेंसिटिव नहीं होता है किन्तु लिनक्स में होता है। जब विकसित किए जाने वाले सॉफ्टवेयर एवं वेबसाइटें लिनक्स सर्वर पर ही स्थापित किए जाने हैं तो उनका निर्माण यदि लिनक्स में ही होगा तो अच्छा रहेगा। वहीं दूसरी ओर मुझे फोटोशॉप जैसे सॉफ्टवेयरों की भी आवश्यकता थी जिनपर मैं वेबसाइटों के डिजाइन बनाता हूं। लेकिन ये केवल विंडोज़ पर चलते हैं। अब या तो मैं एक अन्य कम्प्यूटर को स्थाई तौर पर सर्वर बना देता या फिर एक आभासी मशीन पर लिनक्स सर्वर स्थापित कर देता। मैंने वीएमवेयर में एक वर्चुअल मशीन बनाई और उसमें लिनक्स का सर्वर संस्करण स्थापित कर दिया। सालों से उसी पर काम कर रहा हूं। सारे काम अच्छे से हो जाते हैं। विंडोज मेंरा होस्ट ऑपरेटिंग सिस्टम है और लिनक्स सर्वर गेस्ट ऑपरेटिंग सिस्टम।

आभासीकरण (वर्चुअलाइजेशन) का उपयोग करने के लाभ

आप सर्वर की एक क्रम संख्या के कारण हार्डवेयर रखरखाव लागत को कम कर सकते हैं। आप एक हार्डवेयर मंच पर कई ऑपरेटिंग सिस्टम प्रौद्योगिकियों

★★★

शायद ज़िंदगी बदल रही है

– शाहिदा शर्मा
कनिष्ठ कार्यकारी, मानव संसाधन

शायद ज़िंदगी बदल रही है,
जब मैं छोटी थी,
शायद दुनिया बहुत बड़ी हुआ करती थी .....
मुझे याद है मेरे घर से 'स्कूल' तक का वो रास्ता,
क्या–क्या नहीं था वहां,
कुल्फी के ठेले, रबड़ी की दुकान,
बर्फ के गोले, सब कुछ,
अब वहां 'मोबाइल शॉप', 'विडियो पार्लर' है,
फिर भी सब सूना है ....

शायद अब दुनिया सिमट रही है .....
जब मैं छोटी थी,
शायद शामें बहुत लम्बी हुआ करती थी ....
वो 'मिट्टी' से घंटों खेलना,
वो लम्बी 'साइकिल रेस',
वो बचपन के खेल,
वो हर शाम थक के चूर हो जाना,
अब शाम ही नहीं होती,
दिन ढलता है और सीधे रात हो जाती है,

शायद वक्त सिमट रहा है ....
जब मैं छोटी थी,
शायद दोस्ती बहुत गहरी हुआ करती थी,
दिन भर वो हुजूम बनाकर खेलना,
वो दोस्तों के घर का खाना,
वो लड़कपन की बातें,
वो साथ रोना ... अब भी मेरे कई दोस्त हैं,
पर दोस्ती जाने कहां है,
जब भी मिलते हैं बात हो जाती है,
और अपने–अपने रास्ते चल देते हैं,
होली, दीवाली, ईंद, जन्मदिन,
नए साल पर बस एसएमएस (SMS) आ जाते हैं,
शायद अब रिश्ते बदल रहे हैं ....

जब मैं छोटी थी,
तब खेल भी अजीब हुआ करते थे,
छुपन छपाई, लंगड़ी टांग,
पोषम पा, कट केक
अब इंटरनेट से फुर्सत ही नहीं मिलती ....

शायद ज़िंदगी बदल रही है ....
ज़िंदगी का सबसे बड़ा सच यही है .....
की कल की कोई बुनियाद नहीं है
और आने वाला कल सिर्फ़ सपने में ही है ...
अब बच गए इस पल में ...
तमन्नाओं से भरी इस ज़िंदगी में हम सिर्फ भाग रहे हैं ......
कुछ रफ़्तार धीमी करो,
मेरे दोस्त, और इस ज़िंदगी को जियो ....
खूब जियो मेरे दोस्त,
और औरों को भी जीने दो..... ।

★★★

आई टी प्रोजेक्ट प्रबंधन

– नितिन कुमार वार्ष्णेय
परियोजना अभियंता, डेवलपमेंट ग्रुप

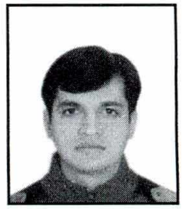

आई टी प्रोजेक्ट को समय-सीमा के भीतर पूरा करने के 10 सुझाव

1. आवश्यकताओं का विस्तार से विश्लेषण करें
2. उपलब्ध संसाधनों का खाका तैयार करें
3. प्रशिक्षण और ज्ञान का स्थानांतरण करें
4. जोखिम की पहचान करें
5. कार्य का अनुमान लगाएं और उसका सही आबंटन करें
6. कार्य को मॉड्यूल में विभाजित करें
7. बहुत सारी बैठकों से बचें, कम और जरूरत के हिसाब से ही बैठकें करें
8. सभी किये गए कार्यों को लिपिबद्ध करें
9. अगर 24X7 कार्य हो रहा हो तो संपर्क का ध्यान रखें
10. मुद्दों को समय के साथ–साथ समाप्त करते जाएँ

परियोजना निर्मिती के दौरान गलतियों से बचने के 10 सुझाव

1. दूसरों की गलतियों से सीखें
2. परियोजना शुरू करने से पहले पूरे शोध करें
3. अपनी काम करने की योजना तैयार रखें
4. मानकों (स्टेंडर्ड) को अपनाएँ और टेम्पलेट का उपयोग करें
5. अन्य लोगों के साथ समन्वय और संवाद रखें
6. पर्याप्त समय दें
7. सिद्धित (प्रूविन) कोड का ही उपयोग करें
8. जांच सूची (चेक लिस्ट) का उपयोग करें
9. परीक्षण करें और ध्यान से अपने काम की समीक्षा करें
10. एक तीसरी पार्टी के साथ फिर से टेस्ट करें

वेबसाइट डवलपमेंट के दौरान गलतियों से बचने के 10 सुझाव

1. वेबसाइट में सर्च बॉक्स लगाएं
2. आँखों पर जोर डालने वाले रंगों का उपयोग न करें

3. अपठनीय फोंट (Font) का उपयोग न करें
4. संगठित सामग्री का ख़ाका तैयार करें
5. अपने उपयोगकर्ता के वेब ब्राउज़र पर नियंत्रण रखें
6. फ्लेश और मल्टीमीडिया का कम से कम उपयोग करें
7. स्क्रीन का रिज़ॉल्यूशन सही रखें (फ्रेंडली रिज़ॉल्यूशन)
8. अनैतिक छवियाँ/एनिमेशन का उपयोग न करें
9. ऐसी वेबसाइट डिजाईन न करें जो अपने ग्राहकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित न कर सके
10. पृष्ठभूमि (बैकग्राउंड) संगीत का उपयोग करने से बचें

परियोजना की समाप्ति के समय पर 10 ध्यान देने योग्य बातें

1. परीक्षण को अंतिम रूप दें
2. उत्पाद या निर्मिती को समायोजित करें
3. प्रशिक्षण को अंतिम रूप दें
4. परियोजना को साइन ऑफ करें
5. कर्ता समूह को समाप्ति पर कार्यमुक्त करें
6. वास्तविक और नियोजित (प्लान) कार्य का विश्लेषण करें
7. दस्तावेजों को सुरक्षित करें
8. जो भी अनुबंध किया है उसे सुनिश्चित करें
9. एक आखरी परियोजना समाप्ति बैठक करें
10. आपने जो परियोजना में कार्य किया है उसका आत्म मूल्यांकन करें

***

हिन्दी केवल राजभाषा नहीं है, बल्कि विश्व भाषा बन रही है।
राजीव गांधी

राष्ट्र के रूप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी।
पं. जवाहर लाल नेहरू

हिन्दी राष्ट्रभाषा

– पूजा शर्मा
कनिष्ठ कार्यकारी, मानव संसाधन

हिन्दी राष्ट्रभाषा,
संसार में इसका मान है।

हिन्दी से हम हिन्दोस्तानी,
हमें हिन्दी पर अभिमान है।

हिन्दी भारत का गौरव,
मातृभूमि की पहचान है।

इसने दिया सम्मान हमें,
जन–जन को इस पर मान है।

करो–करो इसका सत्कार,
इससे हमारी पहचान है।

ले नहीं सकता कोई राष्ट्र में,
इस भाषा का जो स्थान है।

करती हूँ ये जग से आशा,
हिन्दी दिवस मनाते रहें।

गौरव फैले इसका जग में,
हर मन कहे इसका ही गान।

हिन्दी हमें जान से प्यारी,
यह भारत की शान है।

★★★

यूनिकोड क्या है

– अभिषेक वर्मा
तकनीकी अधिकारी, डिजाईन ग्रुप

यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नम्बर प्रदान करता है, चाहे कोई भी प्लैटफॉर्म, प्रोग्राम या भाषा हो।

कम्प्यूटर मूल रूप से नंबरों से संबंध रखते हैं। ये प्रत्येक अक्षर और वर्ण के लिए एक नंबर निर्धारित करके अक्षर और वर्ण संगृहित करते हैं। यूनिकोड का आविष्कार होने से पहले ऐसे नंबर देने के लिए सैंकड़ों विभिन्न संकेत लिपि प्रणालियां थीं। किसी एक संकेत लिपि में पर्याप्त अक्षर नहीं थे: उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ को अकेले ही अपनी सभी भाषाओं के लिए अनेक विभिन्न संकेत लिपियों की जरूरत पड़ती थी। अंग्रेजी जैसी भाषा के लिए भी सभी अक्षरों, विरामचिन्हों और सामान्य प्रयोग के तकनीकी प्रतीकों हेतु एक सी संकेत लिपि पर्याप्त नहीं थी।

ये संकेत लिपि प्रणालियां परस्पर विरोधी भी थीं। इसीलिए दो संकेत लिपियां दो विभिन्न अक्षरों के लिए एक ही नंबर प्रयोग कर सकती थीं अथवा समान अक्षर के लिए विभिन्न नम्बरों का प्रयोग कर सकती थीं। किसी भी कम्प्यूटर (विशेष रूप से सर्वर) को विभिन्न संकेत लिपियां संभालनी पड़ती थी फिर भी, जब दो विभिन्न संकेत लिपियों अथवा प्लैटफॉर्मों के बीच डेटा भेजा जाता था तो उस डेटा के हमेशा खराब होने का जोखिम रहता था।

1. यूनिकोड से यह सब कुछ बदल रहा है

यूनिकोड, प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नंबर प्रदान करता है चाहे कोई भी प्लैटफॉर्म, प्रोग्राम अथवा भाषा हो। यूनिकोड स्टैंडर्ड को ऐपल, एच.पी., आई.बी.एम., जस्ट सिस्टम, माईक्रोसॉफ्ट, औरेकल, सैप, सन् साईबेस, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों ने अपनाया है। यूनिकोड की आवश्यकता आधुनिक मानदंडों, जैसे एक्स.एम.एल.ए जावा, एकमा स्क्रिप्ट (जावा स्क्रिप्ट), एल.डी.ए.पी., कोर्बा 3.0, डब्ल्यू.एम.एल. के लिए होती है और यह आई.एस.ओ. / आई.ई.सी. 10646 को लागू करने का अधिकारिक तरीका है। यह कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजरों और कई अन्य उत्पादों में होता है। यूनिकोड स्टैंडर्ड की उत्पत्ति और इसके सहायक उपकरणों की उपलब्धता, हाल ही के अति महत्वपूर्ण विश्वव्यापी सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी रुझानों में से हैं।

यूनिकोड को ग्राहक–सर्वर अथवा बहु–आयामी उपकरणों और वेबसाइटों में शामिल करने से परंपरागत उपकरणों के प्रयोग की अपेक्षा खर्च में अत्यधिक बचत होती है। यूनिकोड से एक ऐसा अकेला सॉफ्टवेयर उत्पाद अथवा अकेली वेबसाइट मिल जाती है, जिसे री–इंजीनियरिंग के बिना विभिन्न प्लैटफॉर्मों, भाषाओं और देशों में उपयोग किया जा सकता है। इससे डेटा को बिना किसी बाधा के विभिन्न प्रणालियों में से होते हुए ले जाया जा सकता है।

2. यूनिकोड कन्सॉर्शियम

यूनिकोड कन्सॉर्शियम, लाभ न कमाने वाला एक संगठन है जिसकी स्थापना यूनिकोड स्टैंडर्ड (जो आधुनिक

सॉफ्टवेयर उत्पादों और मानकों में पाठ की प्रस्तुति को निर्दिष्ट करता है) का विकास, विस्तार और इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। इस कन्सॉर्शियम के सदस्यों में कम्प्यूटर और सूचना उद्योग के विभिन्न निगम और संगठन शामिल हैं। इस कन्सॉर्शियम का वित्तपोषण पूर्णतः सदस्यों के शुल्क से किया जाता है। यूनिकोड कन्सॉर्शियम में सदस्यता, विश्व में कहीं भी स्थित उन संगठनों और व्यक्तियों के लिए खुली है जो यूनिकोड का समर्थन करते हैं और जो इसके विस्तार और कार्यान्वयन में सहायता करना चाहते हैं।

***

सड़ी गर्मी

– कविन्द्र सिंह बोरा
सहायक, प्रशासन

सड़ी गर्मी, सड़ी गर्मी
हे–बेरहम और बे–धर्मी
कपड़े होते हैं सारे गीले
चाहे पहने हम कितने ढीले।

ताकत नहीं मुझमें इतनी
कि बादल इकट्ठा कर डालूं,
चलता नहीं अपना जोर
वर्षा हो कैसे घनघोर।

पसीने में लथपथ हर चेहरे
नज़र आते हैं वे–रसीले
मैंने सोचा चलूं पहाड़
वहीं ठंडी हवा में जी लें।

चैन वहां भी न पाया,
ठंडी हवा ने मुझे सताया,
लौट वापस मैं दिल्ली आया
पंखे के संग समय बिताया।

***

मेरा भारतीय किसान महान

– संजय कुमार
कार्यालय सहायक, प्रशासन

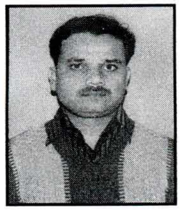

फटे पुराने कपड़ों में है वह रहता
अध ढके तन में है वह दिखता।
त्याग तपस्या कठोर साधना का है महत्व उतना
जितना कि दधीचि की हड्डियों का था।

परोपकार के लिए इंद्र को दधीचि ने दिया दान
युगों से मिली शिक्षा हो गया किसान महान।
वह सर्दी गर्मी का ख्याल किए बिना
वर्षा में भीग–भीग कर फसलें बोता।

ठिठुर ठिठुर कर पाला सहता
फसलों को वह धुएं की चादर ओढ़ाता।
ऐसा अनुशासन न कोई उसे सिखाता।
निष्ठापूर्वक वह फसलों की सेवा करता।

दाने बोए वह चार पैदा करे दस।
दलाल किए आंखे चार बोले मंदी है तौल दे बस।
दुनियां को वह है अन्न खिलाता।
साहूकार की जेब भरवाता।

प्राकृतिक आपदा व सूदखोर हैं उसके दो दुश्मन।
ये लेते हैं जान उसकी हर साल
सावन हो या भादों या हो बसंत बहार।

हर ऋतुओं में वह रखता है
अपनी फसलों को हरियालीदार।
ऐसा है वह महान मेरा भारतीय किसान।

★★★

"माँ, मुझे माफ कर दो"!

– अंजुम अवस्थी
इंजीनियर आई.टी., स्कूल और इलेक्ट्रॉनिक्स

मैं बारहवीं कक्षा का छात्र था। पढ़ने लिखने में सामान्य था, परन्तु पता नहीं क्यों माता–पिता को मुझ से बहुत आशा थी। परीक्षा का समय निकट आ रहा था। स्कूल तथा ट्यूशन सभी जगह पढ़ाई का ज़ोर था। घर पर सभी बात–बात पर कहते कि मेहनत करो, 90 प्रतिशत से कम आए तो हमारी नाक कट जाएगी। मन पर दवाब था परन्तु मैं फिर भी आशावादी था।

एक–एक कर के सभी विषयों की परीक्षा समाप्त हो गई, अन्तिम परीक्षा गणित की थी जो मेरे लिए एवरेस्ट की चोटी चढ़ने से कम न थी। परीक्षा में बैठते ही रौंगटे खड़े हो गए। तरह–तरह के फारमूलों का दिमाग में अजीब सा युद्ध शुरू हो गया। जैसे–तैसे परीक्षा समाप्त हो गई। परीक्षा के बाद ऐसा लगा मानो किसी ने पंख लगा दिए हों। समय किस प्रकार बीत गया पता ही नहीं चला।

एक दिन रोज की तरह पिता जी दफ़्तर जाने के लिए तैयार हो रहे थे कि तभी मेहता जी आए तथा उन्होंने बताया कि आज रात तक किसी समय परिणाम की घोषणा हो सकती है। मेहता जी पिता जी के पुराने मित्र थे तथा उनका बेटा मेरी ही कक्षा में पढ़ता था जो कि हमेशा अब्बल रहता था। यह सुनते ही मन में अजीब सी बेचैनी होने लगी। घर में तो सभी परिणाम के लिए उत्साहित थे परन्तु मैं बहुत डरा हुआ था।

मन में उथल–पुथल मची थी अजीब तरह के ख्याल आ रहे थे। मैं बिस्तर पर लेटा इन्तजार कर रहा था कि सोचते– सोचते कब आंख लग गई पता ही नहीं चला। तभी मोबाइल पर घण्टी बजी तो देखा कि मेहता जी के पुत्र का मैसेज था कि परिणाम की घोषणा हो गई है तथा उसके 97 प्रतिशत अंक आए हैं। मैं उठ खड़ा हुआ तथा कम्प्यूटर पर परिणाम देखने लगा। नाम तथा रोल नम्बर डालते ही परिणाम सामने आ गया। मैं सुन्न हो गया, पांव के नीचे जमीन निकल गई। मैं गणित में फेल हो गया था।

माता–पिता के ताने, रिश्तेदारों की तरह–तरह की बातें कानों में गूंजने लगी। एक पल में लगा कि यह जीवन तो व्यर्थ हो गया तथा अब जीने का कोई लाभ नहीं है। टेबल से पेपर कटर निकाला तथा उसी एक पल में बिना सोचे समझे मैंने कलाई काट ली। मैं दर्द से कराह उठा परन्तु कुछ ही पल बाद लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो, न दर्द, न खून तथा न ही कोई जख्म।

मैं कुर्सी से उठा तो देखा कि शरीर तो पीछे ही रह गया। हां, मैं अपना शरीर त्याग चुका था। अपने मृत शरीर को देखकर लगा कि हाय यह मैंने यह क्या कर दिया। भूल सुधारने के लिए जीवन मुझे कई मौके देता पर मैंने तो इस जीवन का ही अन्त कर दिया।

जो माता–पिता मेरे फेल होने का गम नहीं सह पाते, वह मेरी मृत्यु का दर्द कैसे सहेंगे। मैंने अपने ही नहीं बल्कि अपने माता–पिता के भी जीवन का अन्त कर दिया है। मैं हाथ जोड़ भगवान से प्रार्थना करने लगा कि बस एक मौका दे दो, परन्तु जीवन दुबारा नहीं मिलता।

तभी कमरे का दरवाजा खुलने की आवाज आई, मां चाय लेकर अन्दर आ रही थी। जमीन पर गिरा खून, कम्प्यूटर पर परिणाम तथा मेरी व्यथा देख कर उन्हें समझने में समय न लगा कि क्या हुआ है। वह चिल्ला–चिल्ला कर पिता जी को बुलाने लगी। मुझे हिला–हिला कर जगाने लगी। "बेटा उठ जा, मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे बस मेरा बेटा चाहिए।" तभी पिता जी आए, तथा सब देखते ही अचानक बिस्तर पर सुन्न बैठ गए। मैं रोता गिड़गिड़ाता दोनों के पैरों में गिर गया तथा कहने लगा, "माँ, मुझे माफ कर दो। माँ, मुझे माफ कर दो।" परन्तु कोई मेरी आवाज सुन नहीं पा रहा था।

तभी किसी ने मेरे सर पर हाथ सहलाया, आंख खोल कर देखा तो माँ थी। मैं झट से उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, "माँ, मुझे माफ कर दो!" माँ, मुस्कुरा कर कहने लगी, "क्यों, अब क्या किया है, तूने" मैं हैरान था, माँ मुझे सुन पा रही थी, मैं जिन्दा था। मैं झट से माँ के गले लग गया तथा बोला कि, "मैंने बहुत बुरा सपना देखा।" तभी पिता जी आए और बोले कि बेटा तुमसे यह उम्मीद न थी, केवल 80 प्रतिशत नम्बर। माँ ने भी मुझे पीछे हटाया और बोली, "तुमने ने तो हमारी नाक ही कटा दी" दोनो मुझसे नाराज थे।

परन्तु मैं खुश था, क्योंकि उस एक सपने के द्वारा मुझे मेरे जीवन का मुल्य समझ आ गया था। जीवन कठिनाइयों से लड़ने का नाम है न कि हार कर कुछ ऐसा कर बैठने का जिसका पश्चाताप चाह कर भी नहीं किया जा सकता।

★★★

हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।
कमलापति त्रिपाठी

हिन्दी की गरिमा

– राम बिलास चौधरी
कनिष्ठ सहायक, सामग्री प्रबंधन

जन–जन के मानस में बस गई है हिन्दी,
'तुलसी' के मानस का विस्तार है हिन्दी।
'रहीम' के जीवन का अनुभव है बोलता इसमें,
'रसखान' के सुरों की रसधार है हिन्दी।।

'खुसरो' के हृदय का उद्‌गार है हिन्दी,
'मीरा' के भजन गूँजत घर घर,
'सूर' के सागर का विस्तार है हिन्दी।।

'दादू' और 'रैदास' ने गाया है झूम कर,
छू गई मन के सभी तार हिन्दी
'गाँधी जी' की वाणी बन भारत जगा दिया
गीतों की ललकार से गोरों को भगा दिया
'कामायनी' और 'उर्वशी' का रूप है इसमें
आँसू की करूणा, सहज जलधार है हिन्दी।।

भारत को समझना है तो जानिए इसको,
दुनिया भर में विस्तार पा रही है हिन्दी।
दिलों को जोड़ने का काम कर रही है हिन्दी,
देश का स्वाभिमान है, आधार है हिन्दी।।

★★★

हिन्दी के पौधे को हिन्दू और मुसलमान दोनों ने सींचकर बड़ा किया है।
जहूरबख़्श

अन्तर्दृष्टि

– शिव कुमार शर्मा
ड्राइवर, प्रशासन

1. दोस्ती हमेशा अपनों के बराबर ही होती है। अपने से धनी व अपने से निर्धन से दोस्ती में कहीं न कहीं स्वार्थ छिपा होता है।

2. इंसान उतना अपने दुखों से परेशान नहीं होता है जितना दूसरों के सुखों से परेशान होता है।

3. अगर किसी की बुरी आदतों को छुड़ाना है तो पहले अपने ऊपर अमल करो जब स्वयं अमल करेंगे तो दूसरों पर आपकी बात का गहरा असर होगा।

4. मनुष्य को अपने सुखद समय में अपने अतीत को नहीं भूलना चाहिए।

5. मनुष्य के पास कुछ समय के लिए दुख भी आना चाहिए जिससे अपनी पत्नी एवं दोस्तों की पहचान हो सके।

6. मनुष्य की खूबसुरती की पहचान उसके खूबसूरत दिखने से नहीं बल्कि उसके आचरण से होती है।

7. मनुष्य को कबूतर की तरह शांत दिखना चाहिए। अगर मनुष्य पर खतरा दिखे तो उसे साँप की तरह आचरण करना चाहिए।

8. विलासिता कुछ समय के लिए खुशी दे सकती है लेकिन हमेशा के लिए नहीं।

9. दूसरों को मनुष्य का अच्छा एवं बड़ा होने का अहसास तभी हो सकता है जब मनुष्य फलों से लदे एक वृक्ष के समान आचरण करे।

10. अगर आपको किसी ने कष्ट पहुँचाया है तो उसकी शिकायत उसी व्यक्ति से करनी चाहिए दूसरों से नहीं।

11. मनुष्य को भलाई करके भूल जाना चाहिए और बुराई को हमेशा याद रखना चाहिए।

12. मनुष्य के अच्छे गुणों की चर्चा दूसरे लोगों से करनी चाहिए लेकिन उसकी बुराइयों की चर्चा स्वयं उसी व्यक्ति से करनी चाहिए।

13. अपनी कमजोरी को हर किसी के सामने व्यक्त न करें समय आने पर वह आपकी कमजोरी का फायदा उठा सकता है।

***

पानी का महत्व

– शिखा गुप्ता
वित्त अधिकारी, लेखा एवं वित्त विभाग

आजकल हर इतवार को एक प्रोग्राम आता है "सत्यमेव जयते" जिसको आमिर खान पेश करते हैं। उसका हर विषय दिल को हिला कर रख देता है। अभी हाल के एक एपिसोड में उन्होंने पानी की समस्या का मुद्दा उठाया था। उस एपिसोड में पानी की समस्या को जिस तरह से गम्भीरता से बताया व दिखाया गया उसने मुझे हिला कर रख दिया। मुझे ही क्या जिसने भी यह कार्यक्रम देखा होगा, मुझे विश्वास है कि उसी का ये ही हाल हुआ होगा। जैसे उसमें एक आमंत्रित वक्ता ने बताया कि वृन्दावन, मथुरा व आगरा जैसे कुछ शहरों में तो यमुना का पानी है ही नहीं बल्कि दिल्ली का जो सीवर है वही वहां जाता है।

इसके अलावा जो जमीनी तल का पानी है वह भी प्रदूषित है क्योंकि कारखानों से जो भी रसायन निकलते हैं उनके निपटान (Disposal) के लिए जो मापदण्ड तय किए गए हैं उनका कोई पालन नहीं करता बल्कि जमीन खोदकर उसमें रसायन जब्त कर दिये जाते हैं वो हमारे जमीनी पानी को दूषित कर देते हैं। उसका दायरा करीब 50 से 60 किलोमीटर तक भी होता है। अब अंदाजा लगाइए कि जहां बोरवैल (Borewell) के द्वारा जमीनी पानी का प्रयोग सिंचाई के लिए होता है वहां फल, सब्जी, अनाज ऐसी जमीन में पैदा होंगे तो वह किस हद तक हमारे स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। खेतों में अगर कीटनाशक का छिड़काव रोक भी दिया जाए तब भी हम प्रदूषित फल, सब्जियां व अनाज ही खाएंगे। कहने का तात्पर्य है कि जब तक सरकार इन कारखानों की जांच न करें तथा सख्त कदम ना उठाएं तब तक बचने का कोई तरीका नहीं है।

क्या हम अपनी आगे आने वाली पीढ़ी को यही सब विरासत में देकर जाएंगे। पानी ईश्वर का वरदान है। पानी की एक–एक बूंद कीमती है। हममें से हर किसी को अपनी जिम्मेवारी समझनी होगी तथा पानी की एक बूंद को भी व्यर्थ होने से बचाना होगा। मैंने तो अपने घर पर यह कार्य शुरू कर दिया है। उम्मीद है कि आप भी करते होंगे। सबसे बड़ी बात हम अपनी नदियों में कोई भी कचरा जाने से रोकें तथा वर्षा के पानी को बचाने के हर सम्भव उपाय अपने–अपने स्तर पर करें। आप किसी भी पर्यटन स्थल पर चले जाइए वहां पौलीथीन, चिप्स के खाली पैकेट, पानी की खाली बोतलें आदि सब चीजों से गंदगी फैली होती है।

यह हमारा देश है इसको साफ रखने की जिम्मेदारी भी हम सबकी है। पहले मैं भी कचरा कहीं पर भी फैंक देती थी। लेकिन अब किसी भी तरह का कचरा सिर्फ कचरादान में ही डालती हूँ। इसकी प्रेरणा मुझे मेरी बेटी ने ही दी। शुरूआत खुद से ही करनी है और अभी से करनी है।

तो दोस्तो आज से प्रण लेते हैं पानी को व्यर्थ होने से बचायेंगे तथा गन्दगी को हम अपनी तरफ से इधर–उधर फैलने से रोकेंगे।

★★★

चुटकुले

– चिन्मय गर्ग
तकनीकी अधिकारी, डिजाईन ग्रुप

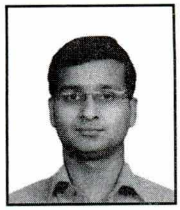

- दुकान पर आया ग्राहक कभी कोई चीज उठाता, उसे देखता, फिर उसे रख कर दूसरी चीज उठा लेता। कुछ पूछताछ भी की उसने, लेकिन कुछ खरीदा नहीं काफी देर तक उसने ऐसा ही किया तो झुंझलाकर दुकानदार ने पूछा – श्रीमान जी, आखिर आपको चाहिए क्या? – मौका! ग्राहक का सपाट सा जवाब था।
- पत्नी, गुस्से में पति महोदय पर बरसी– मैं पूछती हूं कि ऐसा चोर नौकर क्यों रखा है? पति – क्यों, क्या बात हो गई? पत्नी– होना क्या था, आप परसों होटल से जो चांदी की प्लेट उठा लाए थे, वह इसने गायब कर दी है।
- चकित ग्राहक ने बैरे से पूछा – तुम्हें कैसे पता चला कि मैं इस होटल मे पहली बार आया हूं? बैरा– क्योंकि जो एक बार यहां का खाना खाकर जाता है, दुबारा नहीं आता।
- मालिक (नया नौकर रखते समय) इस बात का तुम्हारे पास क्या सबूत है कि तुमने जगन्नाथ बाबू के यहां एक साल तक भोजन बनाया है। नौकर– मेरे पास ऐसे कई बर्तन हैं हजूर जिन पर उनका नाम खुदा है।
- पति– अरे, सुनती हो, डाक्टरों का कहना है कि अधिक बोलने से उम्र काफी कम हो जाती है। पत्नी (मुस्कुराकर)– अब तो तुमको विश्वास हो गया ना कि मेरी उम्र पैंतालीस से घटकर पच्चीस कैसे हो गयी।
- इस घर की मैं गृहमंत्री हूं, साथ ही मैं वित्त मंत्रालय भी संभालती हूं तुम्हारे ससुर विदेश मंत्री हैं। मेरा बेटा आपूर्ति मंत्री है एवं बेटी योजना मंत्री है। तुम कौन सा विभाग लेना पसंद करोगी? सास ने अपने मंत्रीमंडल का विस्तार समझाते हुए नई बहू से पूछा। जी, मैं तो विपक्ष मे बैठूंगी। बहू ने तपाक से जवाब दिया।
- मां ने अपनी खूबसूरत बड़ी बेटी से कहा बेटी, मैं तेरी शादी किसी बड़े घर में करुंगी। नहीं मां, बेटी ने टोका– तुम तो मेरे शादी बहुत ही छोटे घर में करना। क्यों बेटी? मां ने अचरज से पूछा आखिर उस घर की साफ सफाई तो मुझे ही करनी पड़ेगी न।

★★★

परमात्मा और किसान

– गौरव गोत्रा
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

एक बार किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया। कभी बाढ़ आ जाये, कभी सूखा पड़ जाये, कभी धूप तेज हो जाये, कभी ओले पड़ जायें। हर बार कुछ न कुछ कारण से उसकी फसल बरबाद हो जाती थी। एक बार तंग आकर उसने परमात्मा से कहा देखिये प्रभु आप परमात्मा हैं लेकिन लगता है आपको खेती बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है। एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये जैसा मैं चाहूँ वैसा मौसम हो, फिर आप देखना मैं कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा। परमात्मा मुस्कराये और कहा ठीक है जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा। मैं दखल नहीं करूँगा।

किसान ने गेहूँ कि फसल बोई, जब धूप चाही तब धूप मिली, जब पानी चाहा तब पानी, तेज धूप, ओले तो उसने आने ही नहीं दिये। समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी, क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुयी थी। किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को कि फसल कैसे करते हैं। बेकार ही इतने बरस हम किसानों को परेशान करते रहे।

फसल काटने का समय भी आ गया। किसान बड़े गर्व से फसल काटने गया। लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा, एक दम से छाती पर हाथ रखकर बैठ गया। गेहूँ की एक भी बाली के अन्दर गेहूँ नहीं था। सारी बालियां अन्दर से खाली थी। बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा प्रभु ये क्या हुआ। तब परमात्मा बोले ये तो होना ही था। तुमने पौधों को जरा सा भी संघर्ष का मौका नहीं दिया। ना तेज धूप में उनको तपने दिया, ना आंधी ओले से जूझने दिया। उनको किसी भी प्रकार की चुनौती का अहसास होने नहीं दिया। इसलिए सब पौधे खोखले रह गये। जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है, ओले गिरते हैं तब पौधा अपने बल से ही खड़ा रहता है और वो अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष से जो बल पैदा होता है वो ही उसे शक्ति देता है, ऊर्जा देता है। उसकी जीवत्ता को उभारता है। सोने को भी कुन्दन बनने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पिटने, गलने जैसी चुनौतियों से गुजरना पड़ता है। तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है। उसे अनमोल बनाती है।

इसी तरह अगर जिन्दगी में भी संघर्ष ना हो, चुनौती ना हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है। उसके अन्दर कोई गुण नहीं आ पाता। ये चुनौतियां ही हैं जो आदमी रूपी तलवार को धार देती हैं। उसे सशक्त और प्रखर बनाती हैं। अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनौतियां तो स्वीकार करनी ही पड़ेंगी। अन्यथा हम खोखले ही रह जाएंगे। अगर जिन्दगी में प्रखर बनना है, प्रतिभाशाली बनना है तो संघर्ष और चुनौतियों का सामना तो करना ही पड़ेगा।

★★★

सत्कर्म - ईश्वर प्राप्ति की कुंजी

– राजेन्द्र सिंह
वरिष्ठ कार्यकारी सहायक, कार्यकारी निदेशक कार्यालय

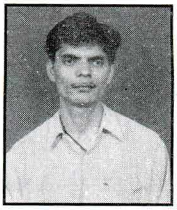

आज से नहीं आदिकाल से ही भगवान के अस्तित्व के बारे में एक विरोधाभास रहा है। कुछ लोग मानते हैं कि भगवान है तो वहीं कुछ का मानना है इस विश्व में भगवान नाम की कोई चीज है ही नहीं। यह हमारे पूर्वजों से चलता आ रहा केवल एक कथन मात्र है। यहां तक कि हमारे महान दार्शनिक इस संदर्भ में किसी तथ्य पर नहीं पहुंचे। मेरा खुद का यह मानना है कि सत्यता कहीं इन दो विभिन्न कथनों के मध्य में स्थित है। यानि भगवान हैं भी एवं नहीं भी हैं। जहां आस्तिकों के लिए भगवान हैं वहीं नास्तिकों के लिए भगवान नाम की कोई चीज है ही नहीं। सत्य तो यह है कि जब तक कोई प्राणी भगवान के अस्तित्व के बारे में अपने दावे पेश करता रहेगा तब तक वह इस विषय बिन्दु से दूर भागता रहेगा एवं भ्रमित ही रहेगा। जिस दिन वह भगवान के अस्तित्व को जानने की पात्रता मात्र प्राप्त कर लेगा वह न केवल भगवान के प्रति मौन रहना शुरू कर देगा अपितु अन्य सांसारिक विषयों पर भी चुप्पी साध लेगा। यहीं से वह प्राणी सही रूप में भगवान के विषय एवं उसके अस्तित्व के बारे मे जानने के काबिल बनता है।

मेरा खुद का परिवार हमेशा इस मुददे पर दुविधा में रहता है। कई बार तो भगवान के अस्तित्व का विषय पारिवारिक कलह का कारण बन जाता है। जो लोग आस्तिक हैं वे भी कभी–कभी भगवान के अस्तित्व को चुनौती देना शुरू कर देते हैं और वही जो कहते हैं कि भगवान है ही नहीं उनके मुख से भी प्रत्येक दुख में भगवान शब्द निकलना शुरू हो जाता है। पहले–पहले ईश्वर के बारे में सामाजिक एवं पारिवारिक प्रतिक्रियाओं से मुझे भी कभी कभी भ्रम सा पैदा हो जाता था। उस भ्रम के बावजूद मैं प्रत्येक संकट के क्षणों में अपने माता – पिता से पहले भगवान का ही नाम लेता था। आज अपने आंतरिक मंथन के पश्चात मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि भगवान का अस्तित्व केवल आस्था पर निर्भर करता है। वे सभी जो किसी शक्ति पर विश्वास करते हैं उन्हे इस शक्ति का अहसास होता है एवं अन्य नास्तिक लोगों को इसका अहसास हो ही नहीं पाता है।

मेरे विचार से जो कुछ भी हम भगवान की महिमा के बारे में सुनते हैं उस महिमा को जानने की केवल पात्रता प्राप्ति हेतु हमें कठिनाइयों के कई स्तरों से गुजरना होता है। केवल अंतिम स्तर पर पहुंचने के पश्चात ही हम एक अच्छे इंसान बन पाते हैं। अच्छे इंसान बनने के खुद के अपने मापदण्ड एवं कसौटियां हैं। इन मापदण्डों एवं कसौटियों की खुद की एक अपनी नियमावली है। जरा सी चूक भी हमें फिर से पहले पायदान पर वापस ले आती है जहां से दुबारा प्रयत्न जुटाना सभी के बस की बात नहीं है। डगर जरा कठिन तो है पर असम्भव नहीं है। यह डगर अन्य सामाजिक एवं सांसारिक कार्यों के साथ–साथ भी तय की जा सकती है।

दुर्भाग्यवश उपरोक्त कठिनाइयों का सामना करते–करते एवं इन डगरों पर चलते–चलते हम देखते हैं कि हमारा व्यवहार एवं हमारी दिनचर्या बदलने लगती है। आगे चलते–चलते हम अपने व्यक्तित्व में पूर्ण रूपान्तर महसूस करते हैं। हमें इस संसार की संरचनाएं, सामाजिक रिश्ते, हमारा व्यवहार एवं सांसारिक कार्यकलाप सब स्वार्थपूर्ण बनावटी एवं किसी शक्ति विशेष द्वारा रचा एक सुनियोजित षडयंत्र सा महसूस होने लगता है।

धारे–धीरे हम दिन–रात सत्य, झूठ एवं सही–गलत में अन्तर का एहसास नहीं कर पाते हैं। दरअसल, हमें इनमें कोई अन्तर समझ में ही नहीं आता। हमें लगने लगता हैं कि नदी, नाले, वृक्ष, पत्थर, पक्षी, जानवर एवं मनुष्य सभी भाई बहिन हैं। हम प्राकृतिक साधनों की पूजा करने लगते हैं एवं सम्पूर्ण प्राणी मात्र को अपने परिवार का हिस्सा समझने लगते हैं एवं उनसे स्नेह करने लग जाते हैं। यह भी स्थिति हो जाती है कि ईश्वर के अस्तित्व के प्रति भ्रमित एवं नास्तिक लोग हमें पागल की उपाधि दे देते हैं। इन सबका होना यह प्रमाणित करता है कि अब हमने भगवान के अस्तित्व के बारे में जानने की एवं उसकी पूजा प्रारम्भ करने की पात्रता प्राप्त कर ली है। इस सारी प्रक्रिया से हमें जिन गुणों की प्राप्ति होती है वे हैं ध्यानमग्नता, एकाग्रता एवं व्यक्तित्व रूपान्तर। भगवान के बारे में जानना अभी बाकी है।

उपरोक्त की प्राप्ति से पहले हम ईश्वर के संदर्भ में जो भी दावे एवं कार्यकलाप करते हैं वह केवल एक आडम्बर मात्र माना जा सकता है। तब तक हमारी पूजा इत्यादि भगवान की प्राप्ति हेतु नहीं बल्कि स्वार्थ हेतु होती है।

ध्यानमग्नता एवं एकाग्रता प्राप्ति के पश्चात हम चाहते हुए भी आडम्बर नहीं कर सकते हैं। न ही कभी हमें यह एहसास होगा कि हमें अपनी आत्मा के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। तत्पश्चात हम मनुष्य का तो दूर कभी किसी प्राणी मात्र का भी अशुभ नहीं सोच सकते हैं। तब लगभग यह तय हो जाता है कि हम गलत कार्य कर ही नहीं सकते हैं। आत्मा की सफाई एवं सभी बुरे समझे जाने वाले सांसारिक कार्यों से अपने आप को दूर रखना ही तो सही मानवता है। यही तो है ईश्वर प्राप्ति की कुंजी भी।

★★★

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।
लाल बहादुर शास्त्री

जिंदगी बरगद सी

– रवि कुमार सिंह
कार्यालय सहायक, परीक्षा नियंत्रक

जिंदगी आंगन के बरगद सी मेरी
मकसद ... बस देना छांव और छांव
जितनी जमीं के नीचे
उतना ही जमीं के ऊपर
अपनी जड़ों को फैलाती मेरी जिंदगी .....

बस सब के लिए
कभी दवा तो कभी दुआ
अपना कुछ भी नहीं इसमें
कभी कोई बांध गया
कच्चे धागे में तो .....

कभी कोई जला गया दीप
चुकाने को हजार कर्ज पर ....

घर के बाहर ही रही जिंदगी मेरी ....
अंदर झांक भी न सकी
मैं किसी के अंतर में
कि बरगद सी मेरी जिंदगी
रही दूसरों के लिए .....

कोई न ला सका अपने
अंतर के आंगन तक
कि पूजी तो गई
पर दुलारी न गई
जिंदगी मेरी रही बरगद सी

✶✶✶

सच्चाई का जीवन

– जगदीश चन्द्र शर्मा
ड्राइवर, प्रशासन

एक डाकू की जिंदगी बदलने की कहानी बड़ी प्रचलित है। वह बड़ी लूटमार करता था, डाके डालता था और सोचता था कि मैं बहुत अच्छा कर रहा हूँ। डाके में उसे बहुत सा धन मिलता था पर वह लालची बहुत था। उसे एक जगह भीड़ दिखी। सोचा चलो चुपचाप किसी का पर्स साफ कर लेता हूँ। दरअसल वहाँ प्रवचन हो रहा था। संत जी प्रवचन दे रहे थे इंसान को सच्चाई की जिंदगी जीनी चाहिए उसे सब की कद्र करनी चाहिए तभी व्यक्ति का उद्धार हो सकता है। डाकू पर बड़ा प्रभाव पड़ा वह संत के पास गया और बोला मैंने जीवन में बहुत बुरे काम किए हैं। क्या मेरा उद्दार हो सकता है। डाका डालना तो मैं छोड़ नहीं सकता क्योंकि दूसरा कोई काम मुझे आता नहीं है। संत बोले तुम केवल सच बोलना, तुम्हारा उद्दार हो जाएगा। डाकू अगले दिन राजा के किले में डाका डालने गया। उसने चौकीदार से कहा मैं डाका डालने आया हूँ, चौकीदार ने समझा कोई डाकू ऐसा कहता है? जरूर मजाक कर रहा है। उसने उसे अंदर जाने दिया, डाकू तिजोरी के पास गया और उसे ले जाने लगा तो चौकीदार ने पूछा यह क्यों ले जा रहे हो? वह बोला मै इसे चुराकर ले जा रहा हूँ। चौकीदार ने सोचा यह जरूर कोई भद्र पुरूष है जो मेरी परीक्षा ले रहा है और उसे जाने दिया। चोरी की खबर राजा तक पहुँची। चौकीदार की बात सुनकर डाकू को बुलाया गया, उसकी सच्चाई वाली बातें सुनकर राजा ने कहा– यह डाकू जरूर है। पर सच्चा है, सच्चे लोग बहुत कम मिलते हैं। इसलिए तुम महल में ही नौकरी करोगे, तुम्हें डाका डालने की जरूरत नहीं पड़ेगी। दरअसल सच्चाई हमें गलत कामों से दूर ले जाती है और हमारी जिंदगी खुशियों से भरपूर हो जाती है और एक सच्चा इंसान ही प्रभू को पा सकता है। अपने आम व्यव्हार में सच्चाई की जिंदगी जीना सबसे बड़ा गुण है।

सच्चाई से मन के भीतर शांति का अनुभव होता है। गुरूवाणी में कहा गया है कि जिसने बाहर सुख चैन पाने की कोशिश की है वह भ्रम में भूला रहता है। जो अंदर की दुनिया में जाते हैं, वे ही सच्चाई और सच्चाई की ताकत को समझ पाते हैं।

धर्मग्रंथ भी सच बोलने की हिदायत देते हैं, पर जब इंसान सच्चाई को अपनाता है तो उसे लगता है कि अगर मैं इसे अपनाता रहूँगा तो जीवन में सफल नहीं हो पाऊँगा। हमें लगता है कि जो लोग झूठ बोलते हैं, वे बेहतर जिंदगी जी रहे हैं। लेकिन महापुरूष कहते हैं कि यदि हमें जीवन के मकसद तक पहुँचना है तो हमें सच्चाई के साथ जीना होगा। वह सच क्या है? उसे जानना है, दुनिया में जो कुछ भी सच है, वह सृष्टि की शुरूआत में भी सच था आज भी सच है और आगे भी सच रहेगा। यदि हम उस सच्चाई को जान जाएं तो हमारी जिंदगी सफल हो जाएगी।

★★★

चुटकुले

– राम बिलास चौधरी
कनिष्ठ सहायक, सामग्री प्रबंधन

अध्यापक ने एक विद्यार्थी से पूछा – तुम्हारे पापा क्या कार्य करते हैं?
विद्यार्थी – पापा वही काम करते हैं जो मम्मी करने को कहती है।

पत्नी ने पति से कहा – क्या सब्जी लाए हैं? सारी सब्जी गली सड़ी है। इसका क्या करेंगे? जो भी लाते हो सब सड़ा–गला रहता है।
पति ने पत्नी से कहा – हाँ। तुम्हें भी तो मैं ही लाया हूँ।

जज (चोर से) – तुमने सुनार के गहने दुकान से क्यों चुराए?
चोर (जज से) – जज साहब। दुकान के बाहर लिखा था सुनहरे मौके का लाभ उठाएं।

मालकिन (नौकरानी से) – तेरी तो आँखे हैं, चावल के कंकड़ ठीक से नहीं चुन सकती?
नौकरानी (मालिक से) – आपके भी तो पूरे बत्तीस दांत हैं, एकाध कंकड़ नहीं खा सकतीं।

मालिक ने नौकर को डांट लगाते हुए कहा – कोई भी काम करने से पहले मुझसे पूछ लिया करो।
थोड़ी देर के बाद नौकर आया और बोला – मालिक बिल्ली दूध पी रही हैं कहो तो भगा दूँ।

★★★

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।
लाल बहादुर शास्त्री

ब्रह्मा, विष्णु और महेश

– प्रीति राज़दान
संयुक्त निदेशक, इम्पलिमेंटेशन

बहुत युग पहले की बात है, विष्णु जी शेषनाग पर योग निंद्रा में लीन थे। तभी ब्रह्मा जी वहां पहुँचे और उन्होंने अपने आप को ब्रह्मांड का निर्माता बताया। विष्णु जी ने ज़ोर दिया कि वे ब्रह्मांड के वास्तुकार थे। इस बात पर दोनों में बहस होने लगी। धीरे–धीरे बहस ने झगड़े का रूप ले लिया। तभी भगवान शिव, आग के एक स्तंभ के रूप में उन दोनों के पास दिखाई दिए।

जहां तक नेत्र देख सकते थे, स्तंभ का कोई शीर्ष या अंत नहीं दिख रहा था। दोनों देवताओं ने फैसला किया कि दोनों में से जो शीर्ष या अंत का पता लगा लेगा वह संसार में श्रेष्ठ माना जाएगा।

आग के इस स्तंभ के मूल का पता लगाने के लिए उत्सुक ब्रह्माजी ने एक हंस का रूप ग्रहण किया और आकाश में अपनी यात्रा शुरू की।

विष्णु जी ने एक वरहा (जंगली सूअर) का रूप ग्रहण किया और धरती की गहराई में उतरने लगे। उन दोनों देवताओं की यह खोज दो हजार वर्षों तक चलती रही पर उस प्रकाश के स्तंभ का कोई अंत नहीं मिल सका। इतनी लंबी खोज के कारण वो थक चुके थे।

विष्णु जी ने अपनी खोज समाप्त करके वापस पृथ्वी पर लौटने का फैसला किया। उधर ब्रह्मा जी ने एक केतकी के फूल को आकाश से नीचे की ओर धीरे–धीरे बहते हुए देखा। फूल से पूछताछ करने पर फूल ने कहा कि उसे भेंट के रूप में आग के स्तंभ पर एक भक्त ने रखा था, जहां से वह गिर गया। स्तंभ के शीर्ष तक पहुँचने में असमर्थ, ब्रह्मा जी ने फैसला किया कि वह केतकी के फूल का उपयोग शीर्ष तक पहुँचने के सबूत के रूप में करेंगे। ब्रह्मा जी ने फूल से यह झूठ बोलने का अनुरोध किया कि वह स्तंभ के ऊपर तक पहुँचे थे जहां उन्हें वह फूल प्राप्त हुआ।

ब्रह्मा और विष्णु दोनों वापस पृथ्वी पर पहुँच गए। विष्णु ने सच बताया कि बहुत लंबे समय तक खोज के बाद भी वह उक्त स्तंभ के चरणों को खोजने में असमर्थ रहे। ब्रह्मा जी ने बताया कि वह वास्तव में आग के खम्भे के सिर पर पहुँच गए थे और सबूत के रूप में वह केतकी का फूल लाए थे। तभी बहुत ख़फा शिवजी अग्निमय स्तंभ से बाहर निकले और उन्होंने ब्रह्मा को शापित किया कि उनकी पृथ्वी पर मंदिरों में पूजा नहीं करी जाएगी। इस कथा का तथ्य यह है कि शायद ही किसी भी भारत के क्षेत्र में ब्रह्मा जी को समर्पित मंदिर पाए जाते हैं, पुष्कर (अजमेर, राजस्थान) को छोड़कर।

इस घटना का विवरण हमें "शिव महिम्नः" स्त्रोत में भी मिलता हैः

तवैश्वर्य यत्नाद्दुपरि विरिंश्चो र्हरिश्धः
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्ध वपुषः।
ततो भक्ति श्रद्धा भरगुरूमृणभ्दया गिरिश। यत्
स्वयं तस्ये ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।।

ब्रह्मा जी ऊपर गए और विष्णु जी धरती के नीचे गए, आपकी महानता को खोजने के लिए। दोनों आप को ढूंढ नहीं पाए, जब आप खड़े थे आग के प्रकाश के स्तंभ की तरह। जब दोनो ने आपकी भक्ति से प्रार्थना की तब आपने अपना रूप प्रकट किया।

***

सफलता के सात सूत्र

(आप इन्हें अपने कमरे में भी ढूंढ सकते हैं)

– प्रिया
कार्यालय सहायक, सामग्री प्रबंधन

"छत" कहती है	–	"लक्ष्य" ऊंचा रखो
"पंखा" कहता है	–	"दिमाग" ठंडा रखो
"घड़ी" कहती है	–	हर "क्षण" महत्वपूर्ण है
"शीशा" कहता है	–	अपने "चरित्र" पर गौर करो
"खिड़की" कहती है	–	"दुनिया" देखो
"कैलेण्डर" कहता है	–	अपने आप को "समय" के साथ तत्पर रखो
"दरवाजा" कहता है	–	"अवसर" को हाथों से मत जाने दो

***

नवभारत

– अंजुम अवस्थी
इंजीनियर आई.टी., स्कूल और इलेक्ट्रॉनिक्स

मेरे भारत की सुवह अब शाम हो रही,
आजाद माँ, भष्ट्राचार की गुलाम हो रही।

अपनों को ही मार रहा, आज का मानव,
उसके दिल की दया भी कत्लेआम हो रही।

मंदिर मस्जिद के झगड़े लेकर बैठा इन्सान,
ग्रन्थों की महानता भी निलाम हो रही।

सीता सावित्री को भूल गई आज की औरत
फैशन में उसकी नींदे भी हराम हो रही।

हो गई यहां कि भाषा आज विदेशी,
स्वदेशी भाषा अपने ही देश में बदनाम हो रही।

भक्षक बन गए, देश के रक्षक,
लूट, खसूट, मारा–मारी भी खुलेआम हो रही।

अन्त मन फिर भी यह कहता है .....
नहीं है कोई रास्ता देश की खुशहाली का,
ऐसा एहसास मुझे नहीं है,
दिख रही है कहीं इक हल्की सी रोशनी,
सारे चिराग, बुझे नहीं हैं।

★★★

अंग्रेजी की गुलामी व उसके दुष्परिणाम

– धर्मेन्द्र कुमार शर्मा
इंजीनियर आई.टी., इन्फर्मेशन सर्विसेज

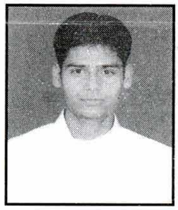

आज हमारे देश की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी है। हमारे देश में जो भी काम होता है अंग्रेजी में होता है। हमारे लिए यह बड़े शर्म की बात है कि हमारी मातृभाषा हिन्दी हैं और देश के सारे काम अंग्रेजी में होते हैं। उससे भी बड़े शर्म की बात यह है कि आज हमें अपनी ही मातृभाषा को प्रोत्साहित करने के लिए हिन्दी सप्ताह या दिवस मनाने की जरूरत आन पड़ी है। जबकि हमारे 121 करोड़ लोगों के देश में 100 करोड़ लोग हिन्दी जानते हैं, बोलते हैं, समझते हैं और उनमें से 85 करोड़ लोगों की तो मातृभाषा ही हिन्दी है। किसी भी विदेशी भाषा को बोलचाल या व्यापार के उद्देश्य से जानना एक अच्छी बात हो सकती है लेकिन उसे मातृभाषा नहीं बनने देना चाहिए। आज हिन्दी को लाने की बात तो सभी करते हैं लेकिन जब इसे अपनाने की बारी आती है तो पीछे हट जाते हैं क्योंकि शायद हिन्दी को अपनाने से हम कहीं न कहीं अपने आप को पिछड़ा हुआ महसूस करते हैं। हम समझते है कि अंग्रेजी सभ्य लोगों की भाषा है, अंग्रेजी पढ़े–लिखों लोगों की भाषा है। साल में एक बार हिन्दी सप्ताह या दिवस मनाना हैं और बाकी पूरे साल अंग्रेजी और अंग्रेजियत में डूबा रहना है। अगर हम सभी लोगों की सोच ऐसी ही रही तो हिन्दी कभी भी राष्ट्रभाषा नहीं बन पाएगी और हम हमेशा गुलामी में फंसे रहेंगे।

मैं तो एक ही बात कहूँगा कि आजादी से पहले हम भाषा के स्तर पर ज्यादा आजाद थे। हमारे देश के 1857 की क्रांति के सभी क्रांतिकारियों, चाहे वह नाना साहब पेशवा हों, तात्याटोपे हों, लक्ष्मीबाई हो, राय कुंवर बहादुर हों, वो चाहे पूरब के हों, पश्चिम के हों, उत्तर के हों या दक्षिण के हों, सभी का यही मानना था कि भारत की आजादी मातृभाषा से जुड़ी हुई है। जब तक हम हमारी मातृभाषा को सम्मान नहीं दिला पाएंगे, इस देश में आजादी नहीं ला पाएंगे या फिर हम दूसरे और तीसरे दौर के क्रांतिकारियों या नेताओं की बात करें, चाहे वह लोकमान्य तिलक (मराठी) हों, गाँधी जी (गुजराती) हों, महर्षि दयानन्द (गुजराती) हों, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस, अरविन्द घोष हों सभी का यही मानना था कि देश की राष्ट्रभाषा अगर कोई हो सकती है तो वह हिन्दी ही है क्योंकि हिन्दी में वो ताकत है जो पूरे देश को एक सूत्र में बांध सके।

ये सब यही कहते थे कि अंग्रेजी भाषा का स्थान अगर इस देश में कोई ले सकता है तो वह हमारी मातृभाषा हिन्दी ही है। हमारे देश के शहीदों के मन में इतनी तीव्रता थी अपनी राष्ट्रभाषा को लेकर लेकिन जब उनके परम शिष्यों के हाथ में इस देश की सत्ता आयी तो उन्होंने उसका बिल्कुल उल्टा किया। विज्ञान और तकनीकी को भारत में बढ़ाना है तो यह अंग्रेजी के बिना संभव नहीं हो सकता। भारत को यूरोप और अमेरिका जैसा बनाना हो तो यह अंग्रेजी के बिना संभव नहीं हो सकता। अंग्रेजी विश्व की भाषा है, अंग्रेजी वैज्ञानिक भाषा है, अंग्रेजी समृद्धशाली भाषा है, अंग्रेजी सबसे प्रतिष्ठित भाषा है। जब इस तरह के तर्क संसद और संसद के बाहर दिए जाने लगे तो उसका नतीजा यह निकला कि इस देश में अंग्रेजी आज राष्ट्रभाषा की तरह स्थापित है। इसलिए आज हमारे देश में नीचे से लेकर ऊपर तक के हर स्तर पर अंग्रेजी है। आप अब पूछेंगे कि ऐसा क्यों? हमारे शहीदों की भाषा तो अंग्रेजी न थी, आजादी के आन्दोलन की भाषा तो अंग्रेजी नहीं थी फिर आजादी के बाद

यह स्थापित कैसे हुई। इसके पीछे एक राज है, मुझे तो लगता है, यह एक षडयन्त्र है। वह षडयंत्र ये कि भारत भले ही अंग्रेजी की गुलामी से आजाद हो जाए लेकिन वह अंग्रेजी और अंग्रेजीयत की गुलामी में हमेशा फंसा रहना चाहिए। वह षडयंत्र यह है कि हमारे देश के संविधान में जो 1950 में लागू हुआ, एक अनुच्छेद लिखा गया उसका नम्बर है 343– अनुच्छेद 343 (1) में लिखा गयाः

अनुच्छेद 343(1) – संविधान लागू होने के 15 वर्ष तक अंग्रेजी इस देश में संघ सरकार की भाषा के रूप में कार्य करेगी और राज्य सरकारे भी चाहें तो वह भी अंग्रेजी में काम कर सकेंगी। फिर 15 साल बाद यानि 1965 से अंग्रेजी को हटाने की बात की जाएगी। इसके लिए संसद की एक समिति बनेगी। ये संसदीय समिति जिस तरह का विचार रखेगी उस पर राष्ट्रपति विचार करेंगे और राष्ट्रपति की अनुशंसा से संसद में एक विधेयक पारित किया जाएगा। इस विधेयक को पारित करके अंग्रेजी को हटा दिया जाएगा और हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं को स्थापित किया जाएगा।

इस 343 (1) में यह बात लिखी है कि लेकिन इसी अनुच्छेद के 343 (2) व 343(3) में विल्कुल उल्टी बात लिखी है। 343(3) में लिखा है–

अनुच्छेद 343 (3) – भारत में अगर कोई राज्य अंग्रेजी को हटाने का विरोध करेगा तो फिर इसे नहीं हटाया जाएगा।

इसके आगे अनुच्छेद 348 लिखा गया। उसमें लिखा गया–

अनुच्छेद 348: भारत में भले ही हिन्दी आम बोलचाल की भाषा रहे, भारत में भले ही अन्य चीजों में हिन्दी रहे लेकिन उच्च न्यायालय में, उच्चतम न्यायालय में और कानून के स्तर पर अंग्रेजी ही प्रमाणिक भाषा रहेगी।

अब आप जरा इन अनुच्छेदों को गौर से देखें तो एक तरफ तो 343(1) में लिखा गया कि 1965 से अंग्रेजी को हटा दिया जाएगा और 343(3) व 348 में बिल्कुल इसके उल्टा हीं लिख दिया। तो यह षडयन्त्र नहीं तो और क्या है। इसके बाद जब 1965 का समय पूरा हुआ तो अंग्रेजी को हटाने और हिन्दी को राष्ट्रभाषा व राजभाषा बनाने की बात शुरू हुई। जब ये बात शुरू हुई तो दक्षिण भारत में दंगे शुरू हो गए। और भारत की खुफिया विभाग की रिपोर्ट यह कहती है कि यह दंगे अपने आप नहीं हुए, करवाये गये थे। उन नेताओं के द्वारा जो नहीं चाहते थे कि भारत अंग्रेजी और अंग्रेजियत की गुलामी से आजाद हो। जब दंगे होने लगे तो सरकार को मौका मिल गया कि अंग्रेजी को हटाने के नाम पर देश में दंगे होते हैं तो फिर अंग्रेजी को नहीं हटाया जाएगा और 1967 में एक विधेयक पारित करके 1968 में उसमें एक संशोधन कर दिया गया जो कि हिन्दी के गले में फाँसी के फन्दे की तरह लटका हुआ है। वो संशोधन यह है कि .

"भारत में जितने भी राज्य हैं अगर उनमें से कोई एक राज्य भी अंग्रेजी का समर्थन करता है तो अंग्रेजी को नहीं हटाया जाएगा।"

अब जबकि हमारे देश में लगभग एक करोड़ लोग ही अंग्रेजी जानते हैं उस देश की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी है। ये कैसी विडम्बना है मुझे समझ नहीं आती। अंग्रेजी के समर्थन में तर्क देने वाले जो नेता है और अंग्रेजी को भारत में बनाकर रखने वाले जो नेता हैं वो मुख्य रूप से तीन प्रकार के तर्क देते है:

1. अंग्रेजी विश्वभाषा है
2. अंग्रेजी सबसे समृद्धशाली भाषा है
3. अंग्रेजी विज्ञान और तकनीकी की भाषा है

अब इन्हीं तर्कों के आधार पर मैं आपको बताता हूँ कि विश्व में अंग्रेजी की हैसितय क्या है। ये तीनों भ्रम मैं दूर करने की कोशिश करता हूँ।

क्या अंग्रेजी विश्वभाषा है

उसे ऐसे समझते हैं पूरी दुनियां में 200 देश हैं और लगभग 700 करोड़ की आबादी है। अब इन 200 देशों में से मात्र 14 देश हैं जहां अंग्रेजी बोली जाती है, पढ़ी जाती है, समझी जाती या अंग्रेजी में कामकाज होता है। ये 14 देश भी वह हैं जिनको अंग्रेजों ने अपना गुलाम बनाया था। अब 200 देशों में से मात्र 14 दोशों में अंग्रेजी है तो यह कुल देशों का मात्र 7 प्रतिशत हुआ यानि बाकी 93 प्रतिशत देशों में अंग्रेजी नहीं चलती। अब आप बताओ यह विश्वभाषा कैसे हुई और 700 करोड़ की आबादी में लगभग 33 करोड़ लोग ऐसे है जो अंग्रेजी बोलते हैं, पढ़ते हैं, समझते हैं जो कुल जनसंख्या का लगभग 5 प्रतिशत हुआ तो बाकी 95 प्रतिशत लोग तो अंग्रेजी नहीं जानते। फिर अंग्रेजी विश्वभाषा कैसे हो सकती है। अगर कोई भाषा विश्वभाषा हो सकती है तो वह चाइनीज है क्योंकि 160 करोड़ लोग चाइनिज जानते हैं, बोलते हैं, समझते हैं। चाइनीज के बाद अगर कोई विश्वभाषा हो सकती है तो वह हिन्दी है क्योंकि लगभग 100 करोड़ लोग हिन्दी जानते हैं, बोलते हैं, समझते हैं। अंग्रेजी तो बिल्कुल भी विश्वभाषा नहीं हो सकती।

क्या अंग्रेजी समृद्धशाली भाषा है

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार किसी भाषा की समृद्धी उस भाषा में शब्दों की संख्या के आधार पर मानी जाती है। यानि किसी भाषा में जितने ज्यादा शब्द होंगे वह भाषा उतनी समृद्ध होगी। अंग्रेजी में मूल शब्दों की संख्या 65000 है और कुल शब्द 250000 हैं यानि 185000 शब्द दूसरी भाषाओं से उधार ले रखे हैं। ये शब्द हिन्दी से, जर्मन से, फ्रेंच से, लैटिन से, डच से हमारी संस्कृत से उधार ले रखे हैं। अब दुनिया के अन्य देशों की भाषा देखते हैं। दुनियां में जो सबसे छोटे देश हैं जैसे डेनमार्क, फिनलैण्ड इन देशों की भाषाएं डेनिश व फिनिश हैं। डेनिश व फिनिश दोनों में ही अंग्रेजी से ज्यादा शब्द हैं। अब अगर भारत की भाषाओं की बात करें तो भारत में 22 भाषाएं हैं और 3280 बोलियां है। अगर हम हिन्दी और उसकी बोलियों में कुल शब्द देखें तो वह साठ लाख हैं। और अगर संस्कृत की बात करें तो संस्कृत विद्वानों के अनुसार संस्कृत में शब्द भण्डार अनन्त है। उसमें करोड़ों शब्द बनाए जा सकते हैं।

अब आप बताइयें जिस भाषा में 250000 शब्द हैं वह समृद्धभाषा है या हिन्दी और हमारी संस्कृत जिसमें अनन्त शब्द भण्डार है। हमारा भारत इतना अद्भुत देश है जिसमें 22 भाषाएं और 3280 बोलियां जो दुनिया के किसी देश में नहीं। अन्य देशों में एक भाषा या ज्यादा से ज्यादा दो भाषा हैं तो शब्द भण्डार हमारे पास ज्यादा है। अंग्रेजी के पास कुछ नहीं। तो हिन्दी या संस्कृत समृद्धशाली भाषा है, अंग्रेजी नहीं।

क्या अंग्रेजी विज्ञान और तकनीकी की भाषा है

अब हम ये देखते हैं कि विज्ञान और तकनीकी की सबसे ज्यादा पुस्तकें किस भाषा में हैं। तो मैं आपको बता दूं कि विज्ञान और तकनीकी की सबसे ज्यादा पुस्तकें रूसी भाषा में हैं और सबसे ज्यादा शोधपत्र भी रूसी भाषा में ही छपे हैं। तो विज्ञान और तकनीक की भाषा रूसी भाषा है अंग्रेजी नहीं।

हमारी सबसे बड़ी मुश्किल है कि हम अमेरिका और इंगलैंड को ही सारी दुनियां मान लेते हैं। हमारी सोच ऐसी बना दी गई है कि अमेरिका या इंगलैण्ड के अलावा कोई देश हमें सात समंदर पार दिखाई नहीं देता। इन देशों में अंग्रेजी चलती है तो हमें सारी दुनियां में अंग्रेजी ही दिखाई देती है। जब हम इस भाषा को हटाने की बात करते है तो हमारी ईसाई संस्थाएं, जिनके हाथों में संयोगवश आज हमारे पब्लिक स्कूल या कॉन्वेंट स्कूल हैं, समझती हैं कि ये ईसाइयों का विरोध है। तो मैं आपको बड़ी विनम्रता पूर्वक बताना चाहता हूँ कि परमपूज्यनीय ईसा मसीह की भाषा अंग्रेजी नहीं थी। उन्होंने घूम–घूमकर दुनियां में जो उपदेश दिए वो अंग्रेजी में नहीं थे। उनके सारे व्याख्यान अरमेक भाषा में थे जिसमें मूलरूप से बाइबिल लिखी गयी थी। दुनियां में जितनी भी धार्मिक पुस्तकें हैं जिन्होंने दुनियां की व्यवस्थाओं को बदला है एक भी अंग्रेजी में नहीं है चाहे वह कुरान हो, बाइविल हो, वेद हो, पुराण हो या उपनिषद हों। इसलिए अंग्रेजी को ईसाइयों का विरोध नहीं है।

अंग्रेजी के दुष्परिणाम

➢ अंग्रेजी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है तो सेना में भी अंग्रेजी है। अब हमारे देश में जितनी भी वीर जातियाँ है वो अंग्रेजी नहीं जानती तो वो लोग अच्छे पदों पर नहीं पहुँच पाते और वह लोग जो सिर्फ अच्छी अंग्रेजी जानते हैं व वीरता में बिल्कुल शून्य है सेना में उच्च पद पर बैठे हैं। यही कारण है कि हम चीन से युद्ध हार गए। ये तो गुलामी के दिनों से भी बुरी स्थिति है। गुलामी के दिनों में किसी कलक्टर को अंग्रेजी सरकार तभी नियुक्ति देती थी जब कि वह उस क्षेत्र की भाषा को सीख लेता था। लेकिन आज किसी कलक्टर को क्षेत्रीय भाषा आये न आये अंग्रेजी जरूर आनी चाहिए।

➢ किसानों को मिलने वाली खाद, कीटनाशक, जन्तुनाशक सभी के नाम अंग्रेजी में होते हैं। अब अगर इन दवाओं पर लिखा है कि इसे थोड़ी मात्रा में डालना है। लेकिन किसान ऐसा नहीं कर पाता क्योंकि वह इसे पढ़ नहीं सकता। किसान उस दवा को ज्यादा मात्रा में डाल देता है, जिससे वह खुद मरता है और दूसरों को मारता है। यही कारण है कि आज हमारा भोजन विषैला हो चुका है। पशुओं का दूध भी विषैला हो चुका है क्योंकि खेतों से आये उस जहरीले चारे को पशु खाते हैं।

- हम अपने बच्चों को विदेशी भाषा में पढ़ाते हैं। दुनियाँ में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जहां विदेशी भाषा में बच्चों को शिक्षा दी जाती है। दुनियाँ का हर एक देश अपनी मातृभाषा में बच्चों को पढ़ाता है।

- हमारे यहां विदेशी भाषा अंग्रेजी में अखबार छपते हैं व बिकते हैं। दुनिया में किसी और देश में ऐसा नहीं होता। वहाँ अखबार मातृभाषा में छपते हैं व बिकते हैं, अगर विदेशी भाषा में कहीं अखबार छपते भी हैं तो आसानी से मिलते नहीं है। लेकिन भारत में आपको आपकी मातृभाषा में अखबार मिले न मिले, अंग्रेजी का अखबार जरूर मिल जाएगा।

- हमारे न्यायालयों व अदालतों में अंग्रेजी है। वहाँ वकीलों के बीच बहस अंग्रेजी में होती है न वादी को समझ में आती है और न प्रतिवादी को। जब न्याय मिलता है तो वह भी अंग्रेजी में ही लिखा होता है। अब बताओ उस इन्सान को वह न्याय क्या समझ में आएगा जो अंग्रेजी नहीं जानता। ये कैसी विडम्बना है इस देश की।

- बाजार में मिलने वाले सभी वस्तुओं, दवाओं के नाम अंग्रेजी में होते हैं। 121 करोड़ के देश में जहां मात्र 1 करोड़ लोग अंग्रेजी जानते हैं वहां सारे नाम अंग्रेजी में क्यों। आखिर हमारे साथ ये किस तरह का धोखा हो रहा है।

अंग्रेजी कहाँ–कहाँ से हटे

सबसे पहले अंग्रेजी हमारी शिक्षा वयवस्था से हटे। इसके बाद सेना से हटे, अदालतों से हटे, शासन व्यवस्था से हटे, शीर्ष वैज्ञानिक संस्थाओं से हटे, शीर्ष कृषि संस्थाओं से हटे, रोजाना काम आने वाली वस्तुओं का निर्माण करने वाले कारखानों से हटे।

हम सभी लोग भी अंग्रेजी को अपने दैनिक जीवन से हटायें। इसकी शुरूआत यहाँ से करे कि अपने बच्चों के नाम अंग्रेजी नामों पर जैसे टिन्कू, रिन्कू, डिम्पल, बबली, डबली आदि न रखें। उन्हें Rain rain go away जैसे विदेशी कविताऐं न सिखाएं क्योंकि भारत कृषि प्रधान देश है जो बारिस पर निर्भर है। अंग्रेजी में बिल्कुल भी बातचीत न करें। अगर अंग्रेजी बोलते भी हैं और उसमें गलती हो जाय तो शर्मिंदगी महसूस न करें क्योंकि अंग्रेजी हमारी मातृभाषा नहीं है। हाँ, अगर मातृभाषा हिन्दी को बोलने या पढ़ने में गलती हो तो हमें अपने आप पर शर्म आनी चाहिए। इसी के साथ मैं चाहूँगा कि केवल हम हिन्दी सप्ताह या दिवस मनाकर हिन्दी को बाकी पूरे साल न भूलें बल्कि उसे अपने दैनिक जीवन में अपनाएं भी।

"जय हिन्द, जय भारत"

★★★

कैसे अपनी जीवन शैली में सुधार लायें?

– चिन्मय गर्ग
तकनीकी अधिकारी, डिजाईन ग्रुप

लोग अपने तरीके से अपनी जीवन शैली में सुधार कर सकते हैं। यह लेख आपको अपने व्यस्त और तनावपूर्ण जीवन शैली में सुधार करने में मदद कर सकता है। आप कुछ चरणों का उपयोग कर अपने तनाव ग्रस्त जीवन और चिंता से छुटकारा पा सकते हैं। यह हो सकता है कि उससे आपकी वर्तमान स्थिति न बदले या आप अपनी परेशानियों से मुक्त न हों, लेकिन आप उन्हें एक उचित तरीके से संभाल सकते हैं और उचित निर्णय ले सकते हैं। आज की दुनिया में मानव की जरूरत है कि वह अपनी जीवन शैली में सुधार करे।

1. **जल्दी उठोः** यह पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है जिससे आप अपने मूड को बदलने में मदद कर सकते हैं। बस समय तय करिए और सुबह के लिए अपनी अलार्म घड़ी को सेट करिए। कोशिश करें प्रातः 6:00 या 06:30 बजे उठें और अपने घर के बाहर वातावरण को देखने की कोशिश करें। सूर्योदय और प्रकृति का आनंद लें।

2. **दो गिलास गर्म पानी पीयें:** उठने और दन्त मंजन करने के बाद दो गिलास गुनगुना पानी पीयें। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है कि इससे आपके पाचन तंत्र में सुधार होता है।

3. **टहलने के लिए जायें:** सुबह 30–40 मिनट टहलने की लिए बचाएँ। आप हल्का व्यायाम भी कर सकते हैं, यह कैलोरी जलाता है और neurochemical (एंडोर्फिन) की मस्तिष्क में वृद्धि करता है, और स्वाभाविक रूप से आपके तनाव के स्तर को कम करने में मदद करता है।

4. **भारी नाश्ता लें:** फल, दूध, चाय, कॉफी, फलों के रस, सलाद, गेहूं की रोटी या पराठा आदि के रूप में स्वस्थ और भारी नाश्ता लें। भारी नाश्ता दिन भर अधिक ऊर्जा देता है।

5. **काम के समय काम, खेल के समय खेल:** जीवन में इस नीति का पालन करें। जब आप काम करते हैं, सिर्फ उस पर ध्यान केंद्रित करें। जब आपके पास समय है तब सकारात्मक विचारों को सोचने की कोशिश करें। यह आपके जीवन के नज़रिए मैं एक आशावादी दृष्टिकोण दे सकता है।

6. **अपने आप में विश्वास करो:** प्रत्येक समस्या के लिए एक समाधान खोजने का प्रयास करें। शुरुआत में यह हो सकता है कि आप सही समाधान प्राप्त करने में असमर्थ रहें, लेकिन इससे आपके आत्मविश्वास में सुधार होगा जोकि आपके अपने निर्णय लेने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात है।

7. **मुस्कुराएं :** हर व्यक्ति को हर समय खुश नहीं किया जा सकता है। लेकिन, आप अपने हास्य की अच्छी भावना के साथ एक मुस्कान खोजने की कोशिश कर सकते हैं। हँसी आपके तनाव हार्मोन के स्तर को घटाती है जैसे – कोर्टिसोल, एपिनेफ्रीन (एड्रेनालाईन) डोपामाइन और वृद्धि हार्मोन, इसी तरह मुस्कराहट आपके तनाव हार्मोन के स्तर को कम कर देती है। यह एक antidepressant की तरह काम करती है।

8. **पुस्तकें पढ़ें:** यदि आपका मन मुक्त है तो अच्छे या बुरे विचार स्वाभाविक रूप से आपके मन में प्रवेश कर सकते हैं। पढ़ने की आदत आपके विचारों को सुधारती है। इसके अलावा, पहेलियों को सुलझाने की कोशिश करें।

9. **अपनी रूचि खोजें:** आपकी कम से कम एक रूचि होनी चाहिए। यह लगता है 'रूचि' एक बहुत ही सरल शब्द है, लेकिन इसमें विचारों को बदलने की शक्ति है। रूचि आपके मन को बदलने में सहायक सिद्ध होती है।

10. **हल्का डिनर लें :** रात में मानव शरीर ज्यादा कैलोरी जला नहीं सकता। इसीलिए हमें अधिक ऊर्जा की आवश्यकता नहीं है। भारी भोजन से बचें, जिससे हमें बेहतर नींद आती है।

11. **समय पर सोएं :** सोने का सही समय निश्चित करें। 7–8 घंटे की नींद आपके दिमाग को आराम देने के लिए आवश्यक है। जब आपको जल्दी उठना है, तो आपको निश्चित रूप से जल्दी सो जाना होगा।

★★★

हिन्दी भारत की अधिकांश जनता द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

जीवन की यात्रा दिल्ली होकर

– रवि शंकर राय
मैनेजमेंट फेकल्टी, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट

जब–जब जीवन के पथ पर
आगे को बढ़ता है, पथिक
सामना होता है समस्याओं
से और अधिक।

पर नदियों की भाँति जिसने
धरती को चीर कर चलना सीखा है
उसी के जीवन का श्रेय और
मृत्यु पर श्रेया है।

बारहवीं पास की उसने
सपने थे उज्जवल भविष्य की आँखो में
गुरूओं ने सिखाया था, सपने सच
करने की शक्ति है तुम्हारी ही बाँहो में।

इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उसने
जीवन की दिशा चुनी थी
इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा का
केन्द्र राजधानी दिल्ली थी।

न गाँव था न शहर था, एक कस्बा
छोटा सा, जहां पर वो रहता था
गिल्ली डंडा और कबड्डी जैसे
खेलों का खिलाड़ी खुद को कहता था।

बारी आई दिल्ली जाने की माता–पिता
के सामने हाथ जोड़े खड़ा था
घर से इतनी दूर अकेले जाने की दिल में
झिझक थी पर आँखों में विश्वास भरा था।

आँसू जो बह जाते हैं वो हो जाते
हैं पानी समझो उसको जो न छलके
पिता की आँखों में था विश्वास, पर
माँ की आँखों में वही आँसू झलके।

8:30 की परीक्षा थी परीक्षा केन्द्र
था आर. के. पुरम के क्षेत्र में
धन्य है भारतीय रेल जिसने सुबह
6:00 बजे उतारा प्लेटफार्म न0 8 में।
अपने झिझके हुए कदमों से वो
रेल के डिब्बे से बाहर निकलता है
सामने स्टेशन पर पीले बोर्ड पर काले
अक्षरों में नयी दिल्ली लिखा पढ़ता है।
दिल थोड़ा घबराते हुए कहता है
"ये शहर बड़ा है और तू अकेल खड़ा है"
पर दिमाग समझाता है, समस्याएं
जो हो, मनुष्य वही है जो उनसे लड़ा है।
सी.एन.जी. लिखित हरे रंग की ऑटो की
तरफ वो बढ़ता है
लेकिन उनका किराया सुनकर
बसों का रूख करता है।
बस की खिड़कियों से दिखती इमारतें
शहर के बड़े होने का एहसास कराती हैं
बस के अन्दर के लोग बातों से
उसे छोटे होने का एहसास दिलाती हैं।
पूछ–पूछ कर लोगों से वो पा जाता है
पथ अपने मंजिल की
परीक्षा के बाद अब संघर्ष थी
450 रु. में 3 दिनों तक रहने की।
था शहर नया लोग अनजान थे
और गर्मी ने किया बेहाल था।
पर गलती से जहां वो बस से उतरा
सामने सफदरजंग अस्पताल था।
कुछ सोचकर तय किया कि वो
वापस स्टेशन जाएगा
अगर वहां पर कुछ न मिले तो
स्टेशन पर ही रात बिताएगा।

बहुत प्रयास के बाद वहां 60 रु की
Dormitory पायी
वहां भारत के हर कोने से आए
लोगों के साथ दो रातें बिताई।

वापसी का टिकट भी Waiting में था।

बस में मजाक में ही एक यात्री से पूछा
'भाई वापसी का टिकट Confirm कैसे हो'
उसने मुँह घुमाकर बोला
'जाकर रेलमंत्री से मिलो।'
अब तक दिल्ली ने उसके दिल में
बहुत आत्मविश्वास भरा
बिना कुछ सोचे वो फिर
रेलमंत्री के घर की ओर चला।

बहां पहुँच कर बहुत विश्वास से
रेलमंत्री के PA से मिला
अपना परिचय और PNR No. देकर
टिकट Confirmation का वादा लिया।
अब उसमें न झिझक थी, न शर्म
और न था, हृदय में कोई विकार
उसने अकेले ही घूमा दिल्ली
इंडिया गेट, लाल किला और ऊँचा कुतुब मीनार।

वापस घर पहुँचा तो माँ की आँखों में
थे आँसू और पापा की आँखों में हर्ष
आँसू थे ममता के, पर हर्ष क्योंकि
उसने जीता जीवन का एक संघर्ष।
तो प्यार करो कठिनाइयों से
ये मनुष्य को मजबूत बनाती हैं
कठिन है किस कठिनाई के लिए तोड़
पाना मनुष्य के धैर्य को
ये कविता हमें यही सिखाती है।

★★★

मुझे पुकार लो

– राजेश श्रीवास्तव
ई.आर.पी. एनालिस्ट, एस.ए.पी. इम्पलीमेंटशन

मुझे पुकार लो
इसलिए खड़ा रहा कि तुम पुकार लो।

ज़मीन है न बोलती न आसमान बोलता,
जहान देखकर मुझे नहीं जबान खोलता,
नहीं जगह कहीं जहां न अजनबी गिना गया,

कहां–कहां न फिर चुका दिमाग–दिल टटोलता,
कहां मनुष्य है कि जो उम्मीद छोड़कर जिया,
इसीलिए खड़ा रहा कि तुम पुकार लो।

तिमिर–समुद्र कर सको न पार नेत्र की तरी,
विनष्ट स्वप्न से जहां, विषाद याद से भरो,

न फूल भूमि को मिला, न कोर भोर को मिली,
न कट सकी, न घट सकी विरह–धिरी विभावरी,

कहां मनुष्य है जिसे कमी खली न प्यार की,
इसीलिए खड़ा रहा कि तुम मुझे दुलार लो।
इसीलिए खड़ा रहा कि तुम पुकार लो।

उजाड़ से लगा चुका उमीद में बहार की,
निद्ध से उम्मीद की बसंत के बयार की,

मरूस्थली मरिचिका सुधामय मुझे लगी,
अंगार से लगा चुका उम्मीद में तुषार की,

कहां मनुष्य है जिसे न भूल शूल–सी गड़ी,
इसीलिए खड़ा रहा कि भूल तुम सुधार लो।

इसीलिए खड़ा रहा कि तुम मुझे पुकार लो।
पुकार कर दुलार लो, दुलार कर सुधार लो।।

★★★

विचार तंत्र के दस तत्व

– गौरव गोत्रा
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

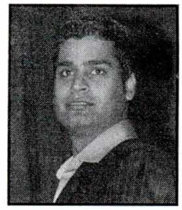

जो व्यक्ति अपने मस्तिष्क पर पूरा अधिकार पा लेता है वह किसी भी चीज पर अधिकार पा सकता है।

विचार तंत्र (सिस्टम) के दस तत्वः– मस्तिष्क दस तत्वों के माध्यम से कार्य करता है। इनमें से कुछ स्वचालित हैं जबकि बाकियों को इच्छाशक्ति से दिशा देनी पड़ती है। इस काम के लिए आत्म अनुशासन ही एक मात्र साधन है। ये दस तत्व हैं:

1. असीम बुद्धि (Infinite Intelligence)
2. मस्तिष्क – इसके दो खंड हैं – चेतन और अवतेचन (Conscious and Sub Conscious Mind)
3. इच्छा शक्ति – यह मस्तिष्क के सभी विभागों की मुखिया है।
4. तर्क शक्ति – यह चेतन मस्तिष्क की न्यायाधीश है जो सभी विचारों, योजनाओं और इच्छाओं पर अपना निर्णय सुनाती है।
5. भावनाओं की शक्ति – यह मस्तिष्क के अधिकांश कार्यो का स्रोत है। सबसे महत्वपूर्ण और सबसे खतरनाक भावनायें हैं – डर की भावना और प्रेम का भाव।
6. कल्पना शक्ति – यह वह कार्यशाला हैं जहां सभी इच्छाएं, विचार, योजनायें और उद्देश्य आकार लेते हैं और बनते हैं साथ ही उन्हें साकार करने के साधन भी यहीं बांटे हैं।
7. अंतरात्मा की शक्ति – यह मस्तिष्क की नैतिक मार्गदर्शक है।
8. छठी इन्द्रिय (Sixth Sense) – यह मस्तिष्क का प्रसारण केन्द्र है जिसके द्वारा व्यक्ति विचार के कम्पन भेजता है और प्राप्त करता है। जिसे टेलीपैथी कहते हैं।
9. स्मरण शक्ति – यह मस्तिष्क की 'फाइलिंग कैबिनेट' है। जहाँ सभी विचार, आवेग, अनुभव और शरीर की पांचों इन्द्रियों के माध्यम से पहुँचने वाली सभी अनुभूतियां एकत्रित की जाती हैं।
10. पाँच शारीरिक इन्द्रीयां – ये मस्तिष्क की शारीरिक भुजायें हैं। जिनके द्वारा यह बाहरी दुनिया से सम्पर्क करता है।

★★★

रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता

– राजेन्द्र सिंह
वरिष्ठ कार्यकारी सहायक,
कार्यकारी निदेशक कार्यालय

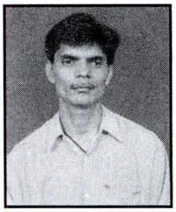

लिखना शुरू करने से पहले मेरे मस्तिस्क में एक सवाल आ रहा है कि क्या रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता दो अलग–अलग शब्द हैं? फिर मैं सोचता हूं कि अगर अलग–अलग नहीं होते तो इनमें से एक शब्द की शुरूआत ही नहीं होती। आम तौर पर हम ये समझते हैं कि मानव द्वारा निर्मित चित्रकलाएं संगीत, साहित्य दोनों काल्पनिक और तथ्यात्मक वस्तुएं, सभी वास्तुविद्याएं और चमत्कारी तकनीकें रचनात्मक हैं एवं वे व्यक्ति जो इस निर्माण में शामिल हैं जैसे चित्रकार, संगीतकार, लेखक, साहित्यकार इत्यादि सृजनात्मक हैं। हम इससे सहमत भी रहते हैं। लेकिन कभी–कभी हमारे भाव बदल जाते हैं और हमें ये परिभाषाएं किसी तथाकथित रचनात्मक व्यक्ति के निजी विचार जान पड़ते हैं। क्या आप भी इससे सहमत हैं? मानव द्वारा निर्मित सभी ऐतिहासिक भवन एवं धार्मिक स्थल जैसे कैथेड्रल स्कूल, मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारा एवं गिरजाघर काफी खूबसूरत हैं इनमें से कुछ तो असाधारण भी हैं। मुझे मालूम नहीं कि आप सभी ने ये सभी स्थल देखे हैं या नहीं। हां अगर आपने देखे हैं तो आप खुद अहसास करेंगे कि ये सभी चमत्कारी एवं प्रशंसनीय भवन हैं एवं इनको देखते रहने का मन करता है। दुर्भाग्यवश वे सभी महान निर्माता विभूतियां जिन्होंने इनका निर्माण किया वे गुमनाम हैं। हमें पता भी नहीं कि इनका निर्माण किया किसने। इसका मतलव यही निकलता है कि उन महान व्यक्तियों की चिन्ता केवल इन ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों के निर्माण तक सीमित थी न कि उसके पीछे अपना नाम खुदवाने व अपना नाम अमर करने की। लेकिन आज के युग में इस प्रकार की गुमनामी लगभग खुद ही गुमनाम हो चुकी है। शायद ऐसी गुमनामी के गुमनाम होने की प्रक्रिया से ही एक विभिन्न रचनात्मकता का जन्म हुआ है जो सफलता एवं अर्जित सम्पति पर आधारित नहीं है। हमें मालूम है कि कई ऐसे वक्ता, निर्माता, रचनाकार, कलाकार एवं लेखक हैं जो गुमनामी पसन्द करते थे। वे अपनी रचना के साथ अपने नाम को जोडने को एक उपद्रव एवं बकवास मात्र समझते थे। उन्होंने पर्दे के पीछे से अपनी आवाज एवं रचना बुलन्द की। लेकिन धीरे–धीरे ऐसी गुमनामी भी बेतुका साबित होती जा रही है। सत्य है कि बिना नाम की वस्तु धीरे धीरे विलुप्त हो ही जाती है।

गुमनामी पसन्द रचनाकारों का अपना एक विशेष महत्व था। उनकी अपनी एक गुणवत्ता थी कि किसी भी प्रकार के निर्माण में इन रचनाकारों का कोई निजी उद्देश्य, निजी राय, एवं निजी मनोभाव नहीं था। यह स्वतन्त्रता का एक भाव था जिसके सहारे रचनाकार अपना कार्य कर रहा था। यह भी उल्लेखनीय है कि न केवल ज्यादातर बल्कि सभी रचनाएं मानव द्वारा निर्मित हैं। यह तथ्य भी नहीं झुटलाया जा सकता है कि किसी भी वस्तु की रचना ज्ञात स्रोत से ही होती है। अगर हम किसी लेखक के लेख को उस लेखक की रचना कहते हैं तो यह प्रश्न उठता है कि उस लेखक को लेख शब्द का बोध कैसे हुआ। अगर हम कहते हैं कि लेखक ने लेख शब्द किसी वर्णमाला से लिया तो फिर हमें यह कहने का हक भी नहीं है कि उस लेखक का यह लेख एक रचना है। यह तो एक प्रतिलिपि मात्र है। बीथोवन और बैक जैसे महान संगीतकारों को भी संगीत के शिखर पर पहुंचने के लिए ज्ञात स्रोतों का ही सहारा लेना पडा। बड़े–बड़े लेखक एवं दार्शनिकों ने भी कई अध्ययनों, स्थान परिवर्तनों एवं मसौदों के उपरान्त सामग्री एकत्रित करने के बाद ही अपना अंतिम लेख तैयार किया। हां ये अवश्य रहा कि उन्होंने उस लेख को कुछ

कुछ हद तक अपनी शैली दी। लेकिन यह कहना गलत होगा कि वह लेख उस लेखक की स्वयं की रचना थी। यहीं से संशय की स्थिति पैदा हो जाती है। फिर यह प्रश्न हमें परेशान करता है कि क्या वे सभी व्यक्ति जिन्होंने अपना नाम गुमनाम रखा वे महापुरूष थे या उन्होंने इस गुमनामी को इसलिए अपनाया कि कोई इस मुददे पर बात भी न कर पाए कि यह रचना किस की है एवं इसका मुख्य स्रोत क्या है ऐसे प्रश्न ही पैदा न हो पाएं।

इसे समझने हेतु हमें कुछ विस्तार में जाना पड़ेगा। कोई भी कार्रवाई हो या किसी भी प्रकार का जीवन उसमें कभी कभी एक विशेष प्रकार की गति या कम्पन होती है। वह गति एक अनोखी गति होती है जो ज्ञात स्रोत से परे होती है। जिसको हम अपने उस क्षण विशेष में अपने मस्तिष्क की रचना कह सकते हैं। यह क्षणिक रचना न तो जीवन की खलबली से और न ही किसी सामाजिक आर्थिक दबाव से प्रेरित या बोझिल है। इस रचना को हम क्षणिक रूप से ज्ञात स्रोत से मुक्त कर सकते हैं। ऐसी रचनात्मक गति या आवेग पैदा होने के पश्चात ही ज्ञात स्रोत का सहारा लेती है। स्वाभाविक है कि ऐसी गति या आवेग मात्र को हम सृजनात्मकता नहीं कह सकते हैं।

क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि हमारा सम्पूर्ण वैज्ञानिक विश्व, ज्ञान स्रोत, मानव कलाएं एवं सारे लेखन एक बिन्दु विशेष, एक विशेष प्रतिभा एवं एक विशेष प्रतिभा से आगे की ब्याख्या करते हैं। जो भी आज हमारे सामने नया दिखाई दे रहा है वह इन सभी प्राचीन उपस्थित स्रोतों का पूरी हद तक शोषण मात्र है। यह बात जरूर है कि इस संसार की कुछ चमत्कारी वस्तुएं हमारी पहुंच से बाहर होती हैं इसलिए हम आम इंसान इसकी प्रशंसा करते रहते हैं एवं उनकी पूजा तक शुरू कर देते हैं। यही कारण है कि इन चीजों का महत्व और बढ़ता जाता है।

यह भी सत्य ही है कि न केवल विशेषज्ञ बल्कि सभी पेशेवर सभी प्रतिभाशाली व्यक्तियों के पास जीवन में कई बार एक असाधारण मस्तिष्क कार्य करता है जो सभी जीवन की खलबली और सभी सामाजिक/आर्थिक दबावों से परे है। इस क्षणिक बदलाव के दौरान हम कई असाधारण कार्य तो कर सकते हैं लेकिन पुनः वे सारे कार्य किसी स्रोत से प्रेरित होते हैं। क्योंकि हमारी यह क्षणिक समझदारी स्वस्थ मन एक विभिन्न सोच को जन्म देती है क्योंकि इस दौरान हम किसी स्रोत का सहारा लेते तो जरूर हैं लेकिन वे स्रोत उच्च कोटि के होते हैं। पुनः यह बात में स्पष्ट करना चाहूंगा कि यह रचनात्मकता तो है लेकिन सृजनात्मकता नहीं।

उपरोक्त से यही निष्कर्ष निकलता है कि भगवान द्वारा निर्मित मानव सृजनात्मक तो हो सकता है लेकिन रचनात्मक नहीं हो सकता है। मानव तो खुद ही आकारहीन एवं विश्वब्यापी परमपिता की एक रचना मात्र है। इसलिए न तो मानव रचनात्मक हो सकता है न ही इसको रचनात्मक कहना उचित है।

आशा करता हूं कि उपरोक्त लेख आपके मन में बसे रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता के भ्रम को समाप्त करने में सहायक होगा।

★★★

देश का डर

– गजेन्द्र सिंह
कार्यालय सहायक, डेटा सेंटर

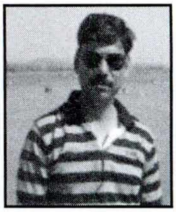

"चल जाग मुसाफिर होश में आ,
किस बात से तू यूँ डरता है,
जो देश बनाया तेरे अपनो ने,
उसमे क्यूँ घुट–घुट मरता है"

"देख हाल सुनाऊं मैं तुझको,
जो अब तक हम पर बीती है,
एक आग में कब से झुलस रहा,
गंदी यहाँ अब हर एक नीति है"

"कहीं चोरी, सीना ज़ोरी है,
कहीं जेब पे तेरी डाका है,
तू मेहनतकश सबके पेट भरे,
घर फिर भी तेरे फाका है"

"कहीं चोर छुपा है चद्दर में,
कहीं चोर ही खद्दर धारी है,
जिस एक को चुन भेजा लाखों ने,
क्यूँ वो एक ही लाखों पे भारी है"

"प्रतीक है जो देश की गरिमा का,
दंगा उसमे अब यहाँ चलता है,
अपने तो भूख से बिलख, तड़प रहे,
और आतंकी बिरयानी पर पलता है"

"दिन में एक ओर जहाँ जूतम पैजार दिखती है,
फिर रात को भरी मस्ती में कोई भंवरी देवी लुटती है,
छोड़ अनाज को लोग यहाँ अब इंसान को ही खाते हैं,
तोड़ ग़रीबों का छप्पर ताज महल बनवाते हैं"

"अब जाग ज़रा और बाँध कमर,
अगर देश को फिर से पाना है,
बना हर एक को पाँच पांडव सा,
अगर कौरव को मार भगाना है"

★★★

कुर्सी दौड़

– प्रिया
कार्यालय सहायक, सामग्री प्रबंधन

बचपन मे मैंने जिस खेल को देखा था, खेला भी था, अब उसका महत्व समझ आ रहा है कि इस खेल का कितना महत्व है। उस खेल का नाम है – कुर्सी दौड़। कुर्सी दौड़ में जितनी कुर्सियां होती हैं उनसे दौड़ने वाले अधिक होते हैं। रेफरी की विसिल पर दौड़ने वाले कुर्सियां लूटते है, किंतु एक व्यक्ति बेचारा कुर्सी से वंचित रह जाता है। इस प्रकार प्रत्येक राउंड में एक कुर्सी कम हो जाती है। साथ ही दौड़ने वाले भी कम हो जाते हैं।

अंततः सिर्फ एक कुर्सी होती है और दौड़ने वाले कई होते है, किन्तु जो सबसे दक्ष होता है, चालाक होता है वही आखिरी कुर्सी पर बैठता है। बाकी सभी आऊट होते हैं। संभवतः इस कुर्सी दौड़ में हमारे राजनेता बचपन से प्रवीण होते रहें होंगे, जो बुढ़ापे तक उस अभ्यास का फायदा उठाते रहते हैं। कुर्सी का प्रचलन आज अपने चरम पर पहुंचा है। कुर्सी का इतिहास समय के साथ–साथ बदलता, निखरता और संवरता आ रहा है। आदिमानव जो शायद सबसे पहले मिट्टी की ही कुर्सी बना खुश होता रहा होगा। पाषाण युग का मनुष्य पत्थरों की कुर्सीयां बनाकर इतराता रहा होगा। काष्ठ युग का मानव लकड़ी की कुर्सी बनाकर प्रसन्न हुआ होगा। लौहयुग में लोहे की कुर्सी बनाकर मनुष्य अपने विकास की यात्रा का परिचय देते हुए मुस्कुरा रहा होगा। आगे कुर्सी की यात्रा कहां तक जाएगी भगवान जाने।

राजा महाराजा लोगों की कुर्सी सिंहासन तो सोने चांदी की भी बनती रही है। काष्ठ कला के विकास के सफ़र में कुर्सियों की नक्काशी, रजवाड़े, नवाबों के यहां आज भी देखने को मिलेगी। बस देखते रह जाओगे। रंगों पर भी कितना शोध और अनुसंधान हुआ होगा। उन सभी रंगों से भी इनको सजने का अवसर मिला होगा। फाइवर की लाल, हरी, नीली इत्यादि रंगों की कुर्सियां किसके चित्त को आकर्षित नहीं करती।

कुर्सी को लेकर किस्से, कहानी, फिल्में, मुहावरे भी बने और पूरे समाज में कुर्सी ने गर्व से अपना मस्तष्क ऊंचा उठाया। कुर्सी पर कितने मुहावरे बने यथा कुर्सी तोड़ना, कुर्सी बदलना, कुर्सी हथियाना, कुर्सी से चिपकना इत्यादि।

आज कुर्सी का स्थान इतना ऊंचा हो गया है कि बिना कुर्सी के कोई अस्तित्व ही नहीं है। जैसा व्यक्ति, वैसी कुर्सी, क्या गांव – क्या शहर, क्या पढ़ा लिखा – क्या अनपढ़, क्या अमीर – क्या गरीब सभी के घर दो चार कुर्सी आवश्यक हैं। जिनके पास दो–चार कुर्सी नहीं है वह असभ्य, गंवार असमाजिक और पिछड़ी श्रेणी में गिना जाता है। यदि किसी के दरवाजे पर कोई मेहमान पहुंचता है और वह कुर्सी पर नहीं बैठ पाता तो अपने भाग्य को कोसता है। रोता है, हीन भावना से वशीभूत घर से बाहर निकलना नहीं चाहता। अतिथि को भी यदि कुर्सी नहीं मिली तो वह भी मन ही मन अपना अपमान महसूस करता है कि एक कुर्सी भी नहीं मिली बैठने के लिए।

समाज को वर्तमान में टेंट हाऊस वालों का बड़ा उपकार मानना चाहिए। जो बेचारे भाड़े पर ही सही, अमीर–गरीब को विशेष अवसरों पर जैसे – पर्व, त्योहार, विवाह आदि में कुर्सी पर बैठा देते हैं। यहां तक कि खाना–पीना भी कुर्सियों पर ही हो रहा है। कुर्सी और मेज पर बैठकर खाने में भी आनन्द है। सबसे पते कि बात तो यह है कि बेचारा जूता जो भोजन करते समय किसी कोने या किनारे पाकर अपने भाग्य को कोसता है, रोता है, कुर्सी पर बैठकर खाने वाले के साथ अपने को सराहता, अपने भाग्योदय पर इठलाता और मन ही मन बुदबुदाता होगा कि में अब अछूत नहीं पवित्र हो गया हूँ। साथ ही कुर्सी को धन्यवाद देता होगा।

हमारे पड़ोसी एक भद्र पुरूष हैं जो कुलीन और धर्म परायण हैं। किसी भी कार्य को नियम से करते हैं। धर्म काण्ड के पंडित, रामायण, गीता के नियमित पाठक बिना स्नान किए अन्न जल ग्रहण नहीं करते, पूरा समाज उन्हें सम्मान देता है, प्रणाम करता है, चरण छूकर आर्शीवाद लेता है। किन्तु जब वह किसी भी कार्यालय में जाते हैं तो कुर्सी पर आसीन बाबुओं से लेकर अफसरों तक को प्रणाम करने में भी ज़रा भी संकोच नहीं करते। साथ ही, उनके दोनों हाथ जुड़े होते हैं। हमने पूछा महानुभाव, आप इन बाबुओं से योग्य हैं, ऊंचे कुल में जन्में हैं, श्रेष्ठ हैं, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, मैं कुर्सी को प्रणाम करता हूँ। व्यक्ति को नहीं क्योंकि व्यक्ति आते जाते रहते हैं। किन्तु कुर्सी सदा स्थिर रहती हैं, शाश्वत।

कुर्सियां बैठने के साथ–साथ औजार, अस्त्र का कार्य करने लगी हैं लोकसभा, राजसभा, विधानसभा में बहस के क्रम में कुर्सी बड़ी ही उपयोगी सिद्ध हुई है। कुर्सियों का प्रहार भी आम बात बनती जा रही है। लोग भी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को कुर्सी छीनने की बात–बात में धमकी देते रहते हैं। अपने अर्दली को कुर्सी चलाकर अपना रोब और प्रभाव दिखाने में गर्व महसूस करने लगे हैं। इस कुर्सी दौड़ में जो जितना ही आगे है, वह उतना ही सम्मानित, मर्यादित और प्रतिष्ठित महामानव है। मैं भी सोच रही हूँ कि इस मंहगाई डायन में आवश्यक खर्चों में कटौती करके एक दो कुर्सी अवश्य खरीद लाऊं।

कुर्सी रे कुर्सी तेरी लीला
कुर्सी के बगैर रहे सब कुछ अधूरा
तेरे समक्ष बिन नतमस्तक होवे नहीं कोई काम पूरा
देखें तेरे रूप अनेक
आसीन व्यक्ति को दिलावे सम्मान
और सम्मुख को अपमान
कितनी हैं खूबियां तुझमें, कभी अस्त्र बने तो कभी शस्त्र
घर से दफ्तर तक सब जगह तुम हो श्रेष्ठ
कैसा है ये तेरा विधान
जाति धर्म नहीं देखती सबको मौका देती एक समान
तुझे पाकर श्रेष्ठ बन जाते सभी, गरीब हो या धनवान
कुर्सी के बगैर रहे सब कुछ अधूरा।

★★★

सामान्य ज्ञान

– भुबन दास
कार्यालय सहायक, प्राकृत भाषा संसाधन

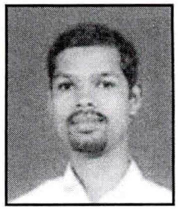

पक्षियों के बारे में

- पक्षियों के कंकाल का भार उनके पंखों से कम होता है।
- एक मुर्गे के शरीर में 75 प्रतिशत पानी होता है।
- शुतुरमुर्ग की आंख का आकार उसके दिमाग से बड़ा होता है।
- शुतुरमुर्ग के अंडे का भार साढ़े तीन पाउंड होता है।
- कोकाटूस और मकाऊ सबसे बड़े तोते हैं ये 75 साल तक जीते हैं।
- विश्वभर में तोते की 328 प्रजातियां पाई जाती हैं।
- चॉकलेट तोते के लिए जहर समान होती है।
- हमिंग बर्ड अकेला ऐसा पक्षी है जो विपरीत दिशा में उड़ सकता है।
- हमिंग बर्ड का दिल एक मिनिट में 615 बार धड़कता है।
- उल्लुओं के दांत नहीं होते।
- मादा उल्लू नर उल्लू से आकार और भार में बड़ी होती है।
- बाज के पंख एक हवाई जहाज के पंख से ज्यादा शक्तिशाली होते हैं।
- उत्तेजित होने पर टर्कि अपने सिर का रंग बदलती है।
- कबूतर पराबैंगनी किरणों को देखने में सक्षम है।
- हम सामान्यतः पक्षियों के झुंड को वी अक्षर के आकार में उड़ते हुए देखते हैं। ऐसा करने से उन्हें ऊर्जा बचाने में सहायता मिलती है।
- कीवी विश्व का अकेला ऐसा पक्षी है जिसके पंख नहीं होते।
- आर्कियोप्टेरिक्स सबसे पुराना पक्षी है।
- ऑस्ट्रेलियाई पेलिकन की चोंच सारे पक्षियों में सबसे बड़ी होती है।
- बाज की नजर बहुत पैनी होती है, वह 1 मील की ऊंचाई से चूहे की स्थिति को सही–सही देख सकता है।
- कौवे अन्य जंतुओं की आवाज की नकल करने में सक्षम होते हैं।
- सूटी टर्न ऐसा पक्षी है जो लगातार 34 घंटे उड़ सकता है।

ब्लू व्हेल के बारे में

- पृथ्वी पर पाए जाने वाले प्राणियों में ब्लू व्हेल सबसे बड़ी है।
- इसका दिल एक कार के जितना ही बड़ा होता है।
- और इसकी जीभ एक हाथी की लंबाई जितनी लंबी होती है।
- इसके द्वारा निकाली जाने वाली ध्वनि सबसे तेज ध्वनि है।
- यह अपने फेफड़ों में एक बार में 5000 लीटर हवा को एकत्रित कर सकती है।
- इतना ही नहीं बड़े शरीर के बावजूद यह 30 मील प्रति घंटे की रफ्तार से तैर सकती है।

जिराफ के बारे में

- ये तो सभी जानते हैं कि जिराफ दुनिया का सबसे ऊँचा जानवर है।
- पर क्या आप यह जानते हैं कि इसकी जीभ भी बहुत लंबी होती है।
- जिराफ की जीभ की लंबाई 21 इंच है।
- अपनी लंबी जीभ से जिराफ अपने कान भी साफ कर सकता है।
- सारी दुनिया में केवल जिराफ ही एक ऐसा प्राणी है जिसके जन्म से ही सींग होते हैं।
- नर–मादा दोनों के ही माथे पर हड्डी जैसे दो मूठ होती हैं जो इसके सींग कहलाते हैं।

***

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ।
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

संस्मरण

– गजेन्द्र सिंह
कार्यालय सहायक, डेटा सेंटर

"बेटा तुम्हारा फ़ोन बज रहा है' पापा की आवाज ने मुझे फोन की बजती घंटी का अहसास कराया। फोन पर किसी की याचना भरी आवाज थी, "मैडम उन्होंने लड़की को जला के मार डाला, लड़की के गरीब मां–बाप की कोई नहीं सुन रहा, आप प्लीज थानेदार साहेब को फोन कर दीजिये।" बड़ा बुरा लगा कोई किसी की जान कैसे ले सकता है, थानेदार से बात की तो उन्होंने मदद का पूरा–पूरा आशवासन दिया। इस बात को कुछ महीने बीत गए। फिर कोई फोन नहीं आया और मैं ये सोच कर की कार्यवाही हो गयी होगी, इस बात को भूल गयी।

जैसे ही मीटिंग ख़त्म हुई किसी जानी पहचानी आवाज ने मेरा ध्यान अपनी ओर खिंचा, चयनिकाजी, अगर समय हो तो एक शादी में शामिल हो जाइए। आपको बड़े प्यार से बुलाया है। "ठीक है चलते हैं" बोल के मैं उठ खड़ी हुई। एक कच्ची झोंपड़ी के सामने हमारी यात्रा का अंत हुआ। गरीब होते हुए भी प्यार और मान में कोई कमी नहीं थी। बूंदी, भुजिया, आलू की सब्जी, पूरी से भरी थाली सामने आई और हमने खाना शुरू किया। तभी परिवार के मुखिया ने बोला 'मैडम आपने निमंत्रण का मान रखा, उसके लिए धन्यवाद'। 'आपने इतने आग्रह से बुलाया था तो आना ही था 'मैंने उन्हें विन्म्रतापूर्वक जवाब दिया। 'अरे बुलाते कैसे नहीं आपकी वजह से ही तो हमारी बेटी का केस सुलझा पाया है'। 'कौन सा केस मैंने पूछा। 'वही जिसे उसके ससुराल वालों ने जला के मार डाला था' जवाब मिला। 'तो उन्हें सजा हो गयी' बोलते हुए मुझे इन्साफ दिलाने में सकून का अहसास हुआ।' नहीं मैडम। आपके प्रयास से पुलिस सक्रीय हुई तो ससुराल वालों पे दवाब पड़ा और समझौता हो पाया'। 'समझौता??? कैसा समझौता??? मैंने आश्चर्य से पूछा। 'मैडम बेटी के छोटे छोटे दो बच्चे थे। अगर उसके पति, ससुर और सास को सजा हो जाती तो उनको कौन पालता। इसलिए हम अपनी छोटी बेटी की शादी उसके साथ कर रहे हैं। आज उसी की शादी है'। सुनकर मेरी आश्चर्य की सीमा नहीं रही। 'आप अपनी ही बेटी के कातिल से अपनी दूसरी बेटी की शादी कैसे कर सकते हैं? मैं लगभग चिल्ला ही पड़ी।' मैडम हम गरीब लोग हैं। व्यवहारिक होना पड़ता है। जो बेटी चली गयी वो तो वापस नहीं आएगी, पर उसके बच्चों की पूरी जिंदगी पड़ी है। हम जब तक जिन्दा हैं तब तक उनका ख्याल रख भी लें पर हम बूढ़े लोगों का कोई भरोसा है, हमारे बाद उनका क्या भविष्य होगा। जो इस दुनिया में नहीं है उसके बारे में सोच कर, जो इस दुनियां में है उनकी जिंदगी तो ख़राब नहीं कर सकते' वो बोलते जा रहे थे और मै यह सोच के हैरान परेशान थी, कि क्या गरीबी इन्सान को इतना मजबूर कर देती है कि इंसान अपने ही बच्चे की लाश पर समझौता करने पर मजबूर हो जाता है। हर निवाला निगलते हुए लग रहा था जैसे कलेजे में कुछ अटक रहा है.....

★★★

सी–डैक, नोएडा द्वारा राजभाषा हिन्दी में किए गए कार्य एवं उपलब्धियाँ

– जे. सी. सेठी
हिन्दी अधिकारी

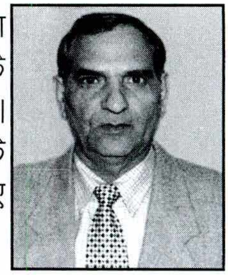

हर कठिनाई को दूर करने का मूल मंत्र है उद्देश्य, ध्येय एवं लगन। इसी बात का परिचायक है सी–डैक, नोएडा में हिन्दी भाषा का प्रयोग। सी–डैक, नोएडा द्वारा संघ के शासकीय प्रयोजनों में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग को शुरू से ही बढ़ावा दिया जाता रहा है। लेकिन, हाल ही के कुछ वर्षो के दौरान सभी वर्गों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों से इसमें उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इस केन्द्र में गत वर्षों के दौरान किए गए कार्यो का ब्यौरा इस प्रकार है:

1. सी–डैक, नोएडा राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। इस समिति की तिमाही बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है। इन बैठकों में राजभाषा नियमों, अधिनियमों, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के विभिन्न प्रावधानों को इस केन्द्र में यथासंभव लागू करने के उपायों पर विचार किया जाता है तथा विभागों एवं स्कूलों को इस संबंध में उपयुक्त दिशा–निर्देश दिए जाते हैं तथा आगामी बैठकों में इस संबंध में आने वाली बाधाओं पर विचार करके उनका समाधान निकाला जाता है।
2. विभिन्न विभागों एवं स्कूलों द्वारा हिन्दी में किए गए कार्यों कीं समेकित तिमाही रिपोर्ट तैयार करके मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भेजी जाती है।
3. छमाही रिपोर्ट नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भेजी जाती है।
4. इस केन्द्र के अधिकारियों द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया जाता व इन बैठकों में लिए गए निर्णयों को इस केन्द्र में लागू करने के प्रयास किए जाते हैं।
5. सचिव स्तरीय केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में लिए गए निर्णयों को लागू किया जाता है।
6. संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्टों के आधार पर राष्ट्रपति द्वारा की गई सिफारिशों को इस केन्द्र में यथासंभव लागू किया जाता है।
7. राजभाषा अधिनियम 1963 व राजभाषा नियम 1976 के विभिन्न प्रावधानों को लागू किया जाता है।
8. राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अन्तर्गत अपेक्षानुसार इस केन्द्र को अधिसूचित कर दिया गया है।
9. हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। जिसके दौरान विभागों एवं स्कूलों के साथ परस्पर विचार–विमर्श करके हिन्दी के काम को बढ़ावा देने के उपाय ढूंढे जाते हैं।
10. हिन्दी न जानने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों का रोस्टर बनाया गया है। तदनुसार, उनको बारी–बारी से प्रशिक्षण दिलाया जाता है।

11. कर्मचारियों को हिन्दी टाइपराइटिंग प्रशिक्षण दिलाया जाता है।
12. कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने की झिझक को दूर करने के उद्देश्य से हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।
13. इस केन्द्र में हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रोत्साहन योजना लागू है।
14. हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन को बढ़ावा दिया जाता है।
15. सी–डैक, नोएडा कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिन्दी प्रतिभा पुरस्कार योजना लागू की गई है।
16. प्रत्येक वर्ष हिन्दी सप्ताह, पुरस्कार वितरण समारोह व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।
17. हिन्दी प्रत्रिका अभिव्यक्ति का वार्षिक प्रकाशन किया जा रहा हैं।
18. कार्यालय आदेश एवं विज्ञापन द्विभाषी रूप में जारी किए जाते हैं।
19. रुटीन पत्र हिन्दी में भेजे जाते हैं।
20. इस केन्द्र द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले लगभग सभी फार्म द्विभाषी रूप में उपलब्ध हैं।
21. लाइब्रेरी में हिन्दी की पुस्तकें उपलब्ध कराई गई हैं।

सी–डैक, नोएडा द्वारा राजभाषा हिन्दी में किए जा रहे उपर्युक्त कार्यो की विभिन्न संगठनों द्वारा समय–समय पर प्रशंसा की जाती रही है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2008–2009 के दौरान इस केन्द्र को हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा द्वारा द्वितीय पुरस्कार एवं शील्ड से सम्मानित किया गया था। अब संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने 30 सितम्बर 2011 को निरीक्षण के दौरान इस कार्यालय द्वारा किए गए कार्यो की प्रशंसा की एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। इस संबंध में प्रशस्ति पत्र की प्रति, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण से संबंधित फोटोग्राफ एवं गत वर्ष के हिन्दी सप्ताह, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुरस्कार वितरण समारोह से संबंधित फोटोग्राफ आगामी पृष्ठों पर देखे जा सकते हैं।

★★★

डॉ0 प्रसन्न कुमार पाटसाणी
संसद सदस्य (लोक सभा)

सत्यमेव जयते

संयोजक
CONVENOR
उपसमिति
SUB-COMMITTEE
संसदीय राजभाषा समिमि
COMMITTEE OF PARLIAMENT ON OFFICIAL LANGUAGE
11, तीन मूर्ति मार्ग,
11, TEEN MURTI MARG,
नई दिल्ली / **New Delhi-110011**

प्रशस्ति पत्र

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप–समिति द्वारा दिनांक 30 सितम्बर, 2011 को प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी–डैक), नोएडा का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण प्रश्नावली में दी गई सूचना के आधार पर सी–डैक, नोएडा द्वारा राजभाषा हिन्दी में किए गए कार्यों और हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी विकास कार्यों का अध्ययन किया गया।

सी–डैक, नोएडा द्वारा किए गए प्रस्तुतीकरण को देखते हुए समिति ने यह पाया कि यह केन्द्र राजभाषा हिन्दी में प्रशंसनीय कार्य करने के साथ–साथ हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित कार्यो का विकास करते हुए उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। इनके द्वारा किए गए कार्यो से न केवल अन्य कार्यालयों को प्रोत्साहन मिलेगाा बल्कि देश के अन्य भाषा–भाषी भी लाभान्वित होंगे। तकनीकी केन्द्र होते हुए भी हर संभव जगहों पर हिन्दी में कार्य किया जा रहा है।

समिति द्वारा इस केन्द्र की प्रशंसा करते हुए आशा व्यक्त की गई कि प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी–डैक), नोएडा भविष्य में भी इस क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान देता रहेगा।

(डॉ0 प्रसन्न कुमार पाटसाणी)

श्री वी. एन. शुक्ला,
निदेशक,
प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी–डैक),
अनुसंधान भवन, सी–56 / 1, सैक्टर–62,
नोएडा–201307

सी–डैक, नोएडा द्वारा हिन्दी में किए कार्यो का निरीक्षण करने के लिए
संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्य।

संसदीय राभभाषा समिति के समक्ष प्रस्तुत करते हुए श्री वी. एन. शुक्ला, निदेशक तथा उनके साथ
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, सी–डैक मुख्यालय व सी–डैक, नोएडा के उअधिकारीगण

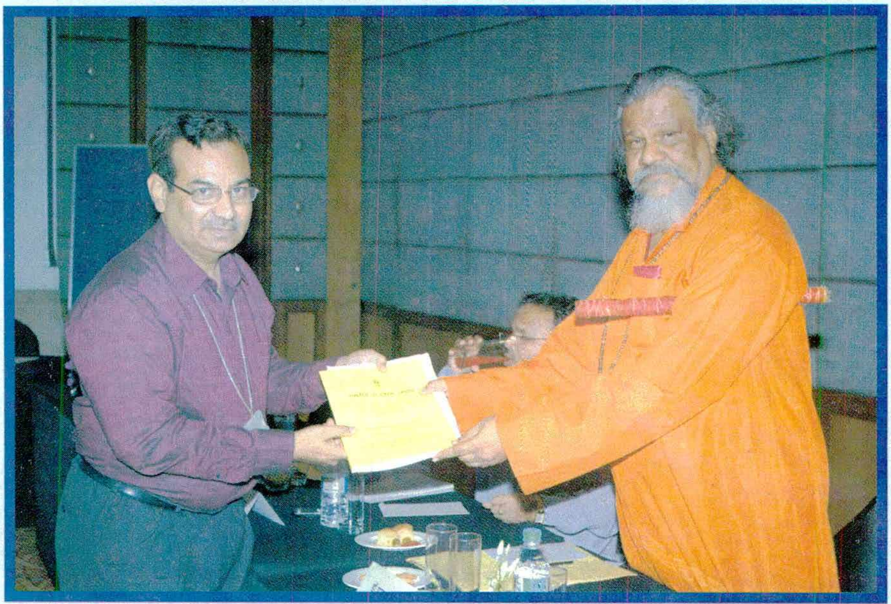

समिति के संयोजक डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी पहले आठ खण्डों पर किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का संकलन श्री वी. एन. शुक्ला को सौंपते हुए।

निरीक्षण के पश्चात सामूहिक फोटो।

हिन्दी सप्ताह 2011 के अवसर पर हिन्दी भाषण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए सी–डैक, नोएडा के सदस्य।

हिन्दी सप्ताह 2011 के अवसर पर हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी।

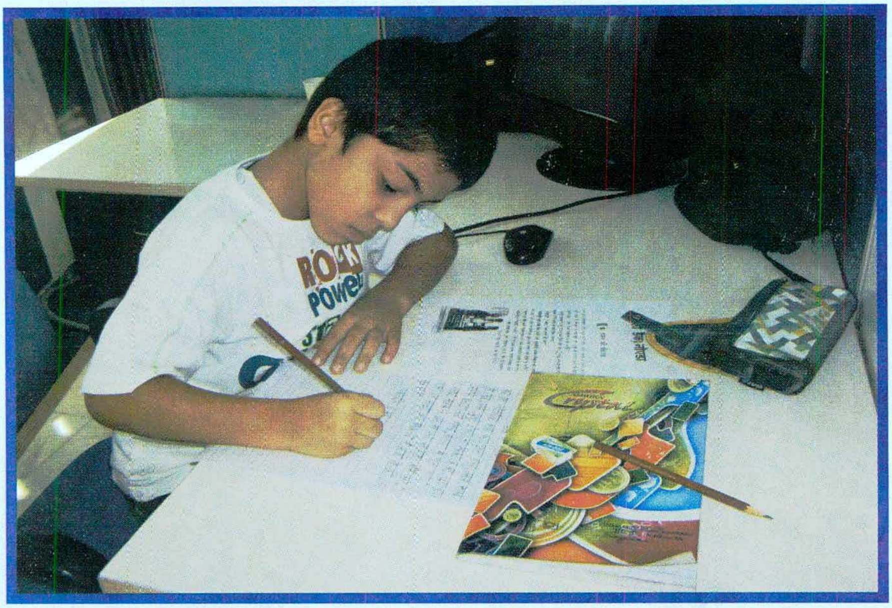

सी–डैक परिवार के बच्चों के लिए
आयोजित सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता में भाग लेता हुआ बच्चा।

हिन्दी सप्ताह 2011 के मुख्य समारोह के अवसर पर भाषण देते हुए।
डॉ. जार्ज वर्की, पूर्व कार्यकारी निदेशक।

गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के तीसरे अंक का विमोचन करते हुए अधिकारीगण।

मुख्य समारोह में उपस्थित अधिकारीगण एवं सी–डैक परिवार के सदस्य।

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए सी–डैक, नोएडा की महिला सदस्य।

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए सी–डैक, नोएडा की महिला सदस्य।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेता सी–डैक परिवार का नन्हा–मुन्ना बालक।

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग से पधारे अतिथि
श्री बी. बी. बहल, निदेशक विजेता को पुरस्कृत करते हुए।

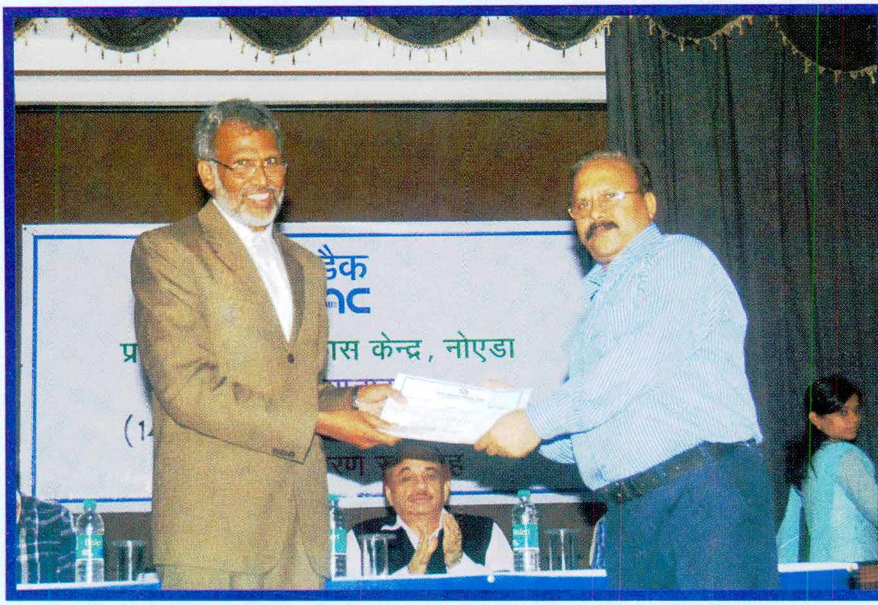

डॉ. जार्ज वर्की, पूर्व कार्यकारी निदेशक विजेता को पुरस्कृत करते हुए।

सी–डैक परिवार के नन्हे–मुन्ने बालक को पुरस्कृत करते हुए
श्री सी. के. चटर्जी, सलाहकार, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय।

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी-56/1, संस्थागत क्षेत्र
सैक्टर- 62, नोएडा- 201307
फोन: 0120-3063311-13, फैक्स- 0120-3063317